ॐ

❀ श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः ❀

श्रीजानकी-चरितामृतान्तर्गतम्

श्रीजानकी-सहस्रनाम

भाषाटीका-सहितम्

श्रीरामानन्दसहायाय सादर समर्पितमिदम्। "लता"
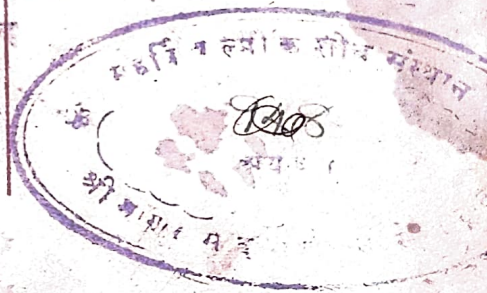
प्रकाशिका:-

अनन्त श्रीविभूषित, विश्वात्मा, महर्षि श्रीकार्तिकेयजी महाराजकी

भगवत् साक्षात्कार प्राप्त आदर्शचरिता

श्रीमती कमला-अम्बाजी

——❀❀❀——

प्रथमवार] १९५७ [मूल्य १)

श्रीजानकी-चरितामृतम्
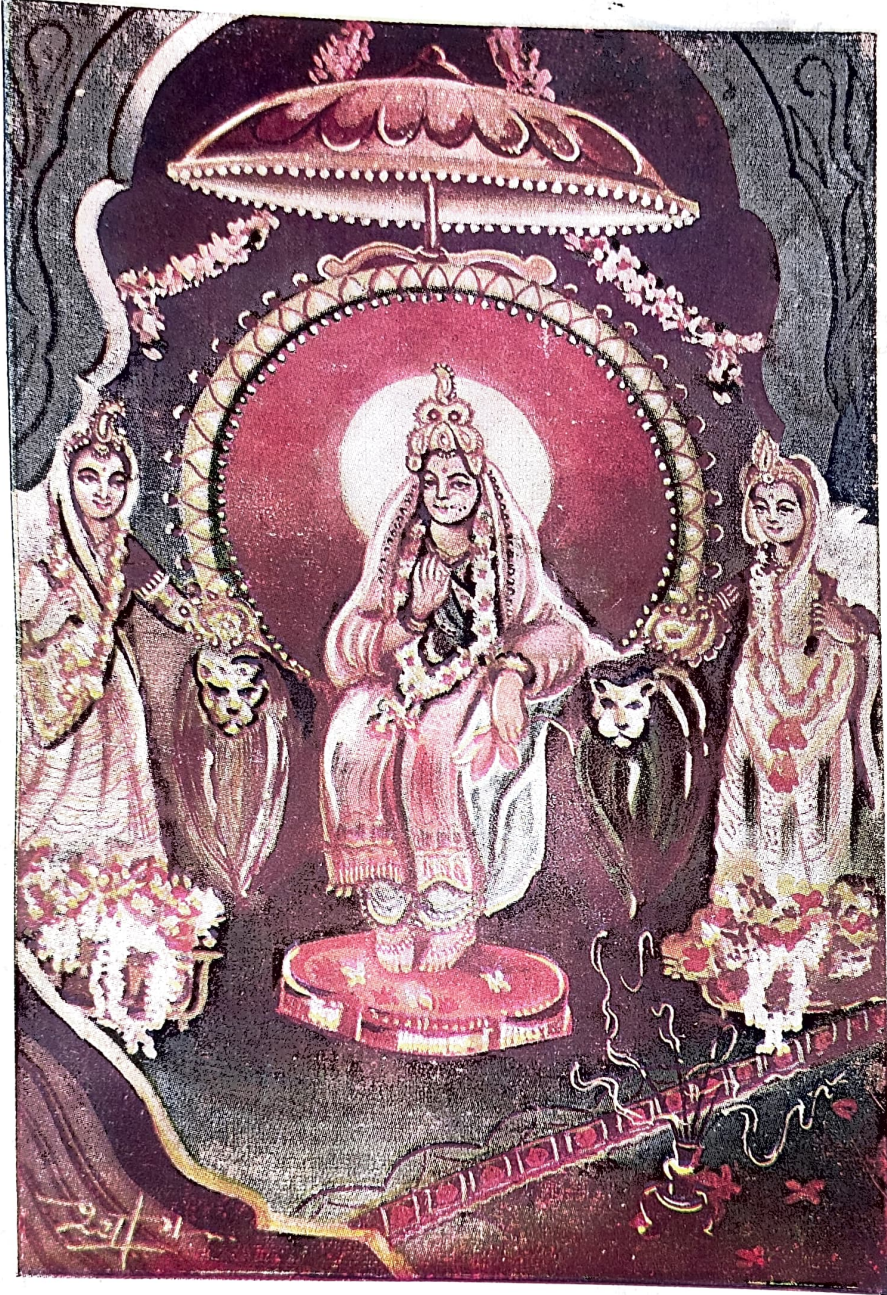
अघटित-घटना-पटीयसी वात्सल्य कारुण्यसिन्धु जगज्जननी

सर्वेश्वरी श्रीमिथिलेशराजदुलारीजी

अथ सप्ताशीतितमोऽध्यायः ॥८७॥

जगत्‌में मुमुक्षुओंके लिये कौन सर्वोपास्य और कौन सर्वोपरि पूज्य तथा ध्यान करने योग्य है ! श्रीमिथिलेशजी-महाराजके इस प्रश्नके उत्तरमें योगश्वर कबि द्वारा वर्णितः——

❀ श्रीजानकी-सहस्र-नाम ❀

श्रीकविरुवाच ।

नीलेन्दीवरलोचनां जनकजां विस्मेरविम्बाधरां
ब्रह्माविष्णुमहेशसेव्यचरणां दीव्यत्सुवर्णप्रभाम् ।
सव्ये श्रीमिथिलेशितुः सुनयनाक्रोडे मुदा राजितां
वन्दे बन्धुगणान्वितामनुचरीवृन्दैः समाराधिताम् ॥१॥

नीले कमलके समान जिनके विशाल नेत्र, एवं पूर्णचन्द्रके समान जिनका आह्लादकारी श्रीमुखारविन्द है, मुस्कान युक्त बिम्बाफलके सदृश जिनके अधर और ओठ हैं, ब्रह्मा, विष्णु, महेशोंको भी जिनकी सेवा करना कर्त्तव्य है, प्रकाशयुक्त सुवर्णके समान जिनकी गौर कान्ति है, जो श्रीमिथिलेशजी-महाराजके बायें भागमें श्रीसुनयनाअम्बाजीकी गोदीमें प्रसन्नता-पूर्वक विराज रही हैं, अनुचरियाँ (बहिने) अपनी-अपनी सेवाके द्वारा जिन्हें प्रसन्न करनेमें तत्पर हैं; उन श्रीलक्ष्मीनिधिजी आदि भाइयोंसे युक्त श्रीमिथिलेशराज-दुलारीजीको मैं प्रणाम करता हूँ ॥१॥

अकल्पाऽकल्मषाऽकामा अकायाऽकारचर्चिता ।
अकारणाऽकोपपूज्या अक्रूरैकाऽक्षणाऽक्षरा ॥२॥

१ अकल्पा ❀ जिनकी तुलना नहीं की जा सकती तथा जो 'अ' सर्वव्यापक प्रभु श्रीरामजीको अपने वशमें करनेको समर्थ हैं।

२ अकल्मषा ❀ जो अविद्या (माया) रूपी मलसे रहित हैं।

३ अकामा ❀ जिन्हें एक भगवान् श्रीरामजीको छोड़कर और कोई इच्छा नहीं है

४ अकाया ❀ जिनका ब्रह्म ही शरीर है अर्थात् जो ब्रह्ममें रहनेवाली उसकी शक्ति स्वरूपा हैं।

५ अकारचर्चिता ❀ भगवान् श्रीरामजीके जो चन्दन आदिसे खौर करती हैं।

६ अकारणा ❀ जो स्वयं कारणस्वरूपा हैं।

७ अकोपपूज्या ❀ जो अपराधी जनों पर भी क्षमा गुणकी विशेषताके कारण त्रिलोकीमें पूजित हैं।

८ अक्रूरैका ❀ जो समस्त प्राणियोंके अनुकूल सौम्य स्वरूप वालियोंमें अकेली हैं!

९ अक्षणा ❀ जो भगवान् श्रीरामजीके आनन्दकी मूर्त्ति हैं।

१० अक्षरा ❀ जो कभी क्षीणताको न प्राप्त होकर सदा एक रस बनी रहती हैं।

अगदाऽगुणाऽग्रगण्या अचलापुत्रिकाऽचला ।
अच्युताऽजाऽजेयबुद्धिरज्ञातगतिसत्तमा ॥ ३ ॥

११ अगदा ❀ जो आश्रित-जीवोंको प्रभु-प्राप्ति कारक भागवत-धर्म (नवधा भक्ति) को प्रदान करती हैं अथवा जो समस्त रोगोंसे अछूती सञ्जीविनी बूटी-स्वरूपा हैं।

१२ अगुणा ❀ जो सत्व, रज, तम इन तीनों गुणोंसे परे हैं।

१३ अग्रगण्या ❀ जो सभी लक्ष्मी, सरस्वती, गिरिजादि शक्तियोंका द्वारा पूजने योग्य है।

१४ अचलापुत्रिका, ❀ जो विविध प्रकारके अवतारोंको ग्रहण करके अनेक सङ्कटोंसे पृथ्वी देवीकी रक्षा करती हैं।

१५ अचला ❀ जो ब्रह्म श्रीरामजीमें पूर्ण स्थिर हैं तथा जो अपनी सुन्दर उक्तियोंके द्वारा पतित जीवोंको कर्मानुसार दण्ड देनेके विपरीत उनपर कृपा करनेको चलायमान (उद्यत) कर देती है।

१६ अच्युता ❀ जो अपने दयालु स्वभावसे कभी नहीं डिगतीं।

१७ अजा ❀ जिनका जन्म कभी होता ही नहीं।

१८ अजेयबुद्धि ❀ जो अपनी बुद्धिसे भगवान् श्रीरामजीको जीत लेनेवाली हैं अथवा जिनकी बुद्धिको कोई जीत नहीं सकता।

१९ अज्ञातगतिसत्तमा ❀ जिनके सर्वोत्तम विचारोंको भगवान् श्रीरामजी ही समझते हैं तथा जो भगवान् श्रीरामजीके विचारोंको समझने वाली शक्तियोंमें सर्वोत्कृष्टा अर्थात् सबसे बढ़कर हैं ३

अणोरणीयस्यतर्क्या अतीन्द्रियचयाऽतुला ।
अदभ्रमहिमाऽदृश्या अद्वितीयक्षमानिधिः ॥४॥

२० अणोरणीयसी ❀ जो आँखोंसे न देखने योग्य अणुसे भी सहस्रों गुणा सूक्ष्म हैं।

२१ अतर्क्या ❀ जिनके गुण, रूप, लीला, स्वभाव, आदि-अनुमान या वाद-विवादके द्वारा समझे नहीं जा सकते।

२२ अतीन्द्रियचया ❀ जा वाणी, मन, बुद्धि चित्त आदि इन्द्रिय समूहसे परे हैं।

२३ अतुला ❀ जो सब प्रकारसे ब्रह्मके समान हैं अर्थात् जिनकी तुलना एक ब्रह्मसे ही की जा सकती, है किसी दूसरेसे नहीं।

२४ अदभ्रमहिमा ❀ जिनकी बहुत बड़ी महिमा है।

२५ अदृश्या ❀ जिनके वास्तविक सर्वव्यापक स्वरूपका दर्शन किसी भी इन्द्रियके द्वारा नहीं किया जा सकता और जिनके देखनेकी वस्तु एक प्रभु श्रीराम ही हैं।

२६ अद्वितीयक्षमानिधिः ❀ जो ब्रह्मकी क्षमाकी भण्डार-स्वरूप हैं ॥ ४ ॥

अद्वितीयदयामूर्त्तिरद्वितीयानहङ्कृतिः ।
अदीनबुद्धिरद्वैता अधृताऽधोक्षजाऽनघा ॥५॥

२७ अद्वितीयदयामूर्त्ति ❀ जो ब्रह्मके दया गुणकी स्वरूपा हैं।

२८ अद्वितीयानहङ्कृतिः ❀ जो सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान् ब्रह्मकी परम अमानिताकी मूर्त्ति हैं।

२९ अदीनबुद्धि ❀ किसी भी विषयको निश्चय करनेमें जिनकी बुद्धि असमर्थ नहीं होती।

३० अद्वैता ❀ जिनमें किसीके भी प्रति भेद भाव नहीं है तथा जिनसे संयुक्त होने से ब्रह्म युगल-सरकार कहा जाता है।

३१ अधृता ❀ जिन्हें भगवान् श्रीरामजी श्रीवत्सरूपसे सदैव अपने वक्षः स्थल पर धारण करते हैं तथा जिन्हें कभी भी किसीने अपने वशमें नहीं कर पाया है।

अधोक्षजा ❀ जो अपने स्वभावसे कभी भी क्षीण नहीं होती अथवा जो इन्द्रियोंको अपने वशमें रखने वाले भक्तोंके ही हृदय में प्रत्यक्ष होती हैं।

३३ अनघा ❀ जो समस्त दुःखों तथा पापों से रहित हैं ॥ ५ ॥

अनन्तविग्रहाऽनन्ता अनन्तैश्वर्यसंयुता ।
अनन्यभावसन्तुष्टा अनर्थौघनिवारिणी ॥६॥

३४ अनन्तविग्रहा ❀ जो असीम तत्त्व ब्रह्मकी साकार मूर्त्ति हैं अथवा जिनके स्वरूपोंका पार नहीं है अर्थात् जो समस्त चर-अचर-प्राणि स्वरूपा हैं।

३५ अनन्ता ❀ जिनके रूप व गुणोंका कोई अन्त (पार) नहीं है।

३६ अनन्तैश्वर्यसंयुक्ता ❀ जिनके ऐश्वर्य अनन्त अर्थात् भगवान् श्रीरामजी है अथवा जो अपार ऐश्वर्य वाली हैं।

३७ अनन्यभावसन्तुष्टा ❀ जिनकी पूर्ण प्रसन्नता अनन्य भावसे होती है अर्थात् जिसकी आसक्ति पञ्च विषयोंके समेत सब ओरसे हटकर एक उन्हींमें दृढ़ हो जाती है, उसी पर जो प्रसन्न होती हैं।

३८ अन्तर्थौघनिवारिणी ❀ जो आश्रित चेतनोंकी दुर्भाग्य जनित सम्पूर्ण आपत्तियों कोदूर करती हैं ६

अनवद्याऽनामरूपा अनिर्देश्यस्वरूपिणी।
अनिर्वाच्यसुखाम्भोधिरनिर्वाच्याङ्घ्रिमार्दवा ॥७॥

३९ अनवद्या ❀ जो समस्त दोषोंसे अछूती हैं।

४० अनामरूपा ❀ वस्तुतः जिनका कोई एक नाम या रूप नहीं है।

४१ अनिर्देश्यस्वरूपिणी ❀ जिनके लक्षण बतलाये नहीं जासकते अर्थात् जो मन वाणीसे परे ज्ञानस्वरूपा हैं।

४२ अनिर्वाच्यसुखाम्भोधिः ❀ जिसको वर्णन करना वाणीकी शक्तिसे परे (बाहर) है, उस ब्रह्मके सुखकी जो समुद्र-स्वरूपा हैं।

४३ अनिर्वाच्याङ्घ्रिमार्दवा ❀ जिनके श्रीचरणकमलोंकी कोमलता वर्णन शक्तिसे बाहर है ॥७॥

अनिर्विण्णाऽनुकूलैका अनुकम्पैकविग्रहा।
अनुत्तमाऽनुत्तमात्मा अनुरागभराञ्चिता ॥८॥

४४ अनिर्विण्णा ❀ जो पूर्ण काम होनेके कारण सदा प्रसन्न रहती हैं।

४५ अनुकूलैका ❀ जो अपनी अनुपम दयालुता वश, अपराधी प्राणियोंको भी भगवान् श्रीराम-जीके अनुकूल (दयापात्र) बना देती हैं तथा अपनी अमोघ प्रार्थनाके द्वारा उन चेतनोंके प्रति प्रभु श्रीरामजीको भी अनुकूल (दयान्वित) बना देती हैं।

४६ अनुकम्पैकपूर्णविग्रहा ❀ जिनका स्वरूप ही दयासे परिपूर्ण है।

४७ अनुत्तमा ❀ जिनसे बढ़कर कोई भी शक्ति नहीं है तथा जो सभी विशिष्ट उमा, रमा, ब्रह्माणी आदि शक्तियोंके द्वारा उपासना करने योग्य हैं।

४८ अनुत्तमात्मा ❀ जिनसे बढ़कर किसीकी बुद्धि नहीं है।

४९ अनुरागभराञ्चिता ❀ जो अनुरागके भार (अतिशयता) से सुशोभित हैं ॥८॥

अपारमहिमाऽपारभववारिधितारिणी।
अपूर्वचरिताऽपूर्वसिद्धान्ताऽपूर्वसौभगा ॥९॥

५० अपारमहिमा ❀ दुष्टप्राणियोंके प्रति दया-भावको लेकर जिनकी महिमा भगवान् श्रीरामजीसे भी बढ़कर है।

५१ अपारभववारिधितारिणी ❀ जो अपने आश्रितोंको अपार संसार-सागरसे पार उतार देती हैं अर्थात् दिव्य धाम-वासी बना लेनेकी कृपा करती हैं।

५२ अपूर्वचरिता ❀ जिनके सभी चरित अनोखे हैं।

५३ अपूर्वसिद्धान्ता ❀ जिनका सिद्धान्त (हार्दिकनिश्चय) ऐसा है जैसा कि आज तक किसीका हुआ ही नहीं, यथा "पापानां वा शुभानां वा बधार्हाणां प्लवङ्गम। कार्यं कारुण्यमार्येण न कश्चिन्नापराध्यति"। अर्थः—चाहे पुण्यात्मा हो चाहे पापी या बध (प्राणदण्ड) के योग्य ही क्यों न हो, पर श्रेष्ठ पुरुषको उसपर भी कृपा ही करनी चाहिये अर्थात् उसका हित ही सोचना चाहिये अहितकर दण्ड नहीं, क्योंकि त्रिलोकीमें कोई ऐसा न तो है और न होगा, जो अपराधोंसे अछूता हो।

५४ अपूर्वसौभगा ❀ जिनके समान आज तक किसीका सौभाग्य ही नहीं हुआ ॥९॥

अप्रकृष्टाऽप्रतिद्वन्द्वविक्रमाऽप्रतिमद्युतिः ।
अप्रतिमाऽप्रमत्तात्मा अप्रमेयसुखाकृतिः ॥१०॥

५५ अप्रकृष्टा ❀ जो अपने निरुपम दयापूर्ण सिद्धान्तमें भगवान् श्रीरामजीसे भी बढ़कर हैं, क्योंकि अपराधों पर ध्यान न देकर दया ही करना आपका सिद्धान्त है और भगवान् श्रीरामजीका सिद्धान्त है, कि जीव एकबार भी यदि निष्कपट भावसे कह दे कि "प्रभो! मैं आपका हूँ मेरी रक्षा कीजिये" तो मैं उसे समस्त प्राणियोंसे अभय कर दूं, विशेषता प्रत्यक्ष ही है।

५६ अप्रतिद्वन्द्वविक्रमा ❀ जिनके पराक्रममें कोई बाधक नहीं बन सकता तथा जो पराक्रममें भगवान् श्रीरामजीके ही समान हैं।

५७ अप्रतिमद्युतिः ❀ जिनके समान और अधिक किसीका तेज है ही नहीं, अर्थात् जो ब्रह्मके तेजवाली हैं।

५८ अप्रतिमा ❀ जो ब्रह्मस्वरूपा हैं अथवा जिनकी समता करने वाला कोई नहीं है।

५९ अप्रमेयसुखाकृतिः ❀ जिसे वाणी वर्णन, मन मनन और बुद्धि निश्चय नहीं कर सकती, उस ब्रह्मके सुखकी जो स्वरूपा हैं अर्थात् जो असीम सुख स्वरूपा हैं।।१०॥

अप्राकृतगुणैश्वर्यविश्वमोहनविग्रहा ।
अभिवाद्याऽमलाऽमाना अमिताऽमृतरूपिणी ॥११॥

६० अप्राकृतगुणैश्वर्यविश्वमोहनविग्रहा ❀ जिनका स्वरूप दिव्य गुण और दिव्य ऐश्वर्यके द्वारा समस्त विश्वको मुग्ध करने वाला है ।

६१ अभिवाद्या ❀ सभी भावोंके द्वारा सभी चर-अचर प्राकृत-अप्राकृत प्राणियोंको जिन्हें प्रणाम करना ही उचित है ।

६२ अमला ❀ जो अविद्या (माया) रूपी मलसे रहित शुद्ध ब्रह्म स्वरूपा हैं ।

६३ अमाना ❀ जो ब्रह्मके समान नाप, तोल (आदि, मध्य, अन्त) से रहित, स्वजातीय, बिजातीय भेद तथा गुण, रूप शक्तिके अभिमानसे अछूती हैं ।

६४ अमिता ❀ जो सब प्रकारसे असीम हैं ।

६५ अमृतरूपिणी ❀ जिनका स्वरूप कभी भी नहीं नष्ट होता तथा जो अमृत स्वरूपा हैं ॥११॥

अमृताऽमृतदृष्टिश्च अमृताशाऽमृतोद्भवा ।
अयोनिसम्भवाऽरौद्रा अलोलाऽवनिपुत्रिका ॥१२॥

६६ अमृता ❀ जो जन्म मरणसे रहित हैं ।

६७ अमृतदृष्टि ❀ जिनकी चितवन अमृतके समान समस्त दुःखोंको हरण करके आश्रितोंको अमर बना देने वाली हैं तथा जो सभी रूपोंमें एक भगवान् श्रीरामजीका ही दर्शन करने वाली हैं ।

६८ अमृताशा ❀ जो स्वयं एक भगवान् श्रीरामजीका अनुभव करती हुई अपने आश्रित चेतनों को भी उनका अनुभव करानेकी कृपा करती हैं ।

६९ अमृतोद्भवा ❀ जो अमृतकी कारण हैं ।

७० अयोनिसम्भवा ❀ जो बिना कारण केवल अपनी भक्त-भाव पूरिणी इच्छासे प्रकट होती हैं ।

७१ अरौद्रा ❀ जिनका स्वरूप भयानक न होकर समुद्रके समान अपरिमित माधुर्य-सम्पन्न है ।

७२ अलोला ❀ जो कभी अपने सिद्धान्तसे चलायमान नहीं होती ।

७३ अवनिपुत्रिका ❀ जो अपने आश्रितजनोंके रक्षण आदि दिव्य गुणोंकी भूमिका भली भाँति विस्तार करती हैं, अथवा जो पृथ्वीसे प्रकट हुई हैं ॥१२॥

अवराऽवर्ण्यमाधुर्य्या अवर्ण्यकरुणावधिः ।
अविचिन्त्याऽविशिष्टात्मा अव्यक्ताऽव्ययशेमुषी ॥१३॥

७४ अवरा ❀ जिनके दूलह-सरकार पूर्णब्रह्म भगवान् श्रीरामजी हैं और जिनसे बढ़कर कोई है ही नहीं ॥७४॥

७५ अवर्ण्यमाधुर्य्या ❀ जिनकी हृदयमोहिनी सुन्दरता, पूर्ण ब्रह्म श्रीरामजीके द्वाराभी प्रशंसा करने योग्य है ।

७६ अवर्ण्यकरुणावधिः ❀ जिनकी दयाकी सीमा वर्णन शक्तिसे परे है ।

७७ अविचिन्त्या ❀ भगवान् श्रीरामजीके जो विशेष स्मरण करने योग्य हैं अथवा अवि जो(सूर्य) भगवान्के उपासना करने योग्य हैं ।

७८ अविशिष्टात्मा ❀ जिनको बुद्धि भगवान् श्रीरामजीसे बढ़कर है अथवा जिनकी बुद्धि एक प्रभु श्रीराघवेन्द्रसरकारकी ही प्रधानताको ग्रहण करती है ।

७९ अव्यक्ता ❀ जो नास्तिक तथा अभक्तोंके लिये सदा परोक्ष (अप्रकट) हैं ।

८० अव्ययशेमुषी ❀ जिनकी बुद्धि कभी क्षीणताको नहीं प्राप्त होती, सदा एक रस रहती है १३

अव्याजकरुणामूर्त्तिरशोकाऽसङ्ख्यकाऽसमा ।
असम्मिताऽऽप्तसङ्कल्पा आत्मज्ञानविभाकरी ॥१४॥

८१ अव्याजकरुणामूर्त्तिः ❀ जो स्वार्थ रहित कृपाकी स्वरूपा हैं ।

८२ अशोका ❀ जो अविद्या-जनित समस्त शोकोंसे रहित आनन्द-घन-स्वरूपा हैं ।

८३ असङ्ख्यका ❀ जिनमें गिनती न कर सकने योग्य दया, सौशील्यादि समस्त दिव्य गुण भरे हैं ।

८४ असमा ❀ जो ब्रह्मके समान सम्पूर्ण महिमा वाली हैं तथा जिनकी समता कोई नहीं कर सकता ।

८५ असम्मिता ❀ जिनके पास सेवकोंको देनेके लिये सेवाके फल गिनतीके नहीं हैं अर्थात् अनन्त हैं ।

८६ आप्तसङ्कल्पा ❀ जिनका कोई भी सङ्कल्प अपूर्ण नहीं है अर्थात् जिनके सङ्कल्पमात्रसे ही सब कुछ हो जाता है ।

८७ आत्मज्ञानविभाकारी ❀ जो परमात्मा भगवान् श्रीरामजीके स्वरूपकी पहिचान कराने वाले दिव्यज्ञानको हृदयमें प्रकाशित करने वाली हैं ॥१४॥

आत्मोद्भवाऽऽत्ममर्मज्ञा आत्मलाभप्रदायिनी ।
आत्मवत्यादिकर्त्र्यादिराधारपरमालया ॥१५॥

८८ आत्मोद्भवा ❀ जो ब्रह्मसे उत्पन्न होने वाली उनकी इच्छाशक्ति हैं ।

८९ आत्ममर्मज्ञा ❀ जो भगवान् श्रीरामजीके सभी प्रकार रहस्योंको भली भांति जानती हैं ।

९० आत्मलाभ-प्रदायिनी ❀ जो अपने आश्रितोंको भगवत-प्राप्तिका लाभ प्रदान करती हैं ।

९१ आत्मवती ❀जो अपने मनको अपने इच्छानुसार चलानेमें समर्थ हैं तथा जो सर्वश्रेष्ठ बुद्धि-स्वरूपा हैं ।

९२ आदिकर्त्री ❀ जो महत्तत्व और तन्मात्रादिकोंकी उत्पत्ति करने वाली हैं ।

९३ आदिः ❀ जो आदि कालकी तथा सभीकी आदि कारण स्वरूपा हैं ।

९४ आधारपरमालया ❀ जो विश्वके सभी प्रकारके समस्त आधारोंके रहनेकी सबसे उत्तमगृह स्वरूपा हैं, अर्थात् जिनमें सभी प्रकारके सम्पूर्ण आधार निवास करते हैं ॥१५॥

आध्येयाङ्घ्रिसरोजाङ्का आनन्दामृतवर्षिणी ।
आम्नायवेद्यचरणा आश्रितत्राणतत्परा ॥१६॥

९५ आध्येयाङ्घ्रिसरोजाङ्का ❀ जिनके श्रीचरणकमलोंके चिन्ह सभी सकाम, निष्काम प्राणियोंके ध्यान करने योग्य हैं ।

९६ आनन्दामृतवर्षिणी ❀ जो भक्तोंके लिये आनन्द रूपी अमृतकी वर्षा करने वाली हैं ।

९७ आम्नायवेद्यचरणा ❀ वेदोंके द्वारा जिनकी महिमा जानने योग्य है ।

९८ आश्रितत्राणतत्परा ❀ जो आश्रितोंकी रक्षामें लगी हुई हैं ॥१६॥

आसक्त्यपहृतासक्तिरास्यस्पर्द्धिविधुव्रजा ।
आह्लादसुषमासिन्धुरिनवंश्यपरप्रिया ॥१७॥

९९ आसक्त्यपहृतासक्तिः ❀ जिनमें प्राप्त हुई आसक्ति अन्य शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध तथा स्त्री, पुत्र, सम्पत्ति आदि सभी प्रकारकी आसक्तियोंको हरण कर लेती है ।

१०० आस्यस्पर्द्धिविधुव्रजा ❀ जो अपने श्रीमुखारविन्दकी कान्ति तथा आह्लादक गुणसे चन्द्र समूहोंको लज्जित करती हैं ।

१०१ आह्लादसुषमासिन्धुः ❀ जिनमें आह्लाद तथा निरतिशय सौन्दर्य समुद्रके समान अथाह है ।

१०२ इनवंश्यपरप्रिया ❀ जो सूर्य वंशमें सर्वोत्कृष्ट श्रीचक्रवर्तीकुमार, श्रीरघुनन्दन-प्यारेकी प्राणवल्लभा हैं ॥१७॥

इन्दुपूर्णोल्लसद्वक्त्रा इभराजसुतागतिः ।
इयत्त्वरहितेर्वाल्वी प्रपन्नसकलापदाम् ॥१८॥

१०३ इन्दुपूर्णोल्लसद्वक्त्रा ❀ जिनका श्रीमुखारविन्द पूर्णचन्द्रमाके समान प्रकाश युक्त तथा आह्लाद-प्रदायक है।

१०४ इभराजसुतागतिः ❀ ऐरावत हाथीकी वालिकाके समान जिनकी अत्यन्त मनोहर चाल है।

१०५ इयत्त्वरहिता ❀ जो सभी प्रकारसे असीम हैं।

१०६ ईर्वाल्वी प्रपन्नसकलापदाम् ❀ जो शरणागत चेतनोंकी (सभी प्रकारकी) आपत्तियोंको नाश करती हैं ॥१८॥

इष्टा समस्तदेवानामीप्सितार्थप्रदायिनी।
ईश्वरी सर्वलोकानामुच्छिन्नाश्रितसंशया ॥१९॥

१०७ इष्टा समस्तदेवानां ❀ जो ब्रह्मादि सभी देवताओंकी इष्ट हैं।

१०८ ईप्सितार्थप्रदायिनी ❀ जो आश्रितोंके सभी मनोरथोंको पूर्ण करने वाली हैं।

१०९ ईश्वरी सर्वलोकानां ❀ जो चर-अचर प्राणियोंके सहित ब्रह्मा, विष्णु, शिवादि सभी विश्वके शासकों पर शासन करने वाली हैं।

११० उच्छिन्नाश्रितसंशया ❀ जो आश्रितोंकी सम्पूर्णशङ्काओंको जड़से नष्ट कर देती हैं ॥१९॥

उज्ज्वलैकसमाराध्या उत्फुल्लेन्दीवरेक्षणा।
उत्तरोत्तानहस्ताब्जा उत्तमोत्सङ्गभूषणा ॥२०॥

१११ उज्ज्वलैकसमाराध्या ❀ जिन्हें केवल एक अनुरागसे ही प्रसन्न किया जा सकता है।

११२ उत्फुल्लेन्दीवरेक्षणा ❀ पूर्णखिले नीले कमलके समान मनोहर जिनके विशाल नेत्र हैं।

११३ उत्तरा ❀ जो सभी शक्तियोंमें उत्तम हैं तथा अपने कर्त्तव्य-सागरको जो भली-भाँति पार कर रही हैं।

११४ उत्तानहस्ताब्जा ❀जिनका हस्तकमल उदारता तथा आश्रितवत्सलताके कारण सदा ऊँचा उठा रहता है।

११५ उत्तमा ❀ जो सबसे उत्तम हैं।

११६ उत्सङ्गभूषणा ❀ जो श्रीसुनयना अम्बाजीकी गोदको भूषणके समान सुशोभित करने वाली हैं ॥२०॥

उदारकीर्त्तनोदारचरितोदारवन्दना।
उदारजपपाठेज्या उदारध्यानसंस्तवा ॥२१॥

११७ उदारकीर्त्तना ❀ जिनका कीर्त्तन, उदार (सभी सिद्धियोंको देने वाला) है।

११८ उदारचरिता ❀ जिनके चरित उदार अर्थात् हृदयको आदर्श प्रदान करनेमें सर्वोत्तम हैं।

११९ उदारवन्दना ❀ जिनका प्रणाम उदार (दिव्य-धामको प्रदान करनेवाला) है।

१२० उदारजपपाठेज्या ❀ जिनका जप, पाठ, यज्ञ सब उदार (अभीष्ट प्रदायक) है।

१२१ उदारध्यानसंस्तवा ❀ जिनका ध्यान तथा स्तोत्र उदार अर्थात् चारो पदार्थोंको प्रदान करने वाला है ॥२१॥

उदारवल्लभोदारवीक्षणस्मितभाषिता ।
उदारश्रीनामरूपलीलाधामगुणव्रजा ॥२२॥

१२२ उदावल्लभा ❀ जिनके प्राणप्यारे उदार अर्थात् अत्यन्त मनोहर हैं।

१२३ उदारवीक्षणस्मितभाषिता ❀ जिनकी चितवन, मन्द मुस्कान तथा कोकिल वाणी उदार (मनो मुग्धकारी) है।

१२४ उदारश्रीनामरूपलीलाधामगुणव्रजा ❀ जिनकी कान्ति नाम, रूप, लीला, धाम एवम् अन्य गुण समूह, सब उदार अर्थात् परमप्रिय, अनन्त फल-दायक तथा परम हितकारी हैं ॥२२॥

उदारालिगणोदारोपासका ऋतरूपिणी ।
ऋभुवन्द्याङ्घ्रिॠकारा ऌपुत्री ॡस्वरूपिणी ॥२३॥

१२५ उदारालिगणा ❀ जिनकी सखियाँ भी अत्यन्त उदार हैं।

१२६ उदारोपासका ❀ जिनके उपासक भी बड़े उदार हैं।

१२७ ऋतरूपिणी ❀ जो ज्ञानस्वरूपा हैं।

१२८ ऋभुवन्द्याङ्घ्रिः ❀ जिनके श्रीचरण-कमल ब्रह्मादि देवताओंसे भी प्रणाम करने योग्य हैं।

१२९ ॠकारा ❀ जो दया तथा स्मृति-स्वरूपा हैं।

१३० ऌपुत्री ❀ जो सरस्वतीजीकी कारण स्वरूपा हैं तथा जिनका प्राकट्य पृथ्वीसे हुआ है।

१३१ ॡस्वरूपिणी ❀ जो देवमाता अदिति स्वरूपा हैं ॥२३॥

एकैकशरणं पुंसामैक्यभावप्रसादिता ।
ओकःप्रधानिकौजोऽब्धिरौदार्यौत्कर्ष्यविश्रुता ॥२४॥

१३२ एका ❀ जो अपने समान आप ही हैं।

१३३ एकशरणं पुंसां ❀ जिनसे बढ़कर कोई भी प्राणियोंका न हित करने वाला है न रक्षा

करनेमें ही समर्थ हैं, तथा जो समस्त प्राणियोंकी पूर्ण शान्ति प्रदायक मुख्य निवासस्थ स्वरूपा हैं, अन्य नहीं ।

१३४ ऐक्यभावप्रसादिता ❀ जो समस्त प्राणियोंमें भगवद्-भावना करनेसे प्रसन्न होती हैं अथवा जिनकी प्रसन्नता केवल अनन्य भावसे होती है ।

१३५ ओकःप्रधानिका ❀ जो समस्त प्राणियोंकी प्रमुख निवासस्थान स्वरूपा हैं अर्थात् पूर्ण ब्रह्ममयी हैं, अत एव जिस प्रकार प्राणी जब तक अपने मुख्य घरमें नीहीं पहुँचता, तब तक वह पूर्ण निश्चिन्त नहीं हो पाता, उसी प्रकार बिना जिनको प्राप्त हुये जीव कभी भी पूर्ण शान्तिको नहीं प्राप्त कर सकता ।

१३६ ओजोऽब्धिः ❀ जिनकी सामर्थ्य अन्य सभी शक्तियोंके सामने समुद्रके समान अथाह है ।

१३७ औदार्यौत्कर्ष्यविश्रुता ❀ जो अपनी सर्वोत्तम उदारतासे विश्वमें विख्यात हैं, इसमें इन्द्रके पुत्र जयन्तकी कथा ज्वलन्त प्रमाण है । जहाँ भगवान् श्रीरामजी उसे कर्मका उचित फल देने के लिये वाणका प्रयोग कर चुके और पिता इन्द्र तथा ब्रह्मादि देव वृन्दने भी जिसका बहिष्कार कर दिया, वहाँ प्यारेके सामने पैर करके पड़े हुये तुरत बध कर देने योग्य उसी जयन्तके चरणोंको, अपने करकमलोंके द्वारा सामनेसे हटा कर उसका शिर चरणोंमें रख कर, विनय पूर्वक प्रार्थना करती हैं, हेप्यारे ! इसकी रक्षा करो रक्षा करो । भला इससे बढ़कर और दयालुताकी पराकाष्ठा ही क्या हो सकती है ? (पद्मपुराण) ! ॥२४॥

कमला कमलाराध्या करणं कलभाषिणी ।
कलाधारा कलाभिज्ञा कलामूर्त्तिः कलावधिः ॥२५॥

१३८ कमला ❀ जो श्रीलक्ष्मी स्वरूपा हैं अर्थात् जो समस्त सुख और ऐश्वर्यसे परिपूर्ण हैं ।

१३९ कमलाराध्या ❀ जो ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इन्द्रादिके भी आराधना करने योग्य हैं, अथवा श्रीकमलाजी जिन्हें प्रसन्न करनेमें समर्थ हैं क्योंकि वे सखी व नदी आदि अनेक रूपोंसे सेवामें विराज मान हैं ।

१४० करणं ❀ जो जगत्की कारण स्वरूपा हैं ।

१४१ कलभाषिणी ❀ जो स्पष्ट, मधुर, और श्रवणसुखद वाणी बोलने वाली हैं ।

१४२ कलाधारा ❀ जो समस्त कला (विद्या) ओंकी आधार-स्वरूपा हैं अर्थात् जिनसे सभी विद्याओं का प्राकट्य हुआ है ।

१४३ कलाभिज्ञा ❀ जो समस्त कलाओंकी ज्ञान-स्वरूपा हैं अर्थात् उन्हें भली भाँति जानती हैं ।

१४४ कलामूर्त्तिः ❀ जो सम्पूर्ण कलाओंकी स्वरूप ही हैं।

१४५ कलावधिः ❀ जो सभी विद्याओंकी सीमा हैं ॥२५॥

कल्पवृक्षाश्रया कल्प्या कल्मषौघनिवारिणी।
कल्याणदात्री कल्याणप्रकृतिः कामचारिणी ॥२६॥

१४६ कल्पवृक्षाश्रया ❀ जो कल्प वृक्षकी कारण स्वरूपा हैं, अर्थात् कल्पवृक्षमें जो सभी सङ्कल्पों को पूर्ण करनेकी शक्ति प्रदान करती हैं।

१४७ कल्प्या ❀ जो सम्भवको असम्भव और असम्भवको सम्भव करनेमें पूर्ण समर्थ हैं।

१४८ कल्मषौघनिवारिणी ❀ जो पाप समूहोंको पूर्ण रूपसे भगा देने वाली हैं।

१४९ कल्याणदात्री ❀ जो प्राणीमात्रको मङ्गल प्रदान करनेवाली हैं!

१५० कल्याणप्रकृतिः ❀ जो प्राणियोंके दोषों (अपराधोंका) विचार छोड़कर उनका हित ही सोचती रहती हैं।

१५१ कामचारिणी ❀ जो ब्रह्मा, विष्णु और महेशको सृष्टिकी उत्पत्ति, पालन तथा संहारके कर्त्तव्योंमें नियुक्त करने वाली हैं ॥२६॥

कामदा काम्यसंसक्तिः कारणाद्व्यकारणम्।
कारुण्यार्द्रविशालाक्षी कालचक्रप्रवर्तिका ॥२७॥

१५२ कामदा ❀ जो आश्रितोंके सभी अभीष्ट मनोरथोंको पूर्ण करने वाली हैं।

१५३ काम्यसंसक्तिः ❀जिनके प्रति पूर्ण आसक्ति चाहना, प्राणीमात्रका कर्त्तव्य है।

१५४ कारणाद्व्यकारणम् ❀ जो समस्त कारणोंकी उपमा रहित कारण स्वरूपा हैं अर्थात् जिन सर्वोत्कृष्ट कारण स्वरूपाजीसे जगत्के सभी कारणों (उत्पादकों) की उत्पत्ति होती है।

१५५ कारुण्यार्द्रविशालाक्षी ❀ जिनके कमलके समान मनोहर विशाल नेत्र स्नेहसे भरे हैं।

१५६ कालचक्रप्रवर्तिका ❀ जो सत्य, त्रेता द्वापर, कलि, इन चारो युगोंको चक्रके समान चलाती रहती हैं अर्थात् जिनकी इच्छासे ये चारो युग नाचते हुये पहियामें जड़े हुयेके समान क्रमशः आते जाते रहते हैं। ॥२७॥

कीनाशभयमूलघ्नी कुञ्जकेलिसुखप्रदा।
कुञ्जराधीशगतिका कृतज्ञार्च्या कृतागमा ॥२८॥

१५७ कीनाशभयमूलघ्नी ❀ जो यमराजके द्वारा प्राप्त होने वाले समस्त भयोंके कारण स्वरूप भक्तोंके किये हुये पापोंको नाश कर देती हैं।

१५८ कुञ्जकेलिसुखप्रदा ❀ जो अपने अनन्य-भक्तोंको कुञ्जोंकी रहस्यमयी क्रीडाओंका सुख प्रदान करती हैं ।

१५९ कुञ्जराधीशगतिका ❀ जो ऐरावत हाथीके समान मस्त चाल वाली हैं अर्थात् जैसे गजराज जब चलता है तब वह कुत्ता आदि किसी भी दुष्ट प्राणीकी परवाह नहीं करता, उसी प्रकार जो किसीके आक्षेपोंकी परवाह न करके अपने कर्त्तव्य मार्गमें सदैव अग्रसर रहतीं हैं ।

१६० कृतज्ञार्च्या ❀ जो समस्त प्राणियोंके किये हुये शुभ कर्मोंके जानने वाले इन्द्रियों पर विराजमान सूर्य, चन्द्र, ब्रह्मा, शिव, बृहस्पति, इन्द्र, विष्णुभगवान् आदि देवताओंके द्वारा भी पूजने योग्य हैं, क्योंकि ये देववृन्द अपनी २ केवल इन्द्रियोंके कर्मोंको पृथक्-पृथक् जानने वाले हैं और वे सभी इन्द्रियोंके द्वारा किये हुये कर्मोंको अकेली ही जानती हैं। अथवा जो अपने निमित्त की हुई सेवाका उपकार मानने वालोंमें सर्वोत्कृष्ट हैं ।

१६१ कृतागमा ❀ जो सभी वेद और शास्त्रोंकी रचने वाली हैं ॥२८॥

कृपापीयूषजलधिः कोमलार्च्यपदाम्बुजा ।
कौशल्याप्रतिमाम्भोधिः कौशल्यासुतवल्लभा ॥२९॥

१६२ कृपापीयूषजलधिः ❀ जिनकी कृपा अमृतके समान असम्भवको सम्भव करने वाली समुद्रके सदृश अथाह है ।

१६३ कोमलार्च्यपदाम्बुजा ❀ जिनके दोनों श्रीचरण, कमलके समान कोमल, सुगन्धमय, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, इन्द्रके द्वारा पूजने योग्य हैं ।

१६४ कौशल्याप्रतिमाम्भोधिः जो चतुराईको उपमा रहित सागर स्वरूपा हैं अर्थात् समुद्रमें रत्नों के समान जिनमें सब प्रकारकी चतुराई भरी है ।

१६५ कौशल्यासुतवल्लभा ❀ जो कौशल्यानन्दन श्रीराम भद्रजूकी प्राण प्यारी हैं ॥२९॥

खरारिहृदयातुल्यपरमोत्सवरूपिणी ।
खलान्यमतिसन्दात्री खवासीशादिवन्दिता ॥३०॥

१६६ खरारिहृदयातुल्यपरमोत्सवरूपिणी ❀ जो भगवान् श्रीरामजीके हृदयको अनुपम महान उत्सवके समान सुख देनेवाली हैं ।

१६७ खलान्यमतिसन्दात्री ❀ जो अपने आश्रितोंको वास्तविक हित करने वाली सज्जनताकी बुद्धि प्रदान करती हैं ।

१६८ खवासीशादिवन्दिता ❀ जिन्हें देवराज इन्द्र आदिक प्रणाम करते हैं ॥३०॥

खेलमात्रजगत्सृष्टिर्गणनाथार्चिता गतिः ।
गतैश्वर्यस्मयश्रेष्ठा गभीरा गम्यभावना ॥३१॥

१६९ खेलमात्रजगत्सृष्टिः ❀ समस्त चर-अचर मय अनन्त ब्रह्माण्डोंके प्राणियोंकी सृष्टि करना जिनका एक खेल मात्र है ।

१७० गणनाथार्चिता ❀ जिनकी पूजा श्रीगणेशजी करते हैं ।

१७१ गतिः ❀ जो सभी प्राणियोंकी प्राप्य स्थान स्वरूपा, सभीकी रक्षा करनेवाली, और सभीके कल्याणका उपाय सोचने वाली हैं ।

१७२ गतैश्वर्यस्मयश्रेष्ठा ❀ अपनी प्रभुताके अभिमानरहितोंमें जो सबसे बढ़कर हैं ।

१७३ गभीरा ❀ जिनका स्वभाव और हृदय अत्यन्त गम्भीर है ।

१७४ गम्यभावना ❀ जिनके श्रीचरण कमलोंकी भक्ति प्राप्त करना मनुष्य मात्रके जीवनका चरम लक्ष्य है ॥३१॥

गहनाग्र्या गीर्गीर्वाणहितसाधनतत्परा ।
गुप्ता गुहेशया गुह्या गेयोदारयशस्ततिः ॥३२॥

१७५ गहनाग्र्या ❀ अत्यन्त विलक्षण स्वरूप, सामर्थ्य और लीलाओंके कारण जिन्हे पहिचानना सबसे अधिक असम्भव है ।

१७६ गीः ❀ जो श्रीसरस्वती स्वरूपा हैं ।

१७७ गीर्वाणहितसाधनतत्परा ❀ जो देवताओंका हित साधन करनेमें सदैव तत्पर रहती हैं ।

१७८ गुप्ता ❀ जो स्वयं अपनी शक्तिसे सुरक्षति हैं अथवा जो भक्तोंके हृदयमें छिपी रहती हैं ।

१७९ गुहेशया ❀ जो समस्त प्राणियोंकी हृदय रूपी गुफामें परमात्मरूपसे सदैव निवास करती हैं।

१८० गुह्या ❀ उपासक भक्तोंको जिन्हें अपने हृदय-मन्दिरमें सदा छिपाकर रखना चाहिये ।

१८१ गेयोदारयशस्ततिः ❀ जिनका उदार यश समूह सदा ही गान करने योग्य है ॥३२॥

गोपनीयपदासक्तिर्गोप्त्री गोविदनुत्तमा ।
ग्रहणीयशुभादर्शा ग्लौपुञ्जाभनखच्छबिः ॥३३॥

१८२ गोपनीयपदासक्तिः ❀ उपासकोंको, जिनके श्रीचरण-कमलोंकी प्राप्त हुई आसक्तिको काम, क्रोध,लोभ,मोह,राग-द्वेष, मान-प्रतिष्ठा आदि लुटेरोंसे छिपाकर सुरक्षित सदा रखना चाहिये ।

१८३ गोप्त्री ❀ जो भक्तोंको सभी ओर सब प्रकारकी आपत्तियोंसे सुरक्षित रखती हैं ।

१८४ गोविदनुत्तमा ❀ जो अन्तर्यामिनी होनेके कारण समस्त इन्द्रियोंकी सभी क्रियाओंका ज्ञान सबसे अधिक रखती हैं।

१८५ ग्रहणीयशुभादर्शा ❀ जिनका हितकर मङ्गलमय आदर्श सभी मनुष्योंको अपने जीवनकी सफलताके लिये ग्रहण करने योग्य है।

१८६ ग्लौपुञ्जाभनखच्छबिः ❀ चन्द्र समूहोंके समान प्रकाशमय जिनके श्रीचरण-कमलोंके नखोंकी सुन्दरता है ॥३३॥

घनश्यामात्मनिलया घर्मद्युतिकुलस्नुषा ।
घृणालुका ङस्वरूपा चतुरात्मा चतुर्गतिः ॥३४॥

१८७ घनश्यामाङ्कनिलया ❀ जो सजल मेघोंके समान श्याम वर्ण श्रीरघुनन्दन प्यारेजूके हृदयमें विराजने वाली हैं।

१८८ घर्मद्युतिकुलस्नुषा ❀ जो सूर्य वंशकी पतोहू हैं।

१८९ घृणालुका ❀ जो दयाकी मूर्त्ति हैं।

१९० ङस्वरूपा ❀ जो ङ कार स्वरूपा हैं।

१९१ चतुरात्मा ❀ जो श्रीसीताजी श्रीऊर्मिलाजी श्रीमाण्डवीजी श्रीश्रुतिकीर्त्तिजी इन चार स्वरूप वाली हैं अथवा जो मन, बुद्धि, अहङ्कार और चित्त इन चार अन्तः कारण वाली हैं।

१९२ चतुर्गतिः ❀ जो सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य, सायुज्य रूप चार परम गतिस्वरूपा हैं ३४

चतुर्भावा चतुर्व्यूहा चतुर्वर्गप्रदायिनी ।
चतुर्वेदविदां श्रेष्ठा चपलासत्कृतद्युतिः ॥३५॥

१९३ चतुर्भावा ❀ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, ये चारो ही पुरुषार्थ जिनसे उत्पन्न होते हैं।

१९४ चतुर्व्यूहा ❀ श्रीलक्ष्मणजी, श्रभरतजी, श्रीशत्रुघ्नजी, इन तीनों भाइयोंके सहित चार शरीर वाले भगवान श्रीरामजीकी जो प्राण वल्लभा हैं।

१९५ चतुर्वर्गप्रदायिनी ❀ जो अपने आश्रितोंको धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष-स्वरूप अपना दिव्य धाम प्रदान करने वाला हैं।

१९६ चतुर्वेदविदां श्रेष्ठा ❀ जो चारों वेदोंका मर्म समझनेवालोंमें सबसे उत्कृष्ट (बढ़कर) हैं।

१९७ चपलासत्कृतद्युतिः ❀ जिनके श्रीअङ्गकी कान्ति विजुलीके द्वारा सत्कारको प्राप्त है ॥३५॥

चन्द्रकलासमाराध्या चन्द्रविम्बोपमानना ।
चारुशीलादिभिः सेव्या चारुसंपावनस्मिता ॥३६॥

१९८ चन्द्रकलासमाराध्या ❀ जिन्हे श्रीचन्द्रकलाजी पूर्ण रूपसे प्रसन्न कर सकती हैं अथवा श्रीचन्द्रकलाजीके द्वारा जिनकी पूर्ण प्रसन्नताकी प्राप्ति सम्भव है।

१९९ चन्द्रविम्बोपमानना ❀ जिनके प्रकाशमान, परमाह्लादकारी श्रीमुखारविन्दके उपमा योग्य, एक चन्द्रबिम्बा ही है।

२०० चारुशीलादिभिः सेव्या ❀ श्रीचारुशीलाजी आदि अष्ट सखियाँ ही जिनकी पूर्ण सेवा कर-सकती हैं।

२०१ चारुसंपावनस्मिता ❀ जिनकी मुस्कान सुन्दर और सब प्रकारसे पवित्र करने वाली है ३६

चारूरूपगुणोपेता चारुस्मरणमङ्गला।
चार्वङ्गी चिदलङ्कारा चिदानन्दस्वरूपिणी ॥३७॥

२०२ चारुरूपगुणोपेता ❀ जो विश्वविमोहनस्वरूप और दया, क्षमा, वात्सल्य, सौशील्य, औदार्य आदि समस्त दिव्य मङ्गल गुणोंसे युक्त हैं।

२०३ चारुस्मरणमङ्गला ❀ जिनका चिन्तन सुन्दर और मङ्गल कारी है।

२०४ चार्वङ्गी ❀ जिनके सभी अङ्ग परममनोहर हैं।

२०५ चिदलङ्कारा ❀ जिनके सभी भूषण चैतन्य मय हैं।

२०६ चिदानन्दस्वरूपिणी ❀ जो चैतन्य एवम् आनन्द-धन (ब्रह्म) की स्वरूप हैं ॥३७॥

छविक्षुब्धरतिः छिन्नप्रणताशेषसंशया।
जगत्क्षेमविधानज्ञा जगत्सेतुनिबन्धिनी ॥३८॥

२०७ छविक्षुब्धरतिः ❀ जिनकी सहज-सुन्दरतासे रति क्षोभको प्राप्त है।

२०८ छिन्नप्रणताशेषसंशया ❀ जो अपने भक्तोंकी समस्त शङ्काओंको दूर करने वाली हैं।

२०९ जगत्क्षेमविधानज्ञा ❀ जो चर-अचर समस्त प्राणियोंके कल्याणका पूर्ण उपाय जानती हैं।

२१० जगत्सेतुनिबन्धिनी ❀ जो जगत्की मर्यादा बाँधने वाली हैं अर्थात् जो प्राणियोंकी हित-सिद्धि के लिये, उन्हें यथोचित नियमोंमें बान्धने वाली हैं ॥३८॥

जगदादिर्जगदात्मप्रेयसी जगदात्मिका।
जगदालयवृन्देशी जगदालयसङ्घसूः ॥३९॥

२११ जगदादिः ❀ जो जगत्की कारण स्वरूपा हैं।

२१२ जगदात्मप्रेयसी ❀ जो चर-अचर समस्त प्राणियोंके आत्मस्वरूप भगवान् श्रीरामजीकी प्राणवल्लभा हैं।

२१३ जगदात्मिका ❀ जो समस्त स्थावर-जङ्गम प्राणियोंके रूपमें सर्वत्र प्रकट हैं ।

२१४ जगदालयवृन्देशी ❀ जो अनन्त ब्रह्माण्डों पर शासन करती हैं ।

२१५ जगदालयसङ्कल्पः ❀ जो अपने सङ्कल्प मात्रसे चर-अचर चेतन मय ब्रह्माण्ड समूहोंको उत्पन्न करती हैं अर्थात् जो अनन्त ब्रह्माण्डोंकी सृष्टि करने वाली हैं ॥३९॥

जगदुद्भवादिकर्त्री जगदेकपरायणम् ।
जगन्नेत्री जगन्माता जगन्माङ्गल्यमङ्गला ॥४०॥

२१६ जगदुद्भवादिकर्त्री ❀ जो जगत्‌की उत्पत्ति, पालन, संहार करने वाली हैं ।

२१७ जगदेकपरायणम् ❀ जो सभी चर-अचर प्राणियोंकी अनुपम निवासस्थान स्वरूपा हैं ।

२१८ जगन्नेत्री ❀ जो समस्त चर-अचर प्राणियोंको उन्हींके कर्मानुसार चलाती हैं ।

२१९ जगन्माता ❀ जो सभी चर-अचर प्राणियोंकी वास्तविक (असली) माता है ।

२२० जगन्माङ्गल्यमङ्गला ❀ जगत्‌में जितने भी मङ्गलवाचक शब्द, नाम, रूपादि पदार्थ हैं, उन सभीका जो मङ्गल करने वाली हैं ॥४०॥

जगन्मोहनमाधुर्यमनोमोहनविग्रहा ।
जतुशोभिपदाम्भोजा जनकानन्दवर्धिनी ॥४१॥

२२१ जगन्मोहनमाधुर्यमनोमोहनविग्रहा ❀ जो अपने माधुर्यसे समस्त चर-अचर प्राणियोंको मुग्ध कर लेते हैं, उन विश्वविमोहन, कन्दर्पदर्प दलनपटीयान भगवान् श्रीरामजीके भी मनको मुग्ध कर लेने वाला जिनका विग्रह अर्थात् (दिव्य स्वरूप) है ।

२२२ जतुशोभिपदाम्भोजा ❀ जिनके श्रीचरण-कमल महावरके शृङ्गारसे सुशोभित हैं ।

२२३ जनकानन्दवर्द्धिनी ❀ जो वात्सल्य सुख-प्रदान करके श्रीजनकजी-महाराजके आनन्दको बढ़ाने वाली हैं ॥४१॥

जनकल्याणसक्तात्मा जननी सर्वदेहिनाम् ।
जननीहृदयानन्दा जनबाधानिवारिणी ॥४२॥

२२४ जनकल्याणसक्तात्मा ❀ जिनका चित अपने आश्रितोंका हित चिन्तन करनेमें सदैव आसक्त रहता है ।

२२५ जननीसर्वदेहिनाम् ❀ जो समस्त देहधारियोंकी माताके समान पालन-पोषण पूर्वक सुरक्षा करने वाली हैं ।

२२६ जननीहृदयानन्दा ❋ जो विश्वमोहन शिशुरूपको धारण करके अपनी मनोहर लीला, मनोहर तोतली वाणी, मनोहर मुस्कान, तथा मनोहर चितवन, मनहरण चाल, परम आह्लादकारी स्पर्श आदिके द्वारा अपनी श्रीअम्बाजीके हृदयके आनन्दकी स्वरूप ही हैं।

२२७ जनबाधानिवारिणी ❋ जो वास्तविक हितकर कर्त्तव्यमें तत्पर हुये, अपने आश्रितोंके सभी उपस्थित विघ्नोंको दूर करने वाली हैं ॥४२॥

जनसन्तापशमनी जनित्री सुखसम्पदाम् ।
जनेश्वरेड्या जन्मान्तत्रासनिर्णाशचिन्तना ॥४३॥

२२८ जनसन्तापशमनी ❋ जो शरणागत भक्तोंके दैहिक (बीमारीके कारण) दैविक (देवताओंके कोपसे) आध्यात्मिक (मनकी चिन्तासे) प्राप्त होनेवाले तीनों प्रकारके तापोंको पूर्णरूपसे नष्ट कर देती है।

२२९ जनित्री सुख-सम्पदाम् ❋ जो सुखस्वरूप भगवान श्रीरामजीकी सम्पत्ति ज्ञान, वैराग्य, अनुराग आदिको भक्तोंके हृदयमें उत्पन्न कर देने वाली हैं।

२३० जनेश्वरेड्या ❋ जो भक्तोंके शासन (आज्ञा) में रहने वाले प्रभु श्रीरामजीके द्वारा भी दया गुणमें प्रशंसाके योग्य हैं।

२३१ जन्मान्तत्रासनिर्णाशचिन्तना ❋ जिनका सुमिरण प्राणियोंके जन्म-मरणके कष्टको पूर्ण नष्ट कर देता है अर्थात् जन्म-मरणके चक्करसे छुड़ाकर सीधे दिव्यधाम वासी बना देता है ४३

जपनीया जयघोषाराध्यमाना जयप्रदा ।
जया जयावहा जन्मजरामृत्युभयातिगा ॥४४॥

२३२ जपनीया ❋ जो जन्म (प्राकट्य काल) से ही प्रशंसाके योग्य हैं तथा विष्णुभगवानको भी जिनकी स्तुति करना कर्त्तव्य है, अथवा प्राणियोंको अपने लौकिक, पारलौकिक हित-साधनके लिये जिनके मन्त्र-राजका जप सदैव करना उचित है।

२३३ जयघोषाराध्यमाना ❋ जो जयकार घोषके द्वारा सदा ही प्रसन्नकी जारही हैं अर्थात् जिनको प्रसन्न करनेके लिये, सब समय किसी न किसीके द्वारा, कहीं न कहीं जयकार बोला ही जा रहा है।

२३४ जयप्रदा ❋ जो अपने आश्रितोंको जय प्रदान करने वाली हैं।

२३५ जया ❋ जो साक्षात् जय स्वरूपा हैं।

२३६ जयावहा ❀ जो भक्तोंके पास विजय विभूतिको स्वयं ढोकर पहुँचाने वाली हैं।

२३७ जन्मजरामृत्युभयातिगा ❀ जिन्हें जन्म, बुढ़ापा व मृत्यु आदि शारीरिक परिवर्तनका भी भय नहीं है अर्थात् जो अजर-अमर व अजन्म वाली हैं ॥४४॥

जलकेलिमहाप्राज्ञा जलजासनवन्दिता ।
जलजारुणहस्ताङ्घ्रिर्जलजायतलोचना ॥४५॥

२३८ जलकेलिमहाप्राज्ञा ❀ जो जल-क्रीडाकी कला जानने वाली श्रीचन्द्रकलाजी श्रीचारुशीलाजी आदि सखियोंमें भी सबसे बढ़कर हैं। अथवा जो जगत्की उत्पत्ति और प्रलयकी लीला करनेमें सबसे अधिक बुद्धि मती हैं।

२३९ जलजासनवन्दिता ❀ जिन्हें जगत्पितामह श्रीब्रह्माजी भी प्रणाम करते हैं।

२४० जलजारुणहस्ताङ्घ्रिः ❀ लाल कमलके समान जिनके लालिमा युक्त दोनों श्रीहस्त एवं पद-कमल हैं।

२४१ जलजायतलोचना ❀ जिनके नेत्र कमलके समान विशाल और मनोहर हैं ॥४५॥

जवानतमनोवेगा जाड्यध्वान्तनिवारिणी ।
जानकी जितमायैका जितामित्रा जितच्छविः ॥४६॥

२४२ जवानतमनोवेगा ❀ सर्वत्र व्यापक होनेके कारण जो अपनी शीघ्रगामितासे समस्त चेतनोंके मनकी तीव्र गमन-शक्तिको लज्जित कर देती हैं।

२४३ जाड्यध्वान्तनिवारिणी ❀ जो जप-परायण भक्तोंके हृदयकी जड़ता रूपी अन्धकारको दूर कर देती हैं।

२४४ जानकी ❀ ब्रह्मा पर्यन्त समस्त जीव जिनकी स्तुति करते हैं, उन भगवान् श्रीरामजीके ही परत्वको अपने मन, बचन, कायसे जो सदैव प्रतिपादन (सिद्ध) करती हैं अथवा श्रीजनकजी-महाराजके तप और अनेक जन्मोंके सञ्चित पुण्य बिपाकसे उदित हुई दयाके वशीभूत होकर, उनके मनोभिलाषकी पूर्तिके लिये उनके गृहमें प्रकट हुई हैं।

२४५ जितमायैका ❀ जो अपने आश्रितोंकी अज्ञान शक्ति तथा दुष्टोंके इन्द्रजाल (जादूगरी) का विनाश करने वाली सभी शक्तियोंमें अनुपम हैं।

२४६ जितामित्रा ❀ सभी प्राणिमात्रका पालन-पोषण तथा रक्षण करने वाली होनेके कारण जिनका, कोई शत्रु नहीं है, तथा सर्वशक्तिमती होनेके कारण जो अपने आश्रितोंके काम, क्रोध, लोभ मोह आदि सभी शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाली हैं।

२४७ जितच्छविः ❀ जो उमा, रमा, ब्रह्माणी, रति आदि समस्त शोभानिधि शक्तियोंकी शोभा को विजय करने वाली हैं, अर्थात् अपरिमित शोभाकी खान हैं ॥४६॥

जितद्वन्द्वा जितामर्षा जीवमुक्तिप्रदायिनी ।
जीवानां परमाराध्या जीवेशी जेतृसद्गतिः ॥४७॥

२४८ जितद्वन्द्वा ❀ जो राग-द्वेष आदि सभी द्वन्द्वोंसे रहित हैं ।

२४९ जितामर्षा ❀ जो जगज्जननी होनेके कारण जीवोंके हजारों अपराधोंको जानती हुई भी उनपर अहित कर क्रोध नहीं करतीं, बल्कि उनका हित करनेके लिये दया करना ही अपना कर्त्तव्य समझती हैं, यथा श्रीवाल्मीकीयरामयणे" पापानां वा शुभानां वा बधार्हाणां प्लवङ्गम। कार्यं कारुण्यमार्येण न कश्चिन्नापराध्यति ।"

२५० जीवमुक्तिप्रदायिनी ❀ जो अविद्या (बन्धनकारिणी) और विद्या (बन्धन मोचिनी) दोनों शक्तियोंको स्वामिनी होनेके कारण आश्रित जीवोंको मोक्षस्वरूप अपना दिव्य धाम प्रदान करने वाली हैं ।

२५१ जीवानां परमाराध्या ❀ जीवोंको आराधना के लिये जिनसे बढ़कर एवं समान ब्रह्मा, विष्णु महेश, गणेश, सुरेश, दिनेश (सूर्य) दुर्गादि कोई भी नहीं हैं ।

२५२ जीवेशी ❀ जो समस्त जीवोंके प्राणोंको अपने वशमें रखनेवाली हैं अथवा सभी जीवोंको कर्मानुसार अनेक प्रकारका जो फल प्रदान करती हैं ।

२५३ जेतृसद्गतिः ❀ जो समस्त शक्तियोंकी सञ्चारिका होनेके कारण लौकिक-पारलौकिक विजय चाहने वाले सभी प्राणियोंकी विजय प्राप्तिका उपाय तथा उसकी सर्वोत्तम फल-स्वरूपा हैं, क्योंकि यदि कोई उनकी प्रदानकी हुई शक्तिसे विश्वविजयी भी होकर उनको भूल गया, तो फिर उससे (विजयाभिमानी) को यमयातना पूर्वक चौरासी लक्ष योनियोंका दुःख अवश्य उठाना पड़ेगा, उसी प्रकार पारलौकिक विजय चाहनेवाला उनकी दी हुई शक्तिसे काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि शत्रुओं तथा लौकिक शब्द, स्पर्श, रूप, गन्ध आदिके सहित मन और प्राण पर भी विजय प्रात करके यदि उनको भूल गया, तो उसे भी त्रिलोकीमें भटकनेसे अवकाश न मिलेगा, अत एव पूर्ण बिजयकी सफलता उन सर्वशक्तिमतीकी प्राप्ति में ही है ॥४७॥

जेत्री ज्ञानदा ज्ञानपाथोधिर्ज्ञानिनां गतिः ।
ज्ञेयाऽऽत्महितकामानां ज्येष्ठा ज्योत्स्नाधिपानना ॥४८॥

२५४ जेत्री ❀ जो सभी पर विजय प्राप्त करने वाली हैं।

२५५ ज्ञानदा ❀ जो सभी प्राणियोंके अन्तः करणमें कर्म करते समय निर्भयताके रूपमें हितकर और भयके रूपमें अहितकरका ज्ञान,प्रदान करती हैं अथवा अपने आश्रित भक्तोंको स्वस्वरूप, पर स्वरूप जगत्स्वरूप, प्राप्य-स्वरूप और प्राप्य-प्राप्ति-साधक तथा प्राप्ति-बाधक स्वरूपका ज्ञान प्रदान करने वाली हैं।

२५६ ज्ञानपाथोधिः ❀ जिनका ज्ञान समुद्रके समान अथाह है।

२५७ ज्ञानिनां गतिः ❀ जो आत्मतत्वको जान लेने वालोंकी परम प्राप्य स्थान स्वरूपा हैं, अर्थात् जिन्हें अपने तथा उनके वास्तविक स्वरूपका ज्ञान हो गया है, उन्हें अपने मन, बुद्धि, चित्तको ठहरानेके लिये एक जिनको छोड़ कर और कोई आधार ही नहीं है।

२५८ ज्ञेयाऽऽत्महितकामानां ❀ अपना कल्याण चाहने वालोंको जिनके स्वरूप, गुण और ऐश्वर्य आदिका ज्ञान प्राप्त करना परम आवश्यक है, अन्योंका नहीं, क्योंकि अन्य शक्तियाँ उनकी अंश होनेसे जीव ही हुईं, अतः उपासनाके लिये वे ज्ञेय नहीं हैं।

२५९ ज्येष्ठा ❀ जो सभी शक्तियोंमें बड़ी हैं।

२६० ज्योत्स्नाधिपानना ❀ जिनका श्रीमुखारविन्द शरद्-ऋतुके पूर्ण चन्द्रके समान परम आह्लाद-कारी तथा प्रकाशपुञ्ज है ॥ ४८ ॥

ज्वरातिगा ज्वलत्कान्तिर्ज्वालामालासमाकुला ।
झणन्नूपुरपादाब्जा झम्पाकेशप्रसादिता ॥४९॥

२६१ ज्वरातिगा ❀ जो भक्तोंके शारीरिक और मानसिक सभी प्रकारके ज्वरोंको दूर करनेमें समर्थ हैं।

२६२ ज्वलत्कान्तिः ❀ जिनके श्रीअङ्गकी कान्ति प्रकाशयुक्त है।

२६३ ज्वालामालासमाकुला ❀ जो प्रकाशपुञ्जसे परिपूर्ण हैं।

२६४ झणन्नूपुरपादाब्जा ❀ जिनके श्रीचरणकमलोंमें नूपुर बज रहे हैं।

२६५ झम्पाकेशप्रसादिता ❀ वानरराज श्रीहनुमानजीने जिन्हें प्रसन्न कर लिया है ॥४९॥

झषकेतुप्रियायूथसञ्चितच्छविमोहिनी ।
झाटवाटोत्सवाधारा ञरूपा टुण्टुकेतरा ॥५०॥

२६६ झषकेतुप्रियायूथसञ्चितच्छविमोहिनी ❀ जो अपने सहज-सौन्दर्यसे रतिसमूहोंकी छवि-राशिको मुग्ध कर लेनेमें विशेषता रखती हैं।

२६७ झाटवाटोत्सवाधारा ❀ जो कुञ्जस्थलियोंके बिबिध प्रकारके उत्सवोंकी आधार-स्वरूपा है अर्थात् जिनकी कृपासे ही सखियोंको कुञ्जकी क्रीडाओंका सुख प्राप्त होता है।

२६८ ञरूपा ❀ जो गानविद्याकी स्वरूपा हैं।

२६९ टुण्टुकेतरा ❀ जो सबसे बड़ी और परमदयालु हृदय वाली हैं ॥५०॥

ठात्मिका डम्बरोत्कृष्टा ढामराधीशगामिनी।
ढुण्ढीष्टदेवता ढक्कामञ्जुनादप्रहर्षिता ॥५१॥

२७० ठात्मिका ❀ जो सूर्य-चन्द्र मण्डल स्वरूपा हैं।

२७१ डम्बरोत्कृष्टा ❀ जो उमा, रमा, ब्रह्माणी रति आदि सभी विश्वबिख्यात महाशक्तियोंमें भी सबसे बढ़कर हैं।

२७२ ढामराधीशगामिनी ❀ जिनकी मनोहर चाल राजहंसके समान है।

२७३ ढुण्ढीष्टदेवता ❀ जो श्रीगणेशजीकी आराध्यदेवता हैं।

२७४ ढक्कामञ्जुनादप्रहर्षिता ❀ जो बड़ी ढोलके मनोहर नादसे विशेष हर्षको प्राप्त होती हैं। ५१॥

णकारा तडिदोघाभदीप्ताङ्गी तत्वरूपिणी।
तत्वकुशला तत्वात्मा तत्वादिस्तनुमध्यमा ॥५२॥

२७५ णकारा ❀ जो सर्वज्ञान स्वरूपा हैं।

२७६ तडिदोघाभदीप्ताङ्गी ❀ विजुलीकी राशिके समान चमकते हुये जिनके श्रीअङ्ग हैं।

२७७ तत्वरूपिणी ❀ जो (दश इन्द्रिय, चतुष्टय अन्तःकरण पञ्च, प्राण, पञ्च तन्मात्रा) २४ तत्वोंकी स्वरूप हैं।

२७८ तत्वकुशला ❀ जो तत्व (सच्चिदानन्दघन ब्रह्मके स्वरूपको भली भाँति जानती हैं।

२७९ तत्वात्मा ❀ जिनकी बुद्धिमें एक पूर्ण तत्व भगवान श्रीरामजी ही सदा निवास करते हैं।

२८० तत्वादिः ❀ जो समस्त तत्वोंकी आदि कारण हैं।

२८१ तनुमध्यमा ❀ जिनकी कमर सिंहके समान सुन्दर और पतली है।

तन्तुप्रवर्द्धिनी तन्वी तपनीयनिभद्युतिः।
तपोमूर्त्तिस्तपोवासा तमसः परतः परा ॥५३॥

२८२ तन्तुप्रवर्द्धिनी ❀ जो अपने उपासकोंके वंशकी वृद्धि करती हैं।

२८३ तन्वी ❀ जिनका शरीर अत्यन्त कोमल है।

२८४ तपनीयनिभद्युतिः ❀ जिनकी कान्ति तपाये सुवर्णके समान गौर है।

२८५ तपोमूर्त्तिः ❀ जो सर्व तपस्वरूपा हैं।

२८६ तपोवासा ❀ जो सभी प्रकारके तपोंकी भण्डार हैं।

२८७ तमसः परतः परा ❀ जो पूर्ण सत् स्वरूपा हैं ॥५३॥

तमोघ्नी तापशमनी तारिणी तुष्टमानसा।
तुष्टिप्रदायिका तृप्ता तृप्तिस्तृप्त्येककारिणी ॥५४॥

२८८ तमोघ्नी ❀ जो आश्रितोंके मैं, मेरा रूप अज्ञानको दूर करने वाली हैं।

२८९ तापशमनी ❀ जो अपने भक्तोंकी दैहिक, दैविक तथा मानसिक तीनों प्रकारकी तापोंको नष्ट कर देती हैं।

२९० तारिणी ❀ जो अपने शरणागत भक्तोंको अनायास ही संसार रूपी सागसे पार उतार देती हैं अर्थात् दिव्य धाम पहुँचा देती हैं।

२९१ तुष्टमानसा ❀ जिनका मन सदा प्रसन्न रहता है।

२९२ तुष्टिप्रदायिका ❀ जो अपने भक्तोंको पूर्ण प्रसन्नता प्रदान करती हैं।

२३९ तृप्ता ❀ जो पूर्ण काम हैं।

२९४ तृप्ति ❀ जो तृप्ति स्वरूपा है।

२९५ तृप्त्येककारिणी ❀ जो आश्रितोंको अपनी छबि-माधुरी के रसास्वादन द्वारा सदैव छकाये रहती हैं अर्थात् पूर्ण निष्काम बना देती हैं ॥५४॥

तेजः स्वरूपिणी तेजोवृषा तोयभवार्च्चिता।
त्रिकालज्ञा त्रिलोकेशी थै थै शब्दप्रमोदिनी ॥५५॥

२९६ तेजः स्वरूपिणी ❀ जो सम्पूर्ण तेजसमूहकी मूर्त्ति हैं।

२९७ तेजोवृषा ❀ जो सर्वत्र अपने तेजकी वर्षा करती हैं।

२९८ तोयभवार्चिता ❀ जिनकी श्रीकमला (लक्ष्मी) जी सदैव पूजा करती हैं।

२९९ त्रिकालज्ञा ❀ जो भूत, भविष्य वर्तमान तीनों कालके सभी प्राणियोंके कायिक, वाचिक, मानसिक प्रत्येक क्रियाओंको जानती हैं।

३०० त्रिलोकेशी ❀ जो तीनों लोकों पर शासन करती हैं।

३०१ थै थै शब्दप्रमोदिनी ❀ जो रासादि लीलाके समय थै थै शब्दसे विशेष प्रसन्नता को प्राप्त होती हैं ॥५५॥

दक्षा दनुजदर्पघ्नी दमिताश्रितकण्टका ।
दम्भादिमलमूलघ्नी दयार्द्राक्षी दयामयी ॥५६॥

३०२ दक्षा ❀ जो भक्तोंकी सुरक्षा करनेमें परम चतुर हैं ।

३०३ दनुजदर्पघ्नी ❀ जो अभिमान रूपी दैत्य का संहार करने वाली हैं अथवा जो दानवों (पर-हित हनन-कारियों) के अभिमानको नष्ट करने वाली हैं ।

३०४ दमिताश्रितकण्टका जो अपने आश्रितोंके काँटा रूपी सभी बाधाओंको शान्त करती हैं ।

३०५ दम्भादिमलमूलघ्नी ❀ जो आश्रितोंके छल, कपट, काम-क्रोध लोभ मोहादि विकारोंकी अज्ञानरूपी जडको नष्ट कर देती हैं ।

३०६ दयार्द्राक्षी ❀ जिनके दोनों नेत्र रूपी कमल दयासे तर हैं ।

३०७ दयामयी ❀ जो दयाकी स्वरूप ही हैं ॥५६॥

दशस्यन्दनजप्रेष्ठा दाक्षिण्याखिलपूजिता ।
दान्ता दारिद्र्यशमनी दिव्यध्येयशुभाकृतिः ॥५७॥

३०८ दशस्यन्दनजप्रेष्ठा ❀ जो दशरथनन्दन श्रीरामभद्रजूकी प्राणप्रियतमा हैं ।

३०९ दाक्षिण्याखिलपूजिता ❀ जो सृष्टिकी उत्पत्ति, पालन, संहार कार्यकी चतुराईमें सभी शक्तियोंके द्वारा पूजित हैं ।

३१० दान्ता ❀ जो मनके समेत सभी इन्द्रियोंको अपनी इच्छानुसार चलाती हैं ।

३११ दारिद्र्यशमनी ❀ जो आश्रितोंकी दरिद्रताका नाश कर देती हैं ।

३१२ दिव्यध्येयशुभाकृतिः ❀ जिनके मङ्गलमय स्वरूपका ध्यान दिव्य (शब्द, स्पर्श, रूपादि विषयोंकी, आसक्तिसे रहित भक्त जन) ही कर सकते हैं ॥५७॥

दिव्यात्मा दिव्यचरिता दिव्योदारगुणान्विता ।
दिव्या दिव्यात्मविभवा दीनोद्धरणतत्परा ॥५८॥

३१३ दिव्यात्मा ❀ जिनकी बुद्धि लोकसे परे हैं ।

३१४ दिव्यचरिता ❀ जिनकी सभी लीलायें अप्राकृत अर्थात् मायिक सत्व, रज, तम इन तीनों गुणोंसे परे हैं ।

३१५ दिव्योदारगुणान्विता ❀ जो भक्तोंको इच्छासे अधिक फल प्रदान करने वाले आप्रकृत दया, क्षमा, वात्सल्य, सौशील्यादि दिव्य गुणोंसे युक्त हैं ।

३१६ दिव्या ❀ जो शब्द, स्पर्श, रूप-रसादिक विषयोंके सहित आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी इन पञ्च तत्वोंसे रहित सच्चिदानन्दघन शरीर वाली हैं।

३१७ दिव्यात्मविभवा ❀ जिनकी ज्ञान-शक्ति लोकसे परे है।

३१८ दीनोद्धरणतत्परा ❀ जो अभिमान-रहित प्राणियोंका उद्धार करनेमें तत्पर हैं ॥५८॥

दीप्ताङ्गी दीप्तमहिमा दीप्यमानमुखाम्बुजा।
दुरासदा दुराराध्या दुरितघ्नी दुर्मर्षणा ॥५९॥

३१९ दीप्ताङ्गी ❀ जिनके सभी अङ्ग परम प्रकाशमय हैं।

३२० दीप्तमहिमा ❀ जिनकी महिमा इस दृश्य जगत् रूपमें चमक रही है।

३२१ दीप्यमानमुखाम्बुजा ❀ जिनका श्रीमुखारविन्द अनन्त चन्द्रमाओंके सदृश आह्लादकारी प्रकाशयुक्त है।

३२२ दुरासदा ❀ जो अभक्तोंको महान् कष्टसे भी नहीं प्राप्त होतीं।

३२३ दुराराध्या ❀ अनन्य प्रेमसे साध्या होनेके कारण जिन्हें योग, यज्ञ, तप आदि विशेष कष्ट कर साधनोंके द्वारा भी कोई प्रसन्न नहीं कर सकता।

३२४ दुरितघ्नी ❀ जो भक्तोंके समस्त पापजनित दुःखोंका नाश करने वाली हैं।

३२५ दुर्मर्षणा ❀ जो भक्तोंके प्रति किसीके किये हुये अपराधको दुःखसे भी सहन नहीं कर पातीं अर्थात् उसे अपने सर्वेश्वरी रूपानुसार अवश्य उचित दण्ड प्रदान करती हैं ॥५९॥

दुर्ज्ञेया दुष्प्रकृतिघ्नी दुःस्वप्नादिप्रणाशिनी।
द्युतिर्द्युतिमती देवचूडामणिप्रभुप्रिया ॥६०॥

३२६ दुर्ज्ञेया ❀ जो असीम होनेके कारण अत्यन्तसीमित बुद्धि वाले प्राणियोंके जप, तप पूजा यज्ञादिके द्वारा भी समझमें नहीं आतीं।

३२७ दुष्प्रकृतिघ्नी ❀ जो आश्रितोंके खोटे स्वभावको नष्ट कर देती हैं।

३२८ दुःस्वप्नादिप्रणाशिनी ❀ जो भक्तोंके स्वप्नमें देखे हुये, अनिष्ट कारक स्वप्नोंके फलको भली-भांतिसे एक ही नाश करने वाली हैं।

३२९ द्युतिः ❀ जो प्रकाश-स्वरूपा हैं।

३३० द्युतिमती ❀ जो अपने आप सहज प्रकाश युक्त हैं।

३३१ देवचूडामणिप्रभुप्रिया ❀ जो समस्त देवताओंमें शिरोमणि भगवान् विष्णुके नियामक श्रीराघवेन्द्र-सरकारकी प्राण वल्लभा हैं ॥६०॥

देवताहितदा दैन्यभावाचिरसुतोषिता ।
धराकन्या धरानन्दा धरामोदविवर्धिनी ॥६१॥

३३२ देवताहितदा ❀ जो दैवी सम्पत्तिसे युक्त अपने भक्तोंको हित स्वयं प्रदान करती हैं।

३३३ दैन्यभावाचिरसुतोषिता ❀ जो अभिमान रहित मात्रसे शीघ्र ही प्रसन्न हो जाती हैं।

३३४ धराकन्या ❀ जो भूमिसे प्रकट होनेके कारण भूमिकन्या कहाती हैं।

३३५ धरानन्दा ❀ जो पृथ्वी देवीके आनन्दकी स्वरूप हैं।

३३६ धरामोदविवर्द्धिनी ❀ जो अपने क्षमा गुणकी सर्वोत्कृष्टताके द्वारा श्रीपृथ्वीदेवीके आनन्द-की विशेष वृद्धि करने वाली हैं ॥६१॥

धरारत्नं धर्मनिधिर्धर्म सेतुनिबन्धिनी ।
धर्मशास्त्रानुगा धामपरिभूततडिद्द्युतिः ॥६२॥

३३७ धरारत्नं ❀ जो पृथिवीमें रत्न स्वरूपा हैं।

३३८ धर्मनिधिः ❀ जो सम्पूर्ण धर्मोकी भण्डार स्वरूपा हैं।

३३९ धर्म-सेतुनिबन्धिनी ❀ जो धर्मकी मर्यादा बाँधने वाली हैं।

३४० धर्मशास्त्रानुगा ❀ जो लोकमें श्रीमनु महाराज आदिके रचित धर्मशस्त्रोंके अनुसार आचरण करने कराने वाली हैं।

३४१ धामपरिभूततडिद्द्युतिः ❀ जो अपने श्रीअङ्गकी चमकसे विजुलीकी चमक को तुच्छ कर रही हैं ॥६२॥

धृतिर्ध्रुवा नतिप्रीता नयशास्त्रविशारदा ।
नामनिर्धूतनिरया निगमान्तप्रतिष्ठिता ॥६३॥

३४२ धृतिः ❀ जो सात्विक धारणाशक्ति स्वरूपा हैं।

३४३ ध्रुवा ❀ जिनका नाम, रूप लीला, धाम, सुमिरण, भजन सब अटल (अविनाशी) है।

३४४ नतिप्रीता ❀ जो पूर्ण काम होनेके कारण केवल प्रणाम मात्रसे प्रसन्न हो जाती हैं यथा श्रीवाल्मीकीयरामायणे सुमेरुकाण्डे "प्रणिपातप्रसन्ना हि मैथिली जनकात्मजा"।

३४५ नयशास्त्रविशारदा ❀ जो नीतिशास्त्रको भली-भाँति जानती हैं।

३४६ नामनिर्धूतनिरया ❀ जिनका नाम लेतेही नरककी यातना (दण्ड) नष्ट हो जाती हैं।

३४७ निगमान्तप्रतिष्ठिता ❀ जिन्हें वेदान्तशास्त्रने प्रतिष्ठा प्रदानकी है अर्थात् जिनकी महिमाको स्वयं वेदान्तशास्त्र गान करता है ॥६३॥

निगमैर्गीतचरिता नित्यमुक्तनिषेविता ।
निधिर्निमिकुलोत्तंसा निमित्तज्ञानिसत्तमा ॥६४॥

३४८ निगमैर्गीतचरिता ❀ जिनके आदर्श पूर्ण, समस्त विश्वहितकर चरितोंको चारोवेद गान करते हैं।

३४९ नित्यमुक्तनिषेविता ❀ जो नित्य मुक्त जीवोंके द्वारा सदा सेवित हैं।

३५० निधिः ❀ जो सम्पूर्ण ज्ञान, सम्पूर्ण वैराग्य, सम्पूर्ण धर्म, सम्पूर्ण ऐश्वर्य, सम्पूर्ण श्री, सम्पूर्ण यशकी भण्डार स्वरूपा हैं।

३५१ निमिकुलोत्तंसा ❀ जो निमिकुलको भूषणके समान सुशोभित करने वाली हैं।

३५२ निमित्तज्ञानिसत्तमा ❀ जो समस्त प्राणियोंके तन, मन, वाणी द्वारा किये हुये प्रत्येक कर्मके उद्देश्य (मतलब) को समझनेवाली सम्पूर्ण शक्तियोंमें सर्वोत्तमा हैं, क्योंकि अन्य देवशक्तियाँ केवल अपने २ एक २ अङ्गकी चेष्टाओंका कारण जानती हैं, सभी इन्द्रियोंकी नहीं किन्तु सर्व व्यापक होनेके कारण जिनसे किसी भी इन्द्रियकी कोई भी चेष्टाका कारण गुप्त नहीं रह सकता ॥६४॥

नियतेन्द्रियसम्भाव्या नियतात्मा निरञ्जना ।
निराकारा निरातङ्का निराधारा निरामया ॥६५॥

३५३ नियतेन्द्रियसम्भाव्या ❀ जो अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त किये हुये साधकोंके ही ध्यानमें भली-भाँति आने योग्य हैं।

३५४ नियतात्मा ❀ जिनका मन पूर्ण रूपसे अपने वशमें रहता है अथवा भगवान् श्रीरामजीमें लीन है।

३५५ निरञ्जना ❀ जो सभी प्रकारके विकारोंसे अछूती है।

३५६ निराकारा ❀ जो सर्वस्वरूपा होनेके कारण किसी एक सीमित स्वरूप वाली नहीं हैं।

३५७ निरातङ्का ❀ जिन्हें जन्म मृत्यु, जरा, व्याधि आदि किसीभी बातका भय नहीं है।

३५८ निराधारा ❀ जिनका आधार कोई नहीं है तथा जो समस्त आधारोंकी अधार-स्वरूपा हैं।

३५९ निरामया ❀ जिन्हें शारीरिक या मानसिक कोई रोग होता ही नहीं ॥६५॥

निर्व्याजकरुणामूर्त्तिर्नीतिः पङ्करुहेक्षणा ।
पतितोद्धारिणी पद्मगन्धेष्टा पद्मजार्चिता ॥६६॥

३६० निर्व्याजकरुणामूर्त्तिः ❀ जो किसी प्रकारके साधन आदिके बहानाकी अपेक्षा न रखने वाली कृपाकी स्वरूपा हैं ।

३६१ नीतिः ❀ जो नीति स्वरूपा हैं ।

३६२ पङ्करुहेक्षणा ❀ जिनके नेत्र-कमलके समान विशाल तथा मनोहर हैं ।

३६३ पतितोद्धारिणी ❀ जो अभिमान रहित, लोक दृष्टिमें गिरे हुये प्राणियोंकाउद्धार करने वाली हैं।

३६४ पद्मगन्धेष्टा ❀ जो श्रीपद्मगन्धाजीकी इष्ट हैं ।

३६५ पद्मजार्चिता ❀ जो श्रीब्रह्माजीके द्वारा पूजित हैं ॥६६॥

पद्मपादा पद्मवक्त्रा पद्मिनी परमेश्वरी ।
परब्रह्म परस्पष्टा पराशक्तिः परिग्रहा ॥६७॥

३६६ पद्मपादा ❀ जिनके दोनों चरण-कमलके समान तथा मधुर (आनन्दप्रद) सुगन्धवाले हैं।

३६७ पद्मवक्त्रा ❀ जिनका श्रीमुखचन्द्र-कमलके समान प्रफुल्लित तथा सुगन्धमय है ।

३६८ पद्मिनी ❀ जिनके सर्वाङ्ग कमलवत् सुकोमल हैं तथा जो पतिव्रता और साम्राज्ञी चिन्होंसे युक्त हैं ।

३६९ परमेश्वरी ❀ जो सभी हरिहरादि शासकोंपर भी शासन करती हैं, अर्थात् जिनके शासनानुसार ब्रह्मा, विष्णु, महेश, शेष, इन्द्र, यम, कुबेर, वरुण, वायु, चन्द्र, सूर्य अग्नि, मृत्यु आदि सब पूर्ण सावधानता पूर्वक अपने अपने कर्त्तव्यमें सदैव तत्पर बने रहते हैं।

३७० परब्रह्म, जो सबसे बड़ी और सूक्ष्म होनेके कारण सभीको अपनेमें बढ़नेका अवकाश (स्थान) देने वाले आकाशादि सभी पञ्च महातत्वोंसे उत्कृष्टा हैं ।

३७१ परस्पष्टा ❀ जो अपने अनन्य प्रेमी भक्तोंके लिये सदैव प्रत्यक्ष रहती हैं ।

३७२ पराशक्तिः ❀जो सृष्टिकी उत्पत्ति, स्थिति तथा संहार करने वाली ब्रह्माणी, रमा उमा आदि शक्तियोंसे श्रेष्ठ अर्थात् उनको अपनी इच्छासे प्रकट करने वाली हैं ।

३७३ परिग्रहा ❀ जो सभी ओरसे भक्तोंके भावोंको ग्रहण करती हैं ॥६७॥

परित्रात्री परिश्लाध्या परेष्टा पर्यवस्थिता ।
पवित्रं पाटवाधारा पातिव्रत्यधुरन्धरा ॥६८॥

३७४ परित्रात्री ❀ जो अपने आश्रितोंकी सब ओर से सुरक्षा करती हैं ।

३६५ परिश्लाघ्या ❀ जो सब प्रकारसे प्रशंसा करने योग्य हैं ।

३७६ परेष्टा ❋ जो ब्रह्मादि देवोंकी भी इष्ट (उपास्य) देवता हैं।
३७७ पर्यवस्थिता ❋ जो सर्वव्यापिका होनेके कारण सभी ओर सर्वत्र विराजमान हैं।
३७८ पवित्रं ❋ जिनका नाम-सङ्कीर्त्तन बज्रादि अमोघ अस्त्रोंसे भी रक्षा करने वाला है।
३७९ पाटवाधारा ❋ जो सम्पूर्ण चतुराईका आधार (केन्द्र) स्वरूपा हैं।
३८० पातिव्रत्यधुरन्धरी ❋ जो पति व्रताओंके धर्मका पालन करनेवाली स्त्रियोंमें अग्रगण्या है ६८

पापिपापौघसंहर्त्री पारिजातसुमार्चिता।
पावनानुत्तमादर्शा पावनी पुण्यदर्शना ॥६९॥

३८१ पापिपापौघसंहर्त्री ❋ जो शरणागत पापियोंके पापसमूहोंको सब प्रकारसे हरणकर लेती हैं।
३८२ पारिजातसुमार्चिता ❋ इन्द्रादि देव कल्पवृक्षपुष्पोंके द्वारा जिनकी पूजा करते हैं।
३८३ पावनानुत्तमादर्शा ❋ जिनका आदर्श सर्वोत्तम तथा प्राणियोंको स्वभाविक पवित्र बनाने वाला है।
३८४ पावनी ❋ जिनका नाम, रूप, लीला, धाम सब कुछ, प्राणियोंके काम, क्रोध, लोभादि विकार रूपी अपवित्रताको दूर करके निर्विकारिता रूपी पवित्रता प्रदान करने वाला है।
३८५ पुण्यदर्शना ❋ जिनका दर्शन हृदयमें अत्यन्त पवित्रताको प्रदान करने वाला पुण्यके उदय-से प्राप्त होता है ॥६९॥

पुण्यश्रवणचरिता पुण्यश्लोकवरीयसी।
पुष्पालङ्कारसम्पन्ना पुष्टिः पुष्टिप्रदायिनी ॥७०॥

३८६ पुण्यश्रवणचरिता ❋ जिनके मङ्गल मय चरितोंको श्रवण करनेसे अन्तस्करणमें स्वाभाविक पवित्रता उदय होती है।
३८७ पुण्यश्लोकवरीयसी ❋ जो पवित्रतम यशवाली सभी महाशक्तियोंमें सबसे उत्कृष्ट हैं।
३८८ पुष्पालङ्कारसम्पन्ना ❋ जो फूलोंके शृङ्गारसे युक्त हैं।
३८९ पुष्टिः ❋ जो पुष्टि-शक्ति-स्वरूपा हैं अर्थात् जिनकी उस शक्तिसे ही सभी प्राणियोंको पुष्टि-की प्राप्ति होती है।
३९० पुष्टिदायिनी ❋ जो भक्तोंके लिये शारीरिक तथा हार्दिक पुष्टि (दृढ़ता) प्रदान करती हैं ७०

पूतात्मा पूतसर्वेहा पूज्यपादाम्बुजद्वया।
पूर्णा पूर्णेन्दुवदना प्रकृतिः प्रकृतेः परा ॥७१॥

३९१ पूतात्मा ❀ जिनकी बुद्धि परम-पवित्र है ।

३९२ पूतसर्वेहा ❀ जिनकी समस्त चेष्टायें परम-पवित्र हैं ।

३९३ पूज्यपादाम्बुजद्वया ❀ जिनके कमलवत् सुकोमल दोनों श्रीचरण सभीके पूजने योग्य हैं ।

३९४ पूर्णा ❀ जिन्हे अपनी किसी भी इच्छाकी पूर्त्ति करना शेष नहीं है तथा जो भूत भविष्य, वर्तमान तीनों कालमें सर्वत्र पूर्ण रूपसे विराजमान हैं ।

३९५ पूर्णेन्दुवदना ❀ जिनका श्रीमुखारविन्द पूर्ण चन्द्रमाके सदृश शीतल प्रकाशमय तथा परम आह्लादकारी है ।

३९६ प्रकृतिः ❀ जो ब्रह्मकी इच्छा स्वरूपा हैं ।

३९७ प्रकृतेः परा ❀ जो विद्या-अविद्या रूपी मायासे पूरे हैं ॥७१॥

प्रकृष्टात्मा प्रणम्याङ्घ्रिः प्रणयातिशयप्रिया ।
प्रणतातुल्यवात्सल्या प्रणतध्वस्तसंसृतिः ॥७२॥

३९८ प्रकृष्टात्मा ❀ जिनकी बुद्धि सबसे बढ़ कर हैं ।

३९९ प्रणम्याङ्घ्रिः ❀ जिनके श्रीचरण कमल प्रणाम करनेके ही योग्य है ।

४०० प्रणयातिशयप्रिया ❀ जिन्हें प्रेम सबसे अधिक प्रिय है ।

४०१ प्रणतातुल्यवात्सल्या ❀ भक्तोंके प्रति जिनके वात्सल्यकी उपमा नहीं दी जासकी ।

४०२ प्रणतध्वस्तसंसृतिः ❀ जो अपने आश्रितोंके जन्म-मरणरूपी आवागमनको नष्ट कर देती हैं ।

प्रणविनी प्रतिष्ठात्री प्रथमा प्रथिता प्रधीः ।
प्रपन्नरक्षणोद्योगा प्रवित्तं प्रविशारदा ॥७३॥

४०३ प्रणविनी ❀ जो ॐ कार वाच्य भगवान् श्रीरामजीकी प्राणप्यारी हैं ।

४०४ जो वात्सल्य भावकी परा काष्ठाके कारण अपने भक्तोंको विशेष सम्मान देती है ।

४०५ प्रथमा ❀ जो सबसे आदिकी हैं ।

४०६ प्रथिता ❀ जो अपनी महिमाके द्वारा सर्वत्र तीनों कालमें प्रसिद्ध हैं ।

४०७ प्रधीः ❀ जिनका ज्ञान सबसे उत्कृष्ट है ।

४०८ प्रपन्नरक्षणोद्योगा ❀ शरणागत जीवोंकी रक्षा करना ही जिनका मुख्य धंधा है ।

४०९ प्रवित्तं ❀ जो भक्तोंकी सबसे बढ़कर सम्पत्ति (धन) हैं ।

४१० प्रविशारदा ❀ जो भक्तोंकी रक्षा करनेमें सबसे अधिक चतुरा हैं ॥७३॥

प्रह्वी प्राणप्रदा प्राणनिलया प्राणवल्लभा ।
प्राणात्मिका प्रार्थनीया प्रियमोहनदर्शना ॥७४॥

४११ प्रह्वी ❀ जिनका स्वभाव अत्यन्त नम्र है ।

४१२ प्राणप्रदा ❀ जो समस्त शरीरोंमें पञ्च प्राणोंका सञ्चार करने वाली हैं ।

४१३ प्राणनिलया ❀ जो समस्त प्राणोंके निवास स्थान स्वरूपा हैं ।

४१४ प्राणवल्लभा ❀ जो प्राणोंको अत्यन्त प्रिय हैं ।

४१५ प्राणात्मिका ❀ जो पञ्च-प्राणोंमें विराज रही हैं अथवा जो पञ्च प्राणस्वरूपा हैं ।

४१६ प्रार्थनीया ❀ सभी (ब्रह्मादि देवताओं) को भी जिनसे याचना करना उचित है ।

४१७ प्रियमोहनदर्शना ❀ जो ज्ञानकी पराकष्ठासे अपने प्यारे भगवान् श्रीरामजीको भी मुग्ध रखती हैं ॥७४॥

प्रियार्हा प्रीतितत्वज्ञा प्रीतिदा प्रीतिवर्धिनी ।
प्रेज्या प्रेमरता प्रेमवल्लभातीववल्लभा ॥७५॥

४१८ प्रियार्हा ❀ जो गुण, रूप, ऐश्वर्य आदिकी दृष्टिसे प्यारे श्रीरामभद्रजूके योग्य दुलहिन तथा श्रीराघवेन्द्र सरकारजी सब प्रकारसे जिनके दूलह होनेके योग्य हैं, अथवा जो संसारकी प्यारीसे प्यारी वस्तुयें अर्पण करनेके योग्य पात्र स्वरूपा हैं ।

४१९ प्रीतितत्वज्ञा ❀ जो प्रेमके रहस्यको हर प्रकासे समझती हैं ।

४२० प्रीतिदा ❀ जो अपने आश्रितोंको संसारके शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध आदि पाँचो विषयोंसे वैराग्य करानेके लिये भगवानके श्रीचरण-कमलोंमें अनुराग प्रदान करती हैं ।

४२१ प्रीतिवर्द्धिनी ❀ जो भगवदानन्दकी अनुभूति करानेके लिये भक्तोंके हृदयमें उत्तोरोत्तर अनुरागकी वृद्धि करती रहती हैं ।

४२२ प्रेज्या ❀ जो सभी देव, मुनि, सिद्ध, परमहंसोंके द्वारा भी सबसे बढ़कर पूजने योग्य हैं ।

४२३ प्रेमरता ❀ जो भक्तोंके सहित भगवान् श्रीराघवेन्द्रसरकारके प्रेममें सदैव आसक्त बनी रहती हैं

४२४ प्रेमवल्लभातीववल्लभा ❀ जिन्हें गुण, रूप, वैभव आदि प्रियतम होकर एक प्रेम ही प्रिय है उन श्रीरघुनन्दनप्यारेजूकी जो सबसे अधिक प्यारी हैं ॥७५॥

प्रेमवारां निधिः प्रेमविग्रहा प्रेमवैभवा ।
प्रेमशक्त्येकविवशा प्रेमसंसाध्यदर्शना ॥७६॥

४२५ प्रेमवारां निधिः ❀ जो प्रेमकी समुद्र हैं अर्थात् जिनमें समुद्रके समान अथाह प्रेम भरा हुआ है।

४२६ प्रेमविग्रहा ❀ जो प्रेमकी स्वरूप ही हैं।

४२७ प्रेमवैभवा ❀ जिनकी प्यारी सम्पत्ति एक प्रेम ही है।

४२८ प्रेमशक्त्येकविवशा ❀ जो अनुपम प्रेम शक्ति-सम्पन्न प्रभु श्रीरामजीके अधीन हैं।

४२९ प्रेमसंसाध्यदर्शना ❀ जिनके दर्शनोंका अमोघ उपाय एक प्रेम ही है ॥७६॥

प्रेमैकहाटकागारा प्रेमैकाद्भुतविग्रहा।
फणीन्द्रावर्ण्यविभवा फलरूपा सुकर्मणाम् ॥७७॥

४३० प्रेमैकहाटकागारा ❀ जिनके निवासके लिये प्रेम ही मुख्य श्रीकनक-भवन है।

४३१ प्रेमैकाद्भुतविग्रहा ❀ जो प्रेमकी आश्चर्यमयी अनुपम मूर्त्ति हैं।

४३२ फणीन्द्रावर्ण्यविभवा ❀ सहस्र मुख वाले शेषजी भी जिनके ऐश्वर्यका वर्णन करनेमें असमर्थ हैं।

४३३ फलरूपा सुकर्मणाम् ❀ जो समस्त हितकर कर्मोंकी फलस्वरूपा हैं ॥७७॥

बुद्धिदा बुधमृग्याङ्घ्रिकमला बोधवारिधिः।
ब्रह्मलेखातिगा ब्रह्मवेत्त्री ब्रह्माण्डबृन्दसूः ॥७८॥

४३४ बुद्धिदा ❀ जो प्रत्येक भले बुरे कर्ममें तत्पर होनेके प्रारम्भमें सभी प्राणियोंको निर्भयता, प्रसन्नता और भयचिन्ताके रूपमें हित और अहितका ज्ञान स्वयं प्रदान करती हैं।

४३५ बुधमृग्याङ्घ्रिकमला ❀ ज्ञानियों के खोजने योग्य एक जिनके श्रीचरणकमल हैं।

४३६ बोधवारिधिः ❀ जिनमें ज्ञान-शक्ति समुद्रके समान अथाह है।

४३७ ब्रह्मलेखातिगा ❀ जो भक्तोंके मस्तकमें श्रीब्रह्माजीकी लिखी हुई दुर्भाग्य रेखाओंको भी टाल (मिट) देती हैं अर्थात् सौभाग्य-जनित सद्भावना, सद्विचार, परहितेहा आदि (मन, बुद्धि,-चित्त) में भर देती हैं।

४३८ ब्रह्मवेत्त्री ❀ जो ब्रह्म भगवान् श्रीरामजी अथवा वेदके रहस्यको हर प्रकारसे जानती हैं।

४३९ ब्रह्माण्डबृन्दसूः ❀ जो अनन्त ब्रह्माण्डोंकी जन्म दात्री हैं ॥७८॥

भक्तत्राणविधानज्ञा भक्तिसंसाध्यदर्शना।
भजनीयगुणोपेता भयघ्नी भवतारिणी ॥७९॥

४४० भक्तत्राणविधानज्ञा ❀ जो भक्तोंकी रक्षाका उपाय भली भाँति जानती हैं।

४४१ भक्तिसंसाध्यदर्शना ❀ जिनका दर्शन केवल पूर्ण प्रेमासक्तिसे सुलभ है।

४४२ भजनीयगुणोपेता ❀ जो उपासना करने योग्य सर्वज्ञता, सर्वशक्तिमत्ता, सर्वव्यापकता तथा भगवत्ता, क्षमा, वात्सल्य, सौशील्य, कारुण्य, उदारता आदि अनेक दिव्य मङ्गल गुणों-से परिपूर्ण हैं।

४४३ भयघ्नी ❀ जो अपनी महिमा पर विश्वास दिलाकर भक्तोंके सम्पूर्ण भयोंको नष्ट कर देती हैं।

४४४ भवतारिणी ❀ जो अपने श्रीचरण-कमलोंकी आसक्ति रूपी जहाजके द्वारा आश्रित भक्तोंको संसारसागरसे पार कर देती हैं अर्थात् दिव्य-धाममें बुला लेती हैं ॥७६॥

भवपूज्या भवाराध्या भवोत्पत्यादिकारिणी।
भाग्यैकसंशोधयित्री भावैकपरितोषिता ॥८०॥

४४५ भवपूज्या ❀ श्रीभोलेनाथजीको भी जिनकी पूजा कर्त्तव्य है।

४४६ भवाराध्या ❀ जो भगवान श्रीभोलेनाथजीके द्वारा भी उपासित होने योग्य हैं। अथवा जिनकी आराधना वास्तवमें भली भाँति भगवान् श्रीशङ्करजी ही कर पाते हैं।

४४७ भवोत्पत्यादिकारिणी ❀ जो अपने सत्व, रज, तम त्रिगुणमय आकारोंसे जगत्‌की उत्पत्ति, पालन तथा संहार करने वाली हैं।

४४८ भाग्यैकसंशोधयित्री ❀ जो अपने आश्रितोंके बिगड़े हुये भाग्यको भली-भाँति सुधार देती हैं।

४४९ भावैकपरितोषिता ❀ जिन्हें अनन्य भाव वाले भक्त ही पूर्ण प्रसन्न कर पाते हैं ॥८०॥

भूतप्रसूतिर्भूतात्मा भूतादिर्भूतिदायिनी।
भूतिमत्समुपास्याङ्घ्रिर्भूसुता भ्रान्तिहारिणी ॥८१॥

४५० भूतप्रसूतिः ❀ जो सम्पूर्ण प्राणियोंकी उत्पत्ति करने वाली हैं।

४५१ भूतात्मा ❀ सम्पूर्ण चर-अचर प्राणी ही जिनके शरीर हैं अथवा जो सभी प्राणियोंकी आत्मस्वरूपा हैं।

४५२ भूतादिः ❀ जो आकाशादि पञ्चमहाभूतोंकी आदि कारण स्वरूपा हैं।

४५३ भूतिदायिनी ❀ जो आश्रितोंको अनेक प्रकारका सौभाग्य प्रदान करती हैं।

४५४ भूतिमत्समुपास्याङ्घ्रिः ❀ भगवान्‌की प्रसन्नता प्राप्तिके लिये ऐश्वर्यशाली ब्रह्मा, विष्णु, शिवादिकोंको भी जिनके श्रीचरणकमलोंकी आराधना करना परम आवश्यक है।

४५५ भूसुता ❀ जो पृथ्वीसे प्रकट होनेके कारण भूमि पुत्री कहाती हैं।

४५६ भ्रान्तिहारिणी ❀ जो आश्रितोंकी सभी प्रकारकी शङ्काओंको दूर कर देती हैं ॥८१॥

मङ्गलाशेषमाङ्गल्या मङ्गलैकमहानिधिः ।
मधुरा मधुराकारा मननीयगुणावलिः ॥८२॥

४५७ मङ्गलाशेषमाङ्गल्या ❀ जो सम्पूर्णमङ्गलोंमें सबसे उत्कृष्टमङ्गल स्वरूपा हैं ।
४५८ मङ्गलैकमहानिधिः ❀ जो समस्तमङ्गलोंकी सबसे बड़ी निधि (भण्डार) स्वरूपा हैं ।
४५९ मधुरा ❀ जो अपने आश्रित चेतनोंको भगवदानन्द प्रदान करती रहती हैं ।
४६० मधुराकारा ❀ जिनका मङ्गल मयविग्रह महान् आनन्द दायक है ।
४६१ मननीयगुणावलिः ❀ जिनके क्षान्ति, वात्सल्य सौशील्य, कारुण्यादि गुणसमूह सतत, मनन करने योग्य हैं ॥८२॥

मनोजवा मनोज्ञाङ्गी मनोरमगुणान्विता ।
मनः स्वरूपा महती महनीयगुणाम्बुधिः ॥८३॥

४६२ मनोजवा ❀ जिनकी सर्वत्र पहुँचने की शक्ति, मनसे भी अधिक तीव्र है ।
४६३ मनोज्ञाङ्गी ❀ जिनके श्रीचरण-कमल आदिक सभी अङ्ग, बड़े ही मनोहर हैं ।
४६४ मनोरमगुणान्विता ❀ जो सभी मनोहर गुण-समूहोंसे परिपूर्ण हैं ।
४६५ मनःस्वरूपा ❀ जो सम्पूर्ण इन्द्रियोंमें मन स्वरूपा हैं ।
४६६ महती ❀ जो शक्तियोंमें सबसे बड़ी महिमा वाली हैं ।
४६७ महनीयगुणाम्बुधिः ❀ जो पूजने योग्य क्षमा, वात्सल्य उदारता आदि सभी गुणोंकी समुद्र-स्वरूपा हैं ॥८३॥

महद्धर्यका महाकीर्तिर्महाकोशा महाक्रतुः ।
महाक्रमा महागर्ता महाछविर्महाद्युतिः ॥८४॥

४६८ महद्धर्यका ❀ जो अनुपम महान् ऐश्वर्यवाली हैं ।
४६९ महाकीर्त्तिः ❀ जो ब्रह्मकी कीर्त्तिस्वरूपा हैं अथवा जिनसे बढ़कर किसीकी कीर्त्ति है ही नहीं ।
४७० महाकोशा ❀ जो ब्रह्मके सभी गुण, शक्ति, सौन्दर्य, ऐश्वर्य आदिकी भण्डार हैं ।
४७१ महाक्रतुः ❀ जो महान् यज्ञस्वरूपा हैं ।
४७२ महाक्रमा ❀ जिनकी गमन शक्ति सबसे अधिक तीव्र है ।
४७३ महागर्ता ❀ जो माया रूपी महान् गर्त (गड़े) वाली हैं ।

४७४ महाछबिः ❀ जिनसे बढ़कर किसी का सौन्दर्य है ही नहीं अर्थात् जो ब्रह्मके सौन्दर्यकी मूर्त्ति हैं ।

४७५ महाद्युतिः ❀ जो ब्रह्मकी कान्तिस्वरूपा हैं अथवा जिनसे बढ़कर किसीकी कान्ति नहीं है॥८४

महादृष्टिर्महाधाम्नी महानन्दस्वरूपिणी ।
महानायकसम्मान्या महानैपुण्यवारिधिः ॥८५॥

४७६ महादृष्टिः ❀ जिनकी दृष्टि ब्रह्मके समान सर्वव्यापक है ।

४७७ महाधाम्नी ❀ जिनका धाम श्रीमिथिलाजी सर्वोत्कृष्ट है अथवा जो ब्रह्मकी तेजःस्वरूपा हैं

४७८ महानन्दस्वरूपिणी ❀ जो ब्रह्मके आनन्दकी मूर्त्ति हैं अथवा जिनका स्वरूप महान् आनन्द प्रदायक है ।

४७९ महानायकसम्मान्या ❀ जो सर्वेश्वर प्रभु श्रीरामजीके द्वारा भी सम्मान पाने योग्य हैं ।

४८० महानैपुण्यवारिधिः ❀ जो महान् चतुराईकी सागर-स्वरूपा हैं अर्थात् जैसे सागरमें अथाह जल भरा हुआ है, उसी प्रकार जिनमें अथाह महान् चतुराई भरी हुई है ॥८५॥

महापूज्या महाप्राज्ञा महाप्रेज्या महाफला ।
महाभागा महाभोगा महामतिमतां वरा ॥८६॥

४८१ महापूया ❀ जिनसे बढ़कर कोई भी शक्ति पूजने योग्य नहीं है अथवा जो श्रीलक्ष्मणजी श्रीभरतजी श्रीशत्रुघ्नजी आदि के द्वारा पूजने योग्य हैं ।

४८२ महाप्राज्ञा ❀ जो अत्यन्त बुद्धिमती हैं ।

४८३ महाप्रेज्या ❀ जो सबसे बढ़कर उपासनाके योग्य हैं ।

४८४ महाफला ❀ जिनकी प्राप्ति ही समस्त सत्कर्मोंका सबसे उत्कृष्ट फल है ।

४८५ महाभागा ❀ जिनका सौभाग्य प्रशंसनीय है अर्थात् जिनसे बढ़कर किसीका सौभाग्य है ही नहीं।

४८६ महाभोगा ❀ जो सर्वोत्कृष्ट भोग वाली हैं ।

४८७ महामतिमतां वरा ❀ जो समस्त बुद्धिमानोंमें श्रेष्ठ हैं ॥८६॥

महामाधुर्यसम्पन्ना महामायास्वरूपिणी ।
महायोगप्रसाध्यैका महायोगेश्वरप्रिया ॥८७॥

४८८ महामाधुर्यसम्पन्ना ❀ जो महान् मनो मुग्धकारी सौन्दर्यसे परिपूर्ण हैं ।

४८९ महामायास्वरूपिणी ❀ जो महामायाकी कारण स्वरूपा हैं ।

४९० महायोगप्रसाध्यैका ❀ जो चित्तवृत्तिकी महान् आसक्तिसे प्राप्त होनेवाली सभी शक्तियोंमें मुख्य हैं।

४९१ महायोगेश्वरप्रिया ❀ जो महायोगेश्वर भगवान् श्रीरामजीकी प्राणवल्लभा हैं ॥८७॥

महारतिर्महालक्ष्मीर्महाविद्यास्वरूपिणी।
महाशक्तिर्महाश्रेष्ठा महाश्लाघ्ययशोऽन्विता ॥८८॥

४९२ महारतिः ❀ जो भगवत् सम्बन्धी परम आसक्ति अथवा अनन्त रतियोंकी कारण-स्वरूपा हैं।

४९३ महालक्ष्मी ❀ जो अपने अंशसे अनन्त लक्ष्मियोंको प्रकट करती हैं।

४९४ महाविद्यास्वरूपिणी ❀ जो समस्त विद्याओंकी आधार भूता हैं।

४९५ महाशक्तिः ❀ जो समस्त शक्तियोंकी कारण-स्वरूपा हैं।

४९६ महाश्रेष्ठा ❀ जो सभी श्रेष्ठ सज्जन पुरुषोंकी श्रेष्ठताकी आधार स्वरूपा हैं।

४९७ महाश्लाघ्ययशोऽन्विता ❀ जो भगवान् श्रीरामजीके द्वारा प्रशंसनीय यशसे युक्त हैं ॥८८॥

महासिद्धिर्महासेव्या महासौभाग्यदायिनी।
महाहविर्महार्हार्हा महिष्ठात्मा महीयसी ॥८९॥

४९८ महासिद्धिः ❀ जिनकी प्राप्तिसे बढ़कर कोई सिद्धि नहीं है अर्थात् जो सर्वोत्कृष्ट सिद्धि-स्वरूपा हैं।

४९९ महासेव्या ❀ जो श्रीचन्द्रकलाजी श्रीचारुशीलाजी आदि नित्य, दिव्य महाशक्तियोंके द्वारा ही नित्य सेवित होने योग्य हैं, अथवा जिनसे बढ़कर कोई भी आराधना का पात्र नहीं है।

५०० महासौभाग्यदायिनी ❀ जो प्रसन्न होकर भक्तोंको नित्य असीम-सौभाग्य सम्पन्न सच्चिदानन्द-घन विग्रह प्रभु श्रीरामजीको भी, दे डालती हैं।

५०१ महाहविः ❀ जो यज्ञमें हवन के लिये दी जाती हुई महा (उत्कृष्ट) हवि स्वरूपा हैं। अथवा जिनकी शरणरूपी अग्निमें जीव ही हवि स्वरूप बनता है।

५०२ महार्हार्हा ❀ जो परम पूजनीया उमा, रमा, ब्रह्माणी आदि महाशक्तियोंके द्वारा भी पूजने योग्य हैं।

५०३ महिष्ठात्मा ❀ अनेक भक्तोंके विभिन्न प्रकारके भावोंकी पूर्त्ति के लिये अत्यन्तभक्त वत्सलताके कारण, जो अपने मङ्गलमय विग्रहसे इस पृथ्वी तल पर विराजमान होती हैं।

५०४ महीयसी ❀ जो जगत्‌में सबसे बड़े पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश आदि पञ्च तत्वों से भी बहुत बड़ी हैं ॥८९॥

महीशजा महोत्कर्षा महोत्साहा महोदया ।
महोदारा महेशादिसमालम्ब्याङ्घ्रिपङ्कजा ॥९०॥

५०५ महीशजा ❋ जो पृथ्वीपति श्रीमिथिलेशजी-महाराजकी यज्ञभूमिसे प्रकट होनेके नाते उनकी पुत्री कहाती हैं ।

५०६ महोत्कर्षा ❋ जिनकी महिमा सबसे बढ़कर हैं ।

५०७ महोत्साहा ❋ जो आश्रित रक्षणमें सबसे अधिक उत्साह गुण युक्ता हैं ।

५०८ महोदया ❋ लोक-कल्याणार्थ जिनके वात्सल्य, औदार्य (उदारता) क्षमा आदि गुणोंकी सबसे अधिक उन्नति है ।

५०९ महोदारा ❋ जिनके समान कोई उदार नहीं है ।

५१० महेशादिसमालम्ब्याङ्घ्रिपङ्कजा ❋ भगवत् प्राप्तिके लिये जिनके श्रीचरण-कमलोंका अवलम्बन लेना भगवान् शङ्करजी आदि महायोगियोंके लिये भी परम आवश्यक है, फिर इतर प्राणियोंके लिये कहना ही क्या !॥९०॥

माता समस्त जगतां माधुरीजितमाधुरी ।
मान्यपरमसम्मान्या मा मितकोकिलस्वना ॥९१॥

५११ माता समस्तजगतां ❋ जो समस्त चर-अचर प्राणियोंकी वास्तविक (असली) माता हैं ।

५१२ माधुरीजितमाधुरी ❋जो अपने सौन्दर्यसे सुन्दरताको भी लज्जित करती हैं ।

५१३ मान्यपरमसम्मान्या ❋ मान्य देव, ऋषि, योगि, सिद्ध आदिकोंसे उत्कृष्ट, इन्द्र, रुद्र, ब्रह्मा विष्णु आदिके द्वारा भी जो परम सम्मान पानेके योग्य हैं ।

५१४ मा ❋जो श्रीलक्ष्मी स्वरूपा हैं ।

५१५ मितकोकिलस्वना ❋ जिनकी बोली कोयलके समान सुरीली और प्रयोजन मात्र है ॥९१॥

मिथिलेशक्रतूद्भूता मिथिलेश्वरनन्दिनी ।
मीनाक्षी मुक्तिवरदा मुनिसेव्यपदाम्बुजा ॥९२॥

५१६ मिथिलेशक्रतूद्भूता ❋ जो श्रीमिथिलेशजी महाराजके यज्ञसे प्रकट हुई हैं ।

५१७ मिथिलेश्वरनन्दिनी ❋ जो अपनी बाललीलाओंके द्वारा श्रीमिथलेशजी महराजको परम आनन्द देने वाली हैं ।

५१८ मीनाक्षी ❀ जिनके विशाल नेत्र भक्तोंको भावपूर्ण चेष्टाओंको देखनेके लिये मछलीके नेत्रों के समान चञ्चल बने रहते हैं।

५१९ मुक्तिवरदा ❀ जो अपने आश्रित चेतनोंको पञ्च (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध) विषयोंसे निवृत्तिरूपा मुक्तिका बर देने वाली हैं।

५२० मुनिसेव्यपदाम्बुजा ❀ जिनके श्रीचरण कमलोंकी सेवा करना मुनियोंका भी कर्त्तव्य है ॥९२॥

मुनीन्द्रावर्ण्यमहिमा मूलप्रकृतिसंज्ञिता।
मृगनेत्रा मृगाङ्काभवदना मृदुभाषिणी ॥९३॥

५२१ मुनीन्द्रावर्ण्यमहिमा ❀ जिनकी महिमाको भगवान् श्रीव्यासजी, श्रीवाल्मीकिजी; श्रीअगस्त्यजी, श्रीलोमशजी श्रीनारदजी आदि बड़े-बड़े मुनिराज भी वर्णन करनेको समर्थ नहीं हैं।

५२२ मूलप्रकृतिसञ्ज्ञिता ❀ जिनका नाम मूलप्रकृति भी है।

५२३ मृगनेत्रा ❀ जिनके नेत्र हरिणके नेत्रोंके समान विशाल और हृदयाकर्षक हैं।

५२४ मृगाङ्काभवदना ❀ जिनका श्रीमुखारविन्द पूर्णचन्द्रमाके समान शीतल प्रकाश युक्त परम आह्लादकारी है।

५२५ मृदुभाषिणी ❀ जो बड़ी ही कोमल बाणी बोलती हैं ॥९३॥

मृदुला मृदुलाचारा मृदुसंमोहनेक्षणा।
मृदुस्वभावसम्पन्ना मृद्वी मेधसमुद्भवा ॥९४॥

५२६ मृदुला ❀ जो अपने उपासकोमें भी कोमलता भर देती है।

५२७ मृदुलाचारा ❀ जिनके सभी आचरण (व्यवहार) अत्यन्त कोमल हैं।

५२८ मृदुसंमोहनेक्षणा ❀ जिनके दर्शनोंसे कोमलता भी परम मूर्छाको प्राप्त होती है।

५२९ मृदुस्वभावसम्पन्ना ❀ जो आश्रितोंके अपराधोंको नहीं देखती अर्थात् जिनका स्वभाव अत्यन्त कोमल है।

५३० मृद्वी ❀ जिनका सब कुछ अत्यन्त कोमल है अर्थात् जो कोमलताका स्वरूप ही हैं।

५३१ मेधसमुद्भवा ❀ जो श्रीमिथिलेशजी महाराजकी यज्ञभूमिसे प्रकट हुई हैं अथवा जो समस्त यज्ञोंकी कारण स्वरूपा हैं ॥९४॥

मेधेशी मैथिली मोदवर्षिणी मौढ्यभञ्जिका ।
यतचित्तेन्द्रियग्रामा युक्ता युक्तात्मभाषिता ॥६५॥

५३२ मेधेशी ❀ जो समस्त यज्ञोंकी स्वामिनी हैं ।

५३३ मैथिली ❀ जो मिथिवंश उजागरी तथा श्रीमिथिलेशजी महाराजकी राजदुलारी हैं ।

५३४ मोदवर्षिणी ❀ जो भक्तोंके लिये निरन्तर आनन्दकी वर्षा करने वाली हैं ।

५३५ मौढ्यभञ्जिका ❀ जो आश्रितोंकी मूढ़ताको नष्टकर देती हैं ।

५३६ यतचित्तेन्द्रियग्रामा ❀ जो भक्तोंके भरण, पोषण, तथा सुरक्षाके लिये चित्त और इन्द्रियोंको सदैव अपने अधीन रखती हैं ।

५३७ युक्ता ❀ जो परम निपुण और सब प्रकारसे सम्पन्न हैं ।

५३८ युक्तात्मभाविता ❀ अपने मनको पूर्णस्वाधीन रखने वाले योगिजन जिनकाध्यान करते हैं ॥६५॥

योगदा योगनिलया योगस्था योगिनां गतिः ।
योगिनां समुपालम्भ्या योगिराजप्रियात्मजा ॥६६॥

५३९ योगदा ❀ जो आश्रित जीवोंको अपनी निर्हैतुकी कृपा द्वारा प्रभुसे मिलन करा देती हैं ।

५४० योगनिलया ❀ जो सम्पूर्ण योगोंकी आधार-स्वरूपा हैं ।

५४१ योगस्था ❀ जो, जीवोंको भगवत् प्राप्तिके उपायमें लगाती रहती हैं ।

५४२ योगिनां गतिः ❀ जो भगवत्-सम्बन्धी चेतनोंके प्राप्त करने योग्य हैं अथवा जो प्रभुसे मिलने के लिये चल पड़े हैं, उन सौभाग्यशाली जीवोंकी जो एकमात्र उपाय स्वरूपा हैं ।

५४३ योगिनां समुपालम्भ्या ❀ भगवत्-प्राप्ति चाहने वाले चेतनोंको जिनकी कृपाका आश्रय लेना नितान्त आवश्यक है ।

५४४ योगिराजप्रियात्मजा ❀ जो योगिराज श्रीमिथिलेशजी महाराज की प्राणप्यारी पुत्री हैं ॥ ९६ ॥

रक्तोत्पललसद्धस्ता रघुनन्दनवल्लभा ।
रघुनाथस्वभावज्ञा रघुवीरसुखेरता ॥६७॥

५४५ रक्तोत्पललसद्धस्ता ❀ जिनके हस्तारविन्दमें लालकमल सुशोभित है अर्थात् जो प्रफुल्लित कमल को अपने हस्त कमलमें लेकर, उसीके समान प्रत्येक अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितिमें भक्तोंको, खिले रहनेका ही मौन–उपदेश प्रदान कर रही हैं ।

५४६ रघुनन्दनवल्लभा ❀ जो रघुबंशियों को वात्सल्य जनित विशेष आनन्द प्रदान करने वाले प्राणप्यारे श्रीराघवेन्द्र सरकार की प्राणप्रियतमा हैं ।

५४७ रघुनाथस्वभावज्ञा ❀ जो समस्त जीवोंके स्वामी श्रीरामभद्र जूके स्वभाव को भली भाँति जानती हैं ।

५४८ रघुबीरसुखेरता ❀ जो प्राणप्यारे रघुकुलवीर श्रीरामभद्र जूको सुख पहुँचाने में सदैव संलग्न रहती हैं ॥९७॥

रतिसौन्दर्यदर्पघ्नी रतीशेहाहरस्मृतिः ।
रबिमण्डलध्यस्था रबिवंशेन्दुहृत्स्थिता ॥९८॥

५४९ रतिसौन्दर्यदर्पघ्नी ❀ जो अपने सौन्दर्यविन्दुसे रतिके महान् सुन्दरता-जनित अभिमानको दूर करती हैं ।

५५० रतीशेहाहरस्मृतिः ❀ जिनके स्मरण मात्रसे कामचेष्टा लुट जाती है ।

५५१ रबिमण्डलमध्यस्था ❀ जो सूर्यमण्डलमें भगवान् श्रीरामजीके सहित विराज रही हैं ।

५५२ रबिवंशेन्दुहृत्थिता ❀ जो सूर्यवंश रूपी चकोरको पूर्णचन्द्रके समान परमआह्लादित करने वाले प्रभु श्रीरामजीके हृदयकमलमें विराज रही हैं ॥९८॥

रसज्ञा रसभावज्ञा रसानन्दविवर्धिनी ।
रमणीयगुणग्राता रमाराध्या रमालया ॥९९॥

५५३ रसज्ञा ❀ जो सभी रसोंकी पूर्ण जानकारी रखती हैं अथवा सभी भक्त अपनी-अपनी इच्छा के अनुसार अनेक प्रकारसे जिसका आस्वादन करते हैं, उस रस (सच्चिदानन्दघन ब्रह्म) को जो हर प्रकारसे जानती हैं ।

५५४ रसभावज्ञा ❀ जो रसरूप भगवान श्रीरामजीकी (सभी चेष्टाओंके) भावोंका तात्पर्य जानती है ।

५५५ रसानन्दविवर्द्धिनी ❀ जो अपने श्रीचरणस्पर्श, बाललीला, तथा क्षमादि लोकोत्तर गुणोंके द्वारा पृथ्वीके आनन्दको बढ़ाती रहती हैं ।

५५६ रमणीयगुणग्रामा ❀ जिनके सभी गुण समूह अत्यन्त मनोहर हैं ।

५५७ रमाराध्या ❀ श्रीलक्ष्मीजीकोभी जिनकी उपासना करना कर्त्तव्य है ।

५५८ रमालया ❀ जिनमें अनन्त ब्रह्माण्डोंकी सभी लक्ष्मियाँ निवास करती हैं ॥९९॥

रम्यरम्यनिधी रम्याशेषा रसमयाकृतिः ।
रसापुत्री रसासक्ता रसिकानां परागतिः ॥१००॥

५५९ रम्यरम्यनिधिः ❀ जो मनोहरसे मनोहर, सुन्दरसे सुन्दर शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध आदि की भण्डार हैं।

५६० रम्याशेषा ❀ जिनका नाम, रूप, लीला, धाम तथा शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध सब कुछ मनोहर है।

५६१ रसमयाकृतिः ❀ जिनका आकार रस (सच्चिदानन्दघन ब्रह्म) मय है अथवा सभी रसोंकी जो साकार विग्रह हैं।

५६२ रसापुत्री ❀ जो पृथिवीसे प्रकट होनेके नाते उसकी पुत्री कही जाती हैं।

५६३ रसासक्ता ❀ जो रसस्वरूप भगवान् श्रीरामजीमें परम आसक्त हैं अथवा जिनके प्रति भगवान् श्रीराघवेन्द्र सरकार भी परम आसक्ति रखते हैं।

४६४ रसिकानां परागतिः ❀ जो रसस्वरूप भगवान् श्रीरामजीके उपासकोंकी परम आधार तथा रक्षा करने वाली हैं ॥१००।

रसिकेन्द्रप्रिया राकाधिपपुञ्जनिभानना ।
राघवेन्द्रप्रभावज्ञा राधा रासरसेश्वरी ॥१०१॥

५६५ रसिकेन्द्रप्रिया ❀ जो भक्तोंको अपना स्वामी मानने वाले भगवान् श्रीरामजीकी प्राणप्यारी हैं

५६६ राकाधिपपुञ्जनिभानना ❀ जिनका श्रीमुखारविन्द शरद् ऋतुके पूर्णचन्द्रमाके समान शीतल प्रकाशमय, परम आह्लादकारी है।

५६७ राघवेन्द्रप्रभावज्ञा ❀ जो श्रीराघवेन्द्र सरकारकी महिमाको हर प्रकारसे जानती हैं।

५६८ राधा ❀ जो आश्रितोंके लौकिक तथा पारलौकिक सभी प्रकारके हितकर मनोरथोंकी पूर्त्ति करती हैं।

५६९ रासरसेश्वरी ❀ जो भगवान् श्रीरामजीके आनन्द-भण्डारकी स्वामिनी हैं अर्थात् जिनकी कृपासे ही प्राणियोंको भगवत्-चिन्त, मनन, श्रवण, कीर्त्तन, सेवादि-जनित आनन्दकी अनुभूति प्राप्त होती है ॥१०१॥

रासलीलाकलापज्ञा रासानन्दप्रदायिनी ।
रासेशी रूपदाक्षिण्यमण्डिता लक्ष्मणार्चिता ॥१०२॥

५७० रासलीलाकलापज्ञा ❀ जो भगवान् श्रीरामजीकी लीलाओं का यथार्थ तात्पर्य जानती हैं।
५७१ रासानन्दप्रदायिनी ❀ जो अपने आश्रितोंको रसस्वरूप भगवान् श्रीरामजीके दिव्य धाम-निवासी भक्तोंका आनन्द प्रदान करती हैं।
५७२ रासेशी ❀ जो वात्सल्यभाव की पराकाष्ठाके कारण भक्तोंके शासनमें रहती हैं।
५७३ रूपदाक्षिण्यमण्डिता ❀ जो निरतिशय (सबसे बढ़कर) सौन्दर्य तथा चतुराईसे विभूषित हैं।
५७४ लक्ष्मणार्च्चिता ❀ जो यूथेश्वरी सखी श्रीलक्ष्मणाजीसे पूजित हैं अथवा श्रीलखनलालजी जिनका नित्यपूजन करते हैं ॥१०२॥

ललनादर्शचरिता ललनाधर्मदीपिका।
ललामैकनामरूपलीलाधामगुणादिका ॥१०३॥

५७५ ललनादर्शचरिता ❀ जिनके चरित पतिव्रता स्त्रियोंके लिये आदर्श रूप हैं।
५७६ ललनाधर्मदीपिका ❀ जो स्त्रियोंके (पातिव्रत्य) धर्मपर दीपकके समान प्रकाश डालने वाली हैं।
५७७ ललामैकनामरूपलीलाधामगुणादिका ❀ जिनका नाम रूप, लीला, धाम, गुण समूहादि सब कुछ निरुपम सुन्दर है ॥१०३।

ललिताम्भोजपत्राक्षी ललिताशेषचेष्टिता।
लावण्यजितपाथोधिर्लाक्ष्मीर्लीनरक्षिका ॥१०४॥

५७८ ललिताम्भोजपत्राक्षी ❀ कमलदलके समान जिनके विशालनेत्र हैं।
५७९ ललिताशेषचेष्टिता ❀ जिनकी सभी चेष्टायें अत्यन्त मनोहर हैं।
५८० लावण्यजितपाथोधिः ❀ जो अपनी सुन्दरताकी अगाधतासे समुद्रको जीत लिये हैं।
५८१ लाक्ष्मीः ❀ जो समस्त ऐश्वर्यशाली भगवान् श्रीरामजीकी लक्ष्मी स्वरूपा हैं।
५८२ लीनरक्षिका ❀ जो भावमग्न-भक्तोंकी स्वयं रक्षा करती हैं ॥१०४॥

लीलाभूमाधवप्रेष्ठा लोककल्याणतत्परा।
लोकत्रयमहाराज्ञीलोकमृग्याङ्घ्रिपङ्कजा ॥१०५॥

५८३ लीलाभूमाधवप्रेष्ठा ❀ जो श्री, भू, लीलादेवीके पति भगवान् श्रीरामजीकी परमप्यारी हैं।
५८४ लोककल्याणतत्परा ❀ जो प्राणियोंके वास्तविक कल्याण साधनमें तत्पर रहती हैं।
५८५ लोकत्रयमहाराज्ञी ❀ जो तीनों लोकोंकी महारानी हैं।

५८६ लोकमृग्याङ्घ्रिपङ्कजा ❀ ब्रह्मा, विष्णु, महेशोंको भी जिनके श्रीचरणकमलोंकी खोज करना आवश्यक कर्त्तव्य है ॥१०५॥

लोकज्ञा लोकशरणं लोकपावनपावनी ।
लोकप्रगीतमहिमा लोकानुत्तमदर्शना ॥१०६॥

५८७ लोकज्ञा ❀ जो तीनों लोकोंका ज्ञान रखती हैं।

५८८ लोकशरणम् ❀ जो सभीकी वास्तविक रक्षा करने वाली हैं।

५८९ लोकपावनपावनी ❀ जो लोकको पवित्र करने वाले तीर्थोंको भी अपने भक्तोंके चरणस्पर्शसे पवित्र बनाने वाली हैं।

५९० लोकप्रगीतमहिमा ❀ ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी उत्कर्षता पूर्वक जिनकी महिमाका गान करते हैं।

५९१ लोकानुत्तमदर्शना ❀ प्राणियोंके लिये जिनका दर्शन सबसे बढ़कर है ॥१०६॥

लोकालयकलापाम्बा लोकोत्पत्यादिकारिणी ।
लोकेशकान्ता लोकेशी लोकैकप्रियकाङ्क्षिणी ॥१०७

५९२ लोकालयकलापाम्बा ❀ जो ब्रह्माण्ड-समूहोंकी माता हैं।

५९३ लोकोत्पत्यादिकारिणी ❀ जो लोककी उत्पत्ति, पालन तथा संहार करने वाली हैं।

५९४ लोकेशकान्ता ❀ जो ब्रह्मा, विष्णु, महेशके नियामक भगवान् श्रीरामजीकी प्राणप्यारी हैं।

५९५ लोकेशी ❀ जो ब्रह्मा, विष्णु, महेश तथा तीनों लोकों पर शासन करने वाली हैं।

५९६ लोकैकप्रियकाङ्क्षिणी ❀ जो प्राणियोंका सबसे बढ़कर भला चाहती हैं ॥१०७॥

लोचनादीन्द्रियव्रातशक्तिसञ्चारकारिणी ।
लोपयित्री लोभहरा लोमशादिकभाविता ॥१०८॥

५९७ लोचनादीन्द्रियव्रातशक्तिसञ्चारकारिणी ❀ जो नेत्रादि सभी इन्द्रियोंमें शक्तिका सञ्चार करती हैं अर्थात् जिनके शक्तिसञ्चार करनेसे ही नेत्रोंमें देखनेकी श्रवणोंमें सुननेकी, मनमें मनन करनेकी, बुद्धिमें निश्चय करनेकी शक्ति प्राप्त होती है, जिस इन्द्रियमें शक्तिसञ्चार नहीं किया जाता या बन्द कर दिया जाता है, वह व्यर्थ ही रहती है।

५९८ लोपयित्री ❀ जो आश्रितोंके सभी पाप और दुःखों को लोप (भायब) कर देती हैं।

५९९ लोभहरा ❀ जो भक्तोंके हृदयसे सार्वभौम (चक्रवर्ती) इन्द्र, ब्रह्मा आदि के पद का तथा अष्ट सिद्धि, नव निधियों की प्राप्ति का भी लोभ हरण कर लेती हैं।

६०० लोमशादिकभाविता ❀ चिरञ्जीवी श्रीलोमशजी आदि महर्षि गण जिनका ध्यान करते हैं ॥१०८॥

वत्सरा वत्सलोत्कृष्टा वदान्या वनजेक्षणा ।
वनमालाञ्चिता वभ्री वरणीयपदाश्रया ॥१०९॥

६०१ वत्सरा ❀ जिनमें सभी चर-अचर प्राणियों का निवास है ।

६०२ वत्सलोत्कृष्टा ❀ जो अपराधोंको हृदयमें न रखकर, केवल हितचाहने वाली शक्तियोंमें, सबसे बढ़कर हैं ।

६०३ बदान्या, ❀ जिनके समान कोई उदार नहीं है ।

६०४ वनजेक्षणा ❀ जिनके नेत्र कमल-दलके समान विशाल तथा मनोहर हैं ।

६०५ वनमालाञ्चिता ❀ जो वनके पुष्पोंसे गुथी हुई मालाको धारण करती हैं ।

६०६ वभ्री ❀ जो समस्त जीवों का भरण (पालन) करने वाली हैं ।

६०७ वरणीयपदाश्रया ❀ जिनके श्रीचरणारविन्दका आधार ग्रहण करना ही समस्त देह धारियों के लिये कर्त्तव्य है ॥१०९॥

वरदाधिराजकान्ता वरदा वरवर्णिनी ।
वरबोधा वरारोहाभूषिता वर्णनातिगा ॥११०॥

६०८ वरदाधिराजकान्ता ❀ जो अभीष्ट प्रदायक सभी देवोंके सम्राट् (शाहंशाह) की पटरानी हैं ।

६०९ जो ❀ आश्रितोंके सभी अभीष्टको प्रदान करती हैं ।

६१० वरवर्णिनी ❀ जो स्त्रियोंमें लक्ष्मी स्वरूपा हैं ।

६११ वरबोधा ❀ जिनका ज्ञान ही सर्वोत्कृष्ट ज्ञान है ।

६१२ वरारोहाभूषिता ❀ यूथेश्वरी वरारोहाजीने जिनको शृङ्गार धारण कराया है ।

६१३ वर्णनातिगा ❀ जो वर्णनसे परे हैं अर्थात् चाहे कितना भी वर्णन किया जाय पर जो उससे भी परे ही रहती हैं ॥११०॥

वर्णभावा वर्णश्रेष्ठा वर्णाश्रमविधायिनी ।
वर्ण्यानवद्यचित्केलिर्वर्द्धिनी सुखसम्पदाम् ॥१११॥

६१४ वर्णभावा ❀ जो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि चारो वर्णोंकी करणस्वरूपा हैं ।

६१५ वर्णश्रेष्ठा ❀ जो चारो वर्णोंमें श्रेष्ठ ब्राह्मण (ब्रह्मोपासक) स्वरूपा है ।

६१६ वर्णाश्रमविधायिनी ❀ जिन्होंने लोक व्यवहारकी सुलभताके लिये ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य शूद्र इन चार आश्रमोंको बनाया है ।

६१७ वर्ण्यानवद्यचित्केलिः ❀ जिनकी प्रशंसा योग्य, तथा सभी दोषोंसे रहित चित् (ब्राह्मण स्वरूप) लीला वर्णन करने योग्य हैं ।

६१८ वर्धिनी सुखसम्पदाम् ❀ जो भक्तोंके वास्तविक सुख-सम्पत्तिकी वृद्धि करती रहती हैं १११

वशकृद्वशगश्रेष्ठा वश्या वसुप्रदायिनी ।
बहुश्रुतो वाच्यकीर्त्तिर्वारिजासनवन्दिता ॥११२॥

६१९ वशकृत् ❀ जो अपने अगाध प्रेम तथा अनुपम निर्हेतुकी कृपादि दिव्यगुणोंके द्वारा प्यारे श्रीरामजीको वशमें कर चुकी हैं ।

६२० वशगश्रेष्ठा ❀ जो निष्कपट भावके द्वारा भक्तोंके वशमें हो जाती हैं ।

६२१ वश्या ❀ जिन्हें केवल भावसे ही वशमें किया जा सकता है ।

६२२ वसुप्रदायिनी ❀ जो भक्तोंको सब प्रकारकी हित कर सम्पत्ति प्रदान करती हैं ।

६२३ वहुश्रुता ❀ जो अपनी स्वाभाविक महिमाके कारण पूर्ण विख्यात हैं ।

६२४ वाच्यकीर्त्तिः ❀ जिनका सुन्दर यश वर्णन ही करने योग्य है ।

६२५ वारिजासनवन्दिता ❀ जिन्हें श्रीब्रह्माजी भी प्रणाम करते हैं ॥११२॥

विकल्मषा विद्वरात्मा विगतेहा विजेतृका ।
विज्ञानदात्री विज्ञानमयाप्राकृतविग्रहा ॥११३॥

६२६ विकल्मषा ❀ जो सब प्रकारके पापोंसे अछूती हैं ।

६२७ विद्वरात्मा ❀ जिनकी बुद्धि कभी भी क्षीण नहीं होती ।

६२८ विगतेहा ❀ पूर्ण काम होनेके कारण जो सब प्रकारकी चेष्टाओंसे रहित हैं ।

६२९ विजेतृका ❀ जिन्हें अपने बल-बुद्धिसे कोई जीत नहीं सकता ।

६३० विज्ञानदात्री ❀ जो आश्रित-चेतनोंको भगवत्-सम्बन्धी विशिष्ट ज्ञान प्रदान करती हैं ।

६३१ विज्ञानमयाप्राकृतविग्रहा ❀ जिनका सुन्दरस्वरूप पञ्चभूतोंसे न बना हुआ (दिव्य) विज्ञान-मय है ॥११३॥

विज्ञा विज्वरा विदिता विदिशा विधयाऽन्विता ।
विद्यावत्पुङ्गवोत्कृष्टा विधात्री विधिकेतना ॥११४॥

६३२ विज्ञा ❀ जो समस्त प्राणियोंके मन, बुद्धि, चित्तकी क्रियाओंका भी विशेष ज्ञान रखती हैं।

६३३ विज्वरा ❀ जो दैहिक, दैविक तथा मानसिक ज्वरोंसे परे हैं।

६३४ विदिता ❀ जो अपने शक्ति, स्वरूप कीर्त्तिके द्वारा सभीको ज्ञात हैं।

६३५ विदिशा ❀ जो प्राणियोंको उनके कर्मानुसार नाना प्रकारका फल देनेवाली हैं।

६३६ विद्ययाऽन्विता ❀ जो ब्रह्म विद्यासे परिपूर्ण हैं।

६३७ विद्यावत्पुङ्गवोत्कृष्टा ❀ जो श्रेष्ठ विद्वानोंमें भी सबसे बढ़कर हैं।

६३८ विधात्री ❀ जो सम्पूर्ण सृष्टिका नियम बनाने वाली हैं।

६३९ विधिकेतना ❀ जो समस्त हितकर विधियोंमें और सम्पूर्ण विधियाँ जिनमें निवास-करती हैं॥ ११४॥

विधिदुर्ज्ञेयमहिमा विधुपूर्णमुखाम्बुजा ।
विनयार्हा विनीतात्मा विपक्वात्मा विपद्धरा ॥११५॥

६४० विधिदुर्ज्ञेयमहिमा ❀ जिनकी महिमाको चारो वेदोंके द्वारा भी समझना कठिन है अथवा जगत्-पितमह ब्रह्माको भी जिनकी महिमाका ज्ञान प्राप्त होना कठिन है।

६४१ विधुपूर्णमुखाम्बुजा ❀ जिनका श्रीमुखारविन्द पूर्ण चन्द्रमाके समान, हृदयताप-निवारक, परम आह्लादकारी है।

६४२ विनयार्हा ❀ जो सभी देव, मुनि, सिद्ध तथा साधकोंके द्वारा विनय ही करने योग्य हैं।

६४३ विनीतात्मा ❀ जिनका स्वभाव बहुत ही नम्र है।

६४४ विपक्वात्मा ❀ जिनका ज्ञान पूर्ण परिपक्व है।

६४५ विपद्धरा ❀ जो आश्रितोंकी सम्पूर्ण आपत्तियोंको हरण कर लेती हैं ॥११५॥

बिमत्सरा विमलार्च्या विमुक्तात्मा विमुक्तिदा ।
विमोहिनी वियन्मूर्त्तिर्विरतिप्रदचिन्तना ॥११६॥

६४६ विमत्सरा ❀ जिन्हें किसीकी उन्नतिको देखकर ईर्ष्या (डाह) नहीं होती।

६४७ विमलार्च्या ❀ जो यूथेश्वरी सखी श्रीविमलाजीके द्वारा पूजने योग्य हैं।

६४८ विमुक्तात्मा जिनका हृदय शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध आदि पञ्चविषयोंसे रहित है।

६४९ विमुक्तिदा ❀ जो अपने आश्रितोंको उपर्युक्त विषयोंसे निवृत्ति प्रदान करती हैं।

६५० विमोहिनी ❀ जो अनायास ही अपने शील-स्वभावसे चेतनोंको पूर्ण मुग्ध कर लेती हैं।

६५१ वियन्मूर्त्तिः ❀ जिनका मङ्गलमय विग्रह आकाशतत्त्वके समान सर्वत्र व्यापक है।
६५२ विरतिप्रदचिन्तना ❀ जिनका चिन्तन (स्मरण) वैराग्यको प्रदान करता है ॥११६॥

विरामा विलसत्क्षान्तिर्विबुधर्षिगणार्चिता।
विवेकपरमाधारा विवेकवदुपासिता ॥११७॥

६५३ विरामा ❀ जो समस्त प्राणियोंका विश्रामस्थान हैं अर्थात् जिनको प्राप्त करके प्राणी सब प्रकारसे निश्चिन्त हो जाता है और जब तक नहीं प्राप्त होता भटकता ही रहता है।
६५४ विलसत्क्षान्तिः ❀ जिनकी क्षमा समस्त ब्रह्माण्डमें लहलहा रही है।
६५५ विबुधर्षिगणार्चिमा ❀ देवता तथा ऋषि वृन्द जिनकी पूजा करते हैं।
६५६ विवेकपरमाधारा ❀ जो ज्ञानकी सबसे श्रेष्ठ (मुख्य) आधारस्वरूपा हैं।
६५७ विवेकवदुपासिता ❀ वास्तविक ज्ञानी जिनकी उपासना करते हैं ॥११७॥

विशदश्लोकसम्पूज्या विशालेन्दीवरेक्षणा।
विशिष्टात्मा विशेषज्ञा विश्वलीलाप्रसारिणी ॥११८॥

६५८ विशदश्लोकसम्पूज्या ❀ जो पवित्र यश वाले भाग्यवानोंके द्वारा सब प्रकारसे पूजनेयोग्य हैं।
६५९ विशालेन्दीवरेक्षणा ❀ श्याम कमल दलके समान जिनके विशाल एवं मनोहर नेत्र हैं।
६६० विशिष्टात्मा ❀ जिनके मन बुद्धि और चित्तमें एक भगवान् श्रीरामभद्रजू ही सदा निवास करते हैं अथवा जिनकी बुद्धि सबसे बढ़कर है।
६६१ विशेषज्ञा ❀ जिनका ज्ञान सबसे बढ़कर है।
६६२ विश्वलीलाप्रसारिणी ❀ जो विश्वरूपी लीलाको फैलाने वाली हैं ॥११८॥

विश्वतः पाणिपादास्या विश्वमात्रैकधारिणी।
विश्वभरणी विश्वात्मा विश्वालयब्रजेश्वरी ॥११९॥

६६३ विश्वतः पाणिपादास्या ❀ जिनके हाथ, पैर, मुख श्रवण आदि इन्द्रियाँ चारो ओर हैं अर्थात् जो सब ओर भक्तोंकी रक्षा, भरण-पोषण करती हैं, उनके भक्ति-पूर्वक समर्पण किये हुये पदार्थोंको सभी ओरसे ग्रहण करतीहैं तथा उनकी भाव पूर्त्तिके लिये पूजा तथा प्रणामादि स्वीकार करती हैं, उनकी की हुई प्रार्थनाको जो सभी ओरसे श्रवण करती है।
६६४ विश्वमात्रैकधारिणी ❀ जो शेष रूपसे विश्वमात्रको सबसे मुख्य धारण करने वाली हैं।
६६५ विश्वभरणी ❀ जो विश्वके समस्त प्राणियोंका पालन करती हैं।

६६६ विश्वात्मा ❀ जो समस्त विश्वकी आत्मा हैं अथवा सारा विश्वही जिनका शरीर है।

६६७ विश्वालयब्रजेश्वरी ❀ जो ब्रह्माण्ड समूहों पर शासन करने वाली हैं ॥११६॥

विश्वासरूपा विश्वेषां साक्षिणी विस्तृतोत्तमा ।
वीणावाणी वीतभ्रान्ति वीतरागस्मयादिका ॥१२०॥

६६८ विश्वासरूपा ❀ जो विश्वास स्वरूपसे प्राणियोंके हृदयमें प्रकट होकर पूर्ण निर्भयता प्रदान करती हैं।

६६९ विश्वेषां साक्षिणी ❀ जो समस्त प्राणियोंके कायिक, वाचिक, मानसिक कर्मोंकी साक्षिणी (गवाह) स्वरूपा है।

६७० विस्तृतोत्तमा ❀ जो सभी आकाश, वायु आदि व्यापक तत्वोंसे उत्तम है।

६७१ वीणावाणी ❀ जिनकी बोली वीणाके शब्दके समान सुमधुर है।

६७२ वीतभ्रान्तिः ❀ जिन्हें कभी भी किसी प्रकार का धोखा नहीं होता।

६७३ वीतरागस्मयादिका ❀ जिनमें किसी प्रकारकी आसक्ति और अभिमान आदि कोई भी विकार नहीं हैं ॥१२०॥

वीतशङ्कसमाराध्या वीतसम्पूर्णसाध्वसा ।
बुधाराध्याङ्घ्रिकमला वृषपा वेदकारणम् ॥१२१॥

६७४ वीतशङ्कसमाराध्या ❀ जो अपने वास्तविक स्वरूपका ज्ञान हो जानेके कारण समस्त शङ्काओं से रहित साधकों द्वारा ही भली भाँति सेवित होनेको सुलभ हैं।

६७५ वीतसम्पूर्णसाध्वसा ❀ सब विकारोंसे रहित और पूर्णकाम होनेके कारण जिन्हें किसीका किसी प्रकारका भी कोई भय नहीं है।

६७६ बुधाराध्याङ्घ्रिकमला ❀ आत्मज्ञानियोंके लिये जिनके श्रीचरण-कमल ही एक उपासनाके योग्य हैं।

६७७ वृषपा ❀ जो सनातन धर्म की रक्षा करने वाली हैं।

६७८ वेदकारणम् ❀ जो चारो वेदोंकी कारण स्वरूपा है ॥१२१॥

वेदगा वेदनिःश्वासा वेदप्रणुतवैभवा ।
वेदप्रतिपाद्यतत्वा वेदवेदान्तकोविदा ॥१२२॥

६७९ वेदगा ❀ जो सम्पूर्ण वेदोंमें व्याप्त हैं अथवा जो सामदेव का गान करने वाली हैं।

६८० वेदनिःश्वासा ❀ वेद जिनके श्वास स्वरूप हैं।

६८१ वेदप्रणुतवैभवा ❀ वेद भगवान् जिनके ऐश्वर्य की स्तुति करते हैं।

६८२ वेदप्रतिपाद्यतत्वा ❀ जिनके तत्वको वर्णन करनेमें कुछ वेद भगवान् ही समर्थ हैं अथवा वेदों के वर्णन करने योग्य एक जिनका परत्व ही है।

६८३ वेदवेदान्तकोविदा ❀ जो वेद और वेदान्त (उपनिषदों) के तात्पर्य को भली भाँति जानती हैं ॥१२२॥

वेदरक्षाविधानज्ञा वेदसारमयाकृतिः।
वेदान्तवेद्या वेदान्ता वैदेही वैभवार्णवा ॥१२३॥

६८४ वेदरक्षाविधानज्ञा ❀ जो वेदों की रक्षा का उपाय स्वयं जानती हैं।

६८५ वेदसारमयाकृतिः ❀ जो वेदसार (ब्रह्मविद्या) स्वरूपा है।

६८६ वेदान्तवेद्या ❀ जिन्हें वेदान्त के द्वारा ही कुछ समझा जा सकता है।

६८७ वेदान्ता ❀ जो वेदान्त स्वरूपा हैं।

६८८ वैदेही ❀ ब्रह्मलीनताके कारण देह की सुधि बुधि रहित श्रीविदेह महाराज के बंशमें जिनका प्राकट्य है।

६८९ वैभवार्णवा ❀ जिनका ऐश्वर्य समुद्रके समान अथाह है ॥१२३॥

वङ्कचिकुरा वङ्कभ्रूर्वङ्काकर्षणवीक्षणा।
शक्तिव्रजेश्वरी शक्तिः शतमूर्त्तिः शतोदिता ॥१२४॥

६९० वङ्कचिकुरा ❀ जिनके मनोहर घुंघुराले केश हैं।

६९१ वङ्कभ्रूः ❀ जिनकी भौंहें काम धनुषके समान मनोहर और टेढ़ी हैं।

६९२ वङ्काकर्षणवीक्षणा ❀ जिनकी कृपापूर्ण कटाक्ष सभी प्राणियोंके हृदयको सहजहीमें आकर्षित कर लेती है।

६९३ शक्तिव्रजेश्वरी ❀ जो अपने इच्छानुसार शक्ति-समूहोंको विभिन्न प्रकारके कर्त्तव्योंमें नियुक्त करने वाली हैं।

६९४ शक्तिः ❀ जो ब्रह्मकी पूर्णशक्ति-स्वरूपा हैं।

६९५ शतमूर्त्तिः ❀ जिनके स्वरूप हजारों हैं अर्थात् जो चर-अचरके सम्पूर्ण आकार वाली हैं।

६९६ शतोदिता ❀ असङ्ख्यों भक्त जिनकी महिमाका निरन्तर वर्णन करते हैं ॥१२४॥

शब्दब्रह्मातिगा शब्दविग्रहा शमदायिनी ।
शमिताश्रितसंक्लेशा शमिभक्त्याशुतोषिता ॥१२५॥

६९७ शब्दब्रह्मातिगा ❀ जो वेदोंसे परे हैं अर्थात् जिनका यथार्थ वर्णन भगवान् वेद भी नहीं कर सकते ।

६९८ शब्दविग्रहा ❀ जो सम्पूर्ण शब्द स्वरूपा हैं ।

६९९ शमदायिनी ❀ जो आश्रितोंके मनको शान्ति (स्थिरता) प्रदान करने वाली हैं ।

७०० शमिताश्रितसंक्लेशा ❀ जो आश्रितोंके समस्त कष्टोंको निवृत्त कर देती हैं ।

७०१ शमिभक्त्याशुतोषिता ❀ जो एकाग्र चित्तवाले भक्तोंकी आसक्तिसे शीघ्र ही प्रसन्न हो जाती हैं ॥१२५॥

शम्पादामोल्लसत्कान्तिः शम्प्रदध्यानसंस्तवा ।
शम्मयाशेषकैङ्कर्य्या शरणं सर्वदेहिनाम् ॥१२६॥

७०२ शम्पादामोल्लसत्कान्तिः ❀ बिजुलीकी मालाके समान चमकती हुई जिनके श्रीअङ्गकी कान्ति है ।

७०३ शम्प्रदध्यानसंस्तवा ❀ जिनका ध्यान तथा स्तोत्र दोनों ही परम मङ्गलदायी हैं ।

७०४ शम्मयाशेषकैङ्कर्या ❀ जिनकी सभी प्रकारकी सेवा मङ्गलमयी है ।

७०५ शरणं सर्वदेहिनाम् ❀ जो समस्त देहधारियोंकी रक्षा करनेको समर्थ हैं तथा जो सबकी मुख्य निवास स्थान हैं ॥१२६॥

शरणागतसंत्रात्री शरण्यैकाऽसुधारिणाम् ।
शवरीमानदप्रेष्ठा शान्ता शान्तिप्रदायिनी ॥१२७॥

७०६ शरणागतसंत्रात्री ❀ जो शरणमें आये हुये प्राणियोंकी पूर्ण रक्षा करने वाली हैं ।

७०७ शरण्यैकाऽसुधारिणाम् ❀ जो प्राणियोंकी सबसे बढ़कर रक्षा करनेमें पूर्ण समर्थ हैं ।

७०८ शवरीमानदप्रेष्ठा ❀ जो शवरी मइयाको प्रतिष्ठा देने वाले प्रभु श्रीरामजीकी परम-प्यारी हैं ।

७०९ शान्ता ❀ जा परम शान्ति-स्वरूपा हैं ।

७१० शान्तिप्रदायिनी ❀ जो उपासकोंको निष्कामता प्रदान करके परम शान्ति प्रदान करती हैं१२७

शाश्वतचिन्तनीयाङ्घ्रिकमला शाश्वतस्थिरा ।
शाश्वती शासिकोत्कृष्टा शिरोधार्यकराम्बुजा ॥१२८॥

७११ शाश्वतचिन्तनीयाङ्घ्रिकमला ❀ प्राणियोंको जिनके श्रीचरणकमलोंका चिन्तन निरन्तर ही करना चाहिये ।

७१२ शाश्वतस्थिरा ❀ जो अपने वास्तविक (ब्रह्म) स्वरूपसे सदा ही स्थिर रहती हैं अर्थात् कभी परिवर्त्तनको नहीं प्राप्त होतीं ।

७१३ शाश्वती ❀ जो सदा ही एकरस रहने वाली हैं ।

७१४ शासिकोत्कृष्टा ❀ जो शासन करने वाली सभी शक्तियोंमें उत्तम हैं ।

७१५ शिरोधार्यकराम्बुजा ❀ मनुष्य जीवनकी सफलताके लिये, जिनके हस्त कमल शिर पर धारण करनेका सौभाग्य प्राप्त कर लेना परम आवश्यक कर्त्तव्य है ॥१२८॥

शिशिरा शीलसम्पन्ना शुचिगम्याङ्घ्रिचिन्तना ।
शुचिप्राप्यपदासक्तिः शुद्धान्तःकरणालया ॥१२९॥

७१६ शिशिरा ❀ जो भक्तोंके दैहिक, दैविक तथा मानसिक तापोंको हरण करनेके लिये शिशिर ऋतु (माघ-फाल्गुन) के समान हैं ।

७१७ शीलसम्पन्ना ❀ जिनका स्वभाव अत्यन्त सुन्दर है ।

७१८ शुचिगम्याङ्घ्रिचिन्तना ❀ जिनके श्रीचरणकमलोंका चिन्तन विकार रहित साधकोंके लिये ही सुलभ हैं ।

७१९ शुचिप्राप्यपदासक्तिः ❀ जिनके श्रीचरण-कमलोंकी आसक्ति विकार रहित साधकको ही प्राप्त होती है ।

७२० शुद्धान्तःकरणालया ❀ जो शुद्ध (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्धकी आसक्ति रूपी मलिनतासे रहित भाग्यशालियों) के ही अन्तः करण (मन, बुद्धि, चित्त, अहङ्कार) में सदा निवास करती हैं ॥१२९॥

शुद्धा शुद्धिप्रदध्याना शूलत्रयनिवारिणी ।
शैलराजसुतादीष्टा शोभासागरसत्कृता ॥१३०॥

७२१ शुद्धा ❀ जो माया (अज्ञान) रूपी मलसे रहित हैं ।

७२२ शुद्धिप्रदध्याना ❀ जिनका ध्यान हृदयमें निर्विकारिता अर्थात् शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्धमें वैराग्य प्रदान करता है ।

७२३ शूलत्रयनिवारिणी ❀ जो दैहिक दैविक तथा मानसिक तीनों प्रकारकी शूल (पीडाओंको) भगा देती हैं।

७२४ शैलराजसुतादीष्टा ❀ जो भगवती श्रीपार्वतीजी आदि महाशक्तियोंकी इष्ट देवता हैं।

७२५ शोभासागरसत्कृता ❀ श्रीअङ्गकी असीम, अकथनीय सुन्दरतासे मुग्ध हो भगवान् श्रीरामजी भी जिनका पूर्ण सत्कार करते हैं ॥१३०॥

शौर्यपाथोनिधिः श्यामा श्रयणीयपदाम्बुजा ।
श्रवणीययशोगाथा श्रीकरी श्रीप्रदायिनी ॥१३१॥

७२६ शौर्यपाथोनिधिः ❀ जिनका बल-पराक्रम समुद्रके समान अथाह है।

७२७ श्यामा ❀ जो भक्तोंके सुखार्थ सदैव बारह वर्षकी अवस्थामें रहती हैं।

७२८ श्रयणीयपदाम्बुजा ❀ अपने पूर्ण कल्याण के लिये जिनके श्रीचरणकमलों का सहारा लेना ही प्राणियों का परम कर्त्तव्य है।

७२९ श्रवणीययशोगाथा ❀ इष्ट-प्राप्तिके निमित्त त्याग का आदर्श लेनेके लिये जिनके चरित श्रवण करने योग्य हैं।

७३० श्रीकरी ❀ जो भक्तों की समृद्धि (उन्नति) करने वाली हैं।

७३१ श्रीप्रदायिनी ❀ जो उपासकों को सात्विक सम्पत्ति प्रदान करती हैं ॥१३१॥

श्रीमदुत्तंसमहिता श्रीमयी श्रीमहानिधिः ।
श्रीलक्ष्म्यादिभिः सेव्या श्रीवासा श्रीसमुद्भवा ॥१३२॥

७३२ श्रीमदुत्तंसमहिता ❀ जो ऐश्वर्य वानोंमें श्रेष्ठ ब्रह्मा, हरि, हरादिकोंके द्वारा पूजित हैं।

७३३ श्रीमयी ❀ जो सम्पूर्ण शोभा मयी हैं।

७३४ श्रीमहानिधिः ❀ जो राजसी सम्पत्तिकी सबसे बड़ी भण्डार हैं।

७३५ श्रीलक्ष्मादिभिः सेव्या ❀ श्रीलक्ष्मीजी आदि महाशक्तियोंको भी जिनकी उपासना कर्त्तव्य है।

७३६ श्रीवासा ❀ जिनमें सम्पूर्ण सुन्दरता निवास करती है।

७३७ श्रीसमुद्भवा ❀ जिनके अंशसे सम्पूर्ण शोभा, सम्पत्ति और गौरव आदिकी उत्पत्ति होती है ॥१३२॥

श्रीः श्रुतिगीतचरिता श्रुत्यन्तप्रतिपादिता ।
श्रेयोगुणेरणा श्रेयोनिधिः श्रेयोमयस्मृतिः ॥१३३॥

७३८ श्रीः ❋ जो ब्रह्मकी सम्पूर्ण श्री स्वरूपा हैं ।

७३९ श्रुतिगीतचरिता ❋ भगवान् वेद जिनके चरितोंका गान करते हैं ।

७४० श्रुत्यन्तप्रतिपादिता ❋ जिनके स्वरूपकी व्याख्या वेदान्तमें की गयी है ।

७४१ श्रेयोगुणेरणा ❋ जिनका गुण-गान मङ्गलमय है ।

७४२ श्रेयोनिधिः ❋ जो सम्पूर्ण कल्याण की भंडार हैं ।

७४३ श्रेयोमयस्मृतिः ❋ जिनका सुमिरण मङ्गलमय है ॥१३३॥

श्रौत्रियैकसमाराध्या श्लक्ष्णसूनृतभाषिणी ।
श्लाघनीयमहाकीर्त्तिः श्लीलचारित्र्यविश्रुता ॥१३४॥

७४४ श्रौत्रियैकसमाराध्या ❋ जो वेदका यथार्थ अर्थ समझने वाले विद्वानोंके लिये, सबसे बढ़कर उपासनाके योग्य हैं ।

७४५ श्लक्ष्णसूनृतभाषिणी ❋ जो मधुर और यथार्थ बोलती हैं ।

७४६ श्लाघनीयमहाकीर्त्तिः ❋ जिनकी कीर्त्ति सबसे अधिक प्रशंसाके योग्य है ।

७४७ श्लीलचारित्र्यविश्रुता ❋ जो अपने मङ्गलकारी चरितों से त्रिलोकीमें विख्यात हैं ॥१३४॥

श्लोकलोकार्चिताब्जाङ्घ्रिः श्वसनाधीशसत्कृता ।
श्वेतधामोल्लसद्वक्त्रा षट्चतुर्वस्विलोदिता ॥१३५॥

७४८ श्लोकलोकार्चिताब्जाङ्घ्रिः ❋ जिनके श्रीचरण-कमल पुण्यशाली लोगोंके द्वारा सदैव पूजित हैं ।

७४९ श्वसनाधीशसत्कृता ❋ जो उञ्चासों वायुओंके पति देवराज इन्द्रके द्वारा सत्कारको प्राप्त हैं ।

७५० श्वेतधामोल्लसद्वक्त्रा ❋ जिनका श्रीमुखारबिन्द चन्द्रमाके समान परमाह्लादकारी तथा मनोहर है ।

७५१ षट्चतुर्वस्विलोदिता ❋ जिनका वर्णन छः शास्त्र, चारो वेद और अठारह पुराणों द्वारा किया गया है ॥१३५॥

षडतीता षडाधारा षडर्द्धाचहृदिस्थिता ।
सखीमण्डलमध्यस्था सगुणा संचयोज्झिता ॥१३६॥

७५२ षडतीता ❋ जो षट् (काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर) विकारोंसे रहित हैं ।

७५३ षडाधारा ❀ जो सम्पूर्ण श्री, सम्पूर्ण ऐश्वर्य, सम्पूर्ण ज्ञान, सम्पूर्ण धर्म, सम्पूर्णयशको भली भाँति धारण करने वाली हैं।

७५४ षडर्द्धाचहृदिस्थिता ❀ जो त्रिनेत्रधारी भगवान् श्रीभोलेनाथजीके हृदयमें इष्ट रूपसे विराज रही हैं।

७५५ सखीमण्डलमध्यस्था ❀ जो अपनी सखियोंके मण्डलमें मध्यस्थ (निष्पक्ष) रूपसे विराजती हैं।

७५६ सगुणा ❀ जो भक्त-सुखार्थ अपनी परम-पावनी कीर्त्तिका विस्तार करनेके लिये सम्पूर्ण गुणोंको ग्रहण करती हैं।

७५७ संक्षयोज्झिता ❀ जिनके रूप, गुण, शक्ति, ऐश्वर्य, ज्ञान आदि कभी भी क्षीणताको प्राप्त नहीं होते अर्थात् सदैव एक रस अखण्ड बने रहते हैं ॥१३६॥

सङ्ख्यातीतगुणा सङ्गमुक्ता सङ्गीतकोविदा ।
सङ्गीर्णप्रणतत्राणा सङ्ग्रहानुग्रहे रता ॥१३७॥

७५८ सङ्ख्यातीतगुणा ❀ जिनके गुण सङ्ख्या (गणनासे) परे अर्थात् अनन्त हैं।

७५९ सङ्गमुक्ता ❀ जिनकी किसी विषयमें आसक्ति नहीं है ।

७६० सङ्गीतकोविदा ❀ जो सङ्गीतशास्त्रको भली प्रकारसे जानती हैं।

७६१ सङ्गीर्णप्रणतत्राणा ❀ प्रणाम मात्र करने वाले भक्तों की भी रक्षा करनेके लिये जिनकी प्रतिज्ञा है।

७६२ सङ्ग्रहानुग्रहेरता ❀ जो कर्मानुसार प्राणियोंको दण्ड तथा अनुग्रह रूपी पुरस्कार प्रदान करने में तत्पर रहती हैं ॥१३७॥

सख्यशीघ्रसमासाद्या सज्जनोपासिताङ्घ्रिका ।
सतताराध्यचरणा सतीत्वादर्शदायिनी ॥१३८॥

७६३ सख्यशीघ्रसमासाद्या ❀ जो मित्रताके भाव द्वारा प्रसन्न होने में शीघ्र ही सुलभ हैं।

७६४ सज्जनोपासिताङ्घ्रिका ❀ जिनके श्रीचरण-कमलों की उपासना सन्त जन करते हैं।

७६५ सतताराध्यचरणा ❀ जिनके श्रीचरण-कमलों की उपासना निरन्तर ही करना चाहिये।

७६६ सतीत्वादर्शदायिनी ❀ जो पतिव्रताओं के आचरण का आदर्श प्रदान करती हैं ॥१३८॥

सतीवृन्दशिरोरत्नं सतीशाजस्रभाविता ।
सत्तमा सत्यधर्मैकपालिका सत्यरूपिणी ॥१३९॥

७६७ सतीवृन्दशिरोरत्नं ❀ जो पतिव्रताओंमें सबसे मुख्य हैं।
७६८ सतीशोजस्त्रभाविता ❀ भगवान् श्रीभोलेनाथजी जिनका निरन्तर ध्यान करते हैं।
७६९ सत्तमा ❀ जिनसे बढ़कर कोई है ही नहीं।
७७० सत्यधर्मैकपालिका ❀ जो सत्य तथा धर्म पालन करने वाली शक्तियोंमें सबसे बढ़कर हैं।
७७१ सत्यरूपिणी ❀ जो सत्य (ब्रह्म) का स्वरूप ही हैं ॥१३९॥

सत्यसञ्चिन्तना सत्यसन्धा सत्यापतिस्नुषा।
सत्या सत्रधरागर्भोद्भूता सत्यवदग्रणीः ॥१४०॥

७७२ सत्यसञ्चिन्तना ❀ जिनका ध्यान ही वस्तुतः सत्य (सार) है और सब असार।
७७३ सत्यसन्धा ❀ जिनकी प्रतिज्ञा कभी झूठी होती ही नहीं।
७७४ सत्यापतिस्नुषा ❀ जो अयोध्या नरेश श्रीदशरथजी महाराजकी पुत्रवधू (पतोहू) हैं।
७७५ सत्या ❀ जो भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों कालमें सत्य हैं।
७७६ सत्रधरागर्भोद्भूता ❀ जो श्रीमिथिलेशजी महाराजकी यज्ञभूमिके गर्भसे प्रकट हुई हैं।
७७७ सत्यवदग्रणीः ❀ जो पराक्रमियोंमें सबसे बढ़कर हैं ॥१४०॥

सदाचारा सदासेव्या सद्दृशातीतशेमुषी।
सनातनी सनानम्या सन्तोषैकप्रदायिनी ॥१४१॥

७७८ सदाचारा ❀ जिनके सभी आचरण सत् हैं।
७७९ सदासेव्या ❀ जिनकी निरन्तर सेवा करना ही प्राणियों का कर्त्तव्य है।
७८० सद्दृशातीतशेमुषी ❀ जिनके समान किसीकी भी विशाल बुद्धि नहीं हैं।
७८१ सनातनी ❀ जो आदि-काल की हैं।
७८२ सनानम्या ❀ जो निरन्तर प्रणाम करने योग्य हैं।
७८३ सन्तोषैकप्रदायिनी ❀ जो दर्शनादि के द्वारा आश्रितोंको सबसे बढ़कर सन्तोष प्रदान करती हैं ॥१४१॥

सन्देहापहरा सन्धिः सन्निषेव्यसमाश्रिता।
सन्नुत्याशेषचरिता सभ्यलोकसभाजिता ॥१४२॥

७८४ सन्देहापहरा ❀ जो आश्रितोंके हृदयमें उदित हुई सभी शङ्काओंको हरण कर लेती हैं।
७८५ सन्धि ❀ जो सन्धि (अवकाश) स्वरूपा हैं।

७८६ सिन्नषेव्यसमाश्रिता ❀ जिनके आश्रितजन भी तन, मन, धन आदिके द्वारा सब प्रकारसे सेवा करने योग्य हैं।

७८७ सन्तुत्याशेषचरिता ❀ जिनके सम्पूर्ण चरित सब प्रकारसे स्तुति (प्रशंसा) करने योग्य हैं।

७८८ सभ्यलोकसभाजिता ❀ सज्जनवृन्द जिन्हें सदैव प्रणाम करते हैं ॥१४२॥

समग्रज्ञानवैराग्यधर्मश्रीर्यशोनिधिः ।
समग्रैश्वर्यसम्पन्ना समतीतगुणोपमा ॥१४३॥

७८९ समग्रज्ञानवैराग्यधर्मश्रीर्यशोनिधिः ❀ जो सम्पूर्ण ज्ञान, सम्पूर्ण वैराग्य, सम्पूर्ण धर्म सम्पूर्ण श्रीः (सुन्दरता-तेज), सम्पूर्ण यशकी भण्डार हैं।

७९० समग्रैश्वर्यसम्पन्ना ❀ जो सम्पूर्ण ऐश्वर्यकी भण्डार हैं।

७९१ समतीतगुणोपमा ❀ जिनके गुणोंकी उपमा नहीं है ॥१४३॥

समदृष्टिः समर्च्यैका समर्थाग्रया समर्धका।
समविश्वमनोज्ञाङ्गी समवेद्याङ्घ्रिलाञ्छना ॥१४४॥

७९२ समदृष्टिः ❀ जिनकी दृष्टिमें सदैव प्राणप्यारे ही विराजते हैं अथवा समस्त प्राणियोंके प्रति जिनकी समान हितकर दृष्टि है।

७९३ समर्च्यैका ❀ जिनसे बढ़कर कोई पूजने योग्य है ही नहीं।

७९४ समर्थाग्रया ❀ जिनसे बढ़कर कोई समर्थ नहीं।

७९५ समर्धका ❀ जिनसे बढ़कर कोई अभीष्ट पूर्ण करनेवाला नहीं है।

७९६ समविश्वमनोज्ञाङ्गी ❀ जिनके सभी श्रीअङ्ग बिश्वभरमें सबसे अधिक मनोहर और सुडौल हैं अर्थात् जहाँ जिस प्रकार होने चाहिये वहाँ उसी प्रकार के हैं।

७९७ समवेद्याङ्घ्रिलाञ्छना ❀ जिनके श्रीचरण-कमलोंके स्वस्तिक, ऊर्ध्व रेखा, कमल, वज्र कुलिश छत्र, चामर, हल, मूशल सिंहासन, त्रिवली अमृत कुण्ड, सरयू लक्ष्मी, पृथ्वी आदि सभी चिन्ह, वश दर्शन ही करने के योग्य हैं ॥१४४॥

समाकर्ण्ययशोगाथा समाहर्त्री समाहिता।
समानात्मा समाराध्या समालम्ब्याङ्घ्रिपङ्कजा ॥१४५॥

७९८ समाकर्ण्ययशोगाथा ❀ (मनुष्य जीवन की सफलताके लिये जिनका यशगान भली भाँति सुनने योग्य है ।

७९९ समाहर्त्री ❀ जो भक्तोंके सम्पूर्ण कष्टोंको पूर्ण रूप से हरण कर लेती हैं अथवा महाप्रलयमें सारी सृष्टि को समेट कर जो अपने आपमें लीन कर लेती हैं।

८०० समाहिता ❀ हित-साधन पूर्वक भक्तोंकी सुरक्षा के लिये जो सदैव सावधान रहती हैं।

८०१ समानात्मा ❀ जो सभी भले बुरे, चर-अचर प्राणियों के लिये समान निराकार ब्रह्मकी आत्म स्वरूपा हैं।

८०२ समाराध्या ❀ पूर्णसुख-शान्ति के लिये भली भाँति जिनकी उपासना करना ही प्राणियोंका अमोघ-साधन है।

८०३ समालम्ब्याङ्घ्रिपङ्कजा ❀ संसार रूपी अथाह सागरसे पार होनेके लिये जिनके श्रीचरण-कमल रूपी नौका ही सहारा लेने योग्य है ॥१४५॥

समावर्ता समासेव्या समार्हा समितिञ्जया।
समीच्याव्याजकरुणा संविभाव्यसुविग्रहा ॥१४६॥

८०४ समावर्ता ❀ जो संसार रूपी चक्रको भली भाँति घुमाती रहती हैं।

८०५ समासेव्या ❀ जो जगज्जननी और परमहितकारिणी होनेके कारण, प्राणियोंके लिये सम्यक् प्रकारसे सेवा (उपासना)करने योग्य हैं।

८०६ समार्हा ❀ जो अन्तर्यामिनी रूपसे सभीके लिये समान हैं तथा भगवान श्रीरामजी ही जिनके योग्य वर और जो उनके योग्य दुलहिन हैं।

८०७ समितिञ्जया ❀ जिन्हें सर्वत्र विजय प्राप्त है।

८०८ समीच्याव्याजकरुणा ❀ भगवदानन्द-सागरमें गोता लगानेके लिये, सभी प्रकारकी प्रिय-अप्रिय, उपस्थित परिस्थितियों (हालत) में जिनकी अहैतुकी कृपाका ही उत्तम प्रकारसे अनुसन्धान करना चाहिये।

८०९ संविभाव्यसुविग्रहा ❀ शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध-इन पाँचो विषयों पर विजय पानेके लिये जिनके मङ्गलमय सुन्दर विग्रहका ही भली-भाँति सदैव ध्यान करना कर्त्तव्य है ॥१४६॥

सरयूपुलिनाक्रीडा सरला सरसेक्षणा।
सर्गस्थित्यन्तपूर्वा सर्वकामप्रदायिनी ॥१४७॥

८१० सरयूपुलिनाक्रीडा ❀ जो श्रीसरयूजीके किनारे भक्त-सुखद लीला करती हैं।

८११ सरला ❀ जिनमें किसी प्रकारकी भी कुटिलता नहीं है अर्थात् जो अत्यन्त सीधे स्वभाव वाली हैं।

८१२ सरसेक्षणा ❀ जिनके कमलवत् नेत्र दयालुता रूपी रससे रसीले हैं।

८१३ सर्गस्थित्यन्तप्रभवा ❀ जो जगत्‌की उत्पत्ति, स्थिति, तथा संहारकी सबसे मुख्य कारण हैं।

८१४ सर्वकामप्रदायिनी ❀ जो अपने आश्रितोंकी सभी हितकर इच्छाओंको पूर्ण करती हैं।।१४७।

सर्वकार्यबुधा सर्वच्छद्मज्ञा सर्वजन्मदा।
सर्वजीवहिता सर्वज्ञानिनां ज्ञेयसत्तमा ।।१४८।।

८१५ सर्वकार्यबुधा ❀ जो सभी प्रकारके कर्त्तव्यों का ज्ञान रखती हैं।

८१६ सर्वच्छद्मज्ञा ❀ जो सबके कपटको भली भाँतिसे जान लेती हैं।

८१७ सर्वजन्मदा ❀ जो सभी जीवों को जन्म देने वाली हैं ।

८१८ सर्वजीवहिता ❀ जो सभी जीवमात्र का हित करने वाली हैं।

८१९ सर्वज्ञानिनां ज्ञेयसत्तमा ❀ समस्त ज्ञानियोंके लिये भी, जिनके रहस्यको समझना परमावश्यक है।

८२० सर्वज्ञाननिधिः ❀ जो सम्पूर्ण ज्ञान की निधि (भण्डार) हैं ।।१४८।।

सर्वज्ञाननिधिः सर्वज्ञानवद्भिरुपासिता।
सर्वज्ञा सर्वज्येष्ठादिः सर्वतीर्थमयस्मृतिः ।।१४९।।

८२१ सर्वज्ञानवद्भिरुपासिता ❀ समस्त ज्ञानी जन, जिनका भजन करते हैं ।

८२२ सर्वज्ञा ❀ जो सभी प्राणियोंके भूत, भविष्य, वर्तमान के कायिक, वाचिक मानसिक कर्म तथा उनके अनिवार्य फल सुख-दुःख रूप पुरस्कार एवं दण्ड को भली भाँति जानती हैं।

८२३ सर्वज्येष्ठादिः ❀ अवस्थामें, जिनसे बड़ा कोई है ही नहीं।

८२४ सर्वतीर्थमयस्मृतिः ❀ जिनका सुमिरण साढ़े तीन करोड़ तीर्थोंसे अधिक पुण्य-दायक है।।१४९।।

सर्वतोऽक्ष्यास्यहस्ताङ्घ्रिकमला सर्वदर्शना।
सर्वदिव्यगुणोपेता सर्वदुःखहरस्मिता ।।१५०।।

८२५ सर्वतोऽक्ष्यास्यहस्ताङ्घ्रिकमला ❀ विराट् रूप होनेके कारण जिनके नेत्र, मुख, हस्त, चरण-कमल आदि सभी ओर हैं।

७२६ सर्वदर्शना ❀ जो सब जीवोंकी सभी चेष्टाओंको प्रत्येक समय देखती रहती हैं।

८२७ सर्वदिव्यगुणोपेता ❀ जो सम्पूर्ण दया, क्षमा, सौशील्य, वात्सल्य, गाम्भीर्य, औदार्य, आदि दिव्य (अप्राकृत) गुणोंसे युक्त हैं।

८२८ सर्वदुःखहरस्मिता ❀जिनकी मन्द मुस्कान सम्पूर्ण दुःखोंको हरण कर लेती है ।।१५०।।

सर्वदेवनुता सर्वधर्मतत्त्वविदां वरा ।
सर्वधर्मनिधिः सर्वनायकोत्तमनायिका ॥१५१॥

८२९ सर्वदेवनुता ❀ जिनकी सभी देवता स्तुति करते हैं ।
८३० सर्वधर्मतत्वविदां वरा❀जो सम्पूर्ण धर्मोंका रहस्य समझनेवाली तथा सभी शक्तियोंमें श्रेष्ठ हैं।
८३१ सर्वधर्मनिधिः ❀ जो सम्पूर्ण धर्मोंकी भण्डार हैं ।
८३२ सर्वनायकोत्तमनायिका ❀ जो सम्पूर्ण नायकों (नेताओं) में सर्वश्रेष्ठ भगवान् श्रीराम-भद्रजूकी पटरानी हैं ॥१५१॥

सर्वनीतिरहस्यज्ञा सर्वनैपुण्यमण्डिता ।
सर्वपापहरध्याना सर्वपावनपावनी ॥१५२॥

८३३ सर्वनीतिरहस्यज्ञा ❀ जो सब प्रकारकी नीतियोंका रहस्य (तात्पर्य) भलीभाँति जानती हैं
८३४ सर्वनैपुण्यमण्डिता ❀ जो सब प्रकारकी चतुराईसे अलंकृत हैं ।
८३५ सर्वपापहरध्याना ❀ जिनका ध्यान सम्पूर्ण पापोंको छीन लेता है ।
८३६ सर्वपावनपावनी ❀ जो पवित्र कारी तीर्थों को अपने भक्तोंके चरण-स्पर्श द्वारा पवित्र कर देती हैं ॥१५२॥

सर्वभक्तावनाभिज्ञा सर्वभक्तिमतां गतिः ।
सर्वभावपदातीता सर्वभावप्रपूरिका ॥१५३॥

८३७ सर्वभक्तावनाभिज्ञा ❀ जो सभी भक्तों की रक्षा का उपाय, भली भाँति जानती हैं ।
८३८ सर्वभक्तिमतां गतिः ❀ जो समस्त भक्तों की रक्षा करने वाली है ।
८३९ सर्वभाव-पदातीता ❀ जो सभी भावोंके पदसे परे हैं ।
८४० सर्वभाव-प्रपूरिका ❀ जो आश्रितोंके सभी हितकर भावों की पूर्ति करती हैं ॥१५३॥

सर्वभुक्तिप्रदोत्कृष्टा सर्वभूतहिते रता ।
सर्वभूताशयाभिज्ञा सर्वभूतासुधारिणी ॥१५४॥

८४१ सर्वभुक्तिप्रदोत्कृष्टा ❀ हितकर भोगोंको प्रदान करने वाली शक्तियोंमें, जो सबसे बढ़कर हैं।
८४२ सर्वभूतहिते रता ❀ जो समस्त प्राणियोंके वास्तविक हितकर साधनमें सदैव तत्पर रहती हैं
८४३ सर्वभूताशयाभिज्ञा ❀ जो सभी देह-धारियोंकी समस्त चेष्टाओंका अभिप्राय (मतलब) भली-भाँतिसे जानती हैं ।

८४४ सर्वभूतासुधारिणी ❀ जो सम्पूर्ण प्राणियोंके प्राणोंको धारण करने वाली हैं ॥१५४॥

सर्वमङ्गलमाङ्गल्या सर्वमण्डनमण्डना ।
सर्वमेधाविनां श्रेष्ठा सर्वमोदमयेक्षणा ॥१५५॥

८४५ सर्वमङ्गलमाङ्गल्या ❀ जो सम्पूर्ण मङ्गलोंकी मङ्गल-स्वरूपा हैं ।

८४६ सर्वमण्डनमण्डना ❀ जो सम्पूर्ण सजावटको सुसज्जित करने वाली हैं ।

८४७ सर्वमेधाविनां श्रेष्ठा ❀ जो बुद्धिमानोंमें सबसे बढ़कर हैं ।

८४८ सर्वमोदमयेक्षणा ❀ जिनकी चितवन तथा दर्शन सम्पूर्ण आनन्द-मय हैं ॥१५५॥

सर्वमोहच्छिदासक्तिः सर्वमोहनमोहिनी ।
सर्वमौलिमणिप्रेष्ठा सर्वयज्ञफलप्रदा ॥१५६॥

८४९ सर्वमोहच्छिदासक्तिः ❀ जिनके श्रीचरणोंकी आसक्ति-सम्पूर्ण आसक्तियोंको समाप्त कर देती है अर्थात् जिनके प्रति आसक्ति प्राप्त कर लेने पर, संसारके किसी भी शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्धकी आसक्ति हृदयमें ही रह नहीं जाती है ।

८५० सर्वमोहनमोहिनी ❀ सभी जड़-चेतनोंको मुग्ध करलेने वाले, भगवान् श्रीरामजीको भी जो अपने दयालु स्वभावकी पराकाष्ठासे मुग्ध कर लेती हैं ।

८५१ सर्वमौलिमणिप्रेष्ठा ❀ जो सबके शिरमौर भगवान् श्रीराघवेन्द्र सरकारकी प्राणप्यारी हैं ।

८५२ सर्वयज्ञफलप्रदा ❀ जो सम्पूर्ण यज्ञोंका फल प्रदान करने वाली हैं ॥१५६॥

सर्वयज्ञव्रतस्नाता सर्वयोगविनिःसृता ।
सर्वरम्यगुणागारा सर्वलक्षणलक्षिता ॥१५७॥

८५३ सर्वयज्ञव्रतस्नाता ❀ जो सम्पूर्ण यज्ञोंको कर चुकी हैं ।

८५४ सर्वयोगविनिःसृता ❀ शास्त्रोक्त नाना प्रकारके साधनों द्वारा ही जिन्हें समझा जा सकता है अथवा जिनसे समस्त योगोंका प्राकट्य है ।

८५५ सर्वरम्यगुणागारा ❀ सम्पूर्ण सुन्दर गुण-समूहोंका जिनमें निवास है ।

८५६ सर्वलक्षणलक्षिता ❀ जो समस्त दिव्य (अलौकिक) लक्षणोंसे युक्त हैं ॥१५७॥

सर्वलावण्यजलधिः सर्वलीलाप्रसारिणी ।
सर्वलोकनमस्कार्या सर्वलोकेश्वरप्रिया ॥१५८॥

८५७ सर्वलावण्यजलधिः ❁ जो सम्पूर्ण सुन्दरताकी समुद्र हैं।

८५८ सर्वलीलाप्रसारिणी ❁ जो जगत्‌की सम्पूर्ण लीलाओंको फैलाने वाली हैं।

८५९ सर्वलोकनमस्कार्या ❁ जो अनन्त ब्रह्मण्डोंके सभी ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदिकोंके द्वारा नमस्कार करने योग्य हैं।

८६० सर्वलोकेश्वरप्रिया ❁ जो समस्त ब्रह्मा विष्णु शिवादिकोंके नियामक श्रीसाकेताधीश प्रभु श्रीरामकी प्यारी हैं। १५८

सर्वलोकेश्वरी सर्वलौकिकेतरवैभवा।
सर्व विद्याव्रतस्नाता सर्ववैभवकारणम् ॥१५९॥

८६१ सर्वलोकेश्वरी ❁ जो सम्पूर्ण लोकोंकी स्वामिनी हैं।

८६२ सर्वलौकिकेतरवैभवा ❁ जिनका सम्पूर्ण ऐश्वर्य अलौकिक (दिव्य) है।

८६३ सर्वविद्याव्रतस्नाता ❁ जो विधिपूर्वक सम्पूर्ण विद्याओंको पढ़ चुकी हैं।

८६४ सर्ववैभवकारणम् ❁ जो सम्पूर्ण ऐश्वर्य सम्पत्तिकी कारण-स्वरूपा हैं ॥१५९॥

सर्वशक्तिमतामिष्टा सर्वशक्तिमहेश्वरी।
सर्वशत्रुहरा सर्वशरणं सर्वशर्मदा ॥१६०॥

८६५ सर्वशक्तिमतामिष्टा ❁ जो सर्वशक्तिमान-ब्रह्मा, शिवादिकोंकी इष्टदेवता हैं।

८६६ सर्वशक्तिमहेश्वरी ❁ जो सम्पूर्ण शक्तियोंकी सबसे मुख्य स्वामिनी हैं।

८६७ सर्वशत्रुहरा ❁ जो आश्रितोंके बाहरी तथा भीतरी (काम, क्रोधादि) शत्रुओंको गुम कर देती हैं।

८६८ सर्वशरणम् ❁ जो चर-अचर सम्पूर्ण प्राणियोंकी रक्षा करने वाली हैं।

८६९ सर्वशर्मदा ❁ जो भक्तोंको सब प्रकारका हितकर-सुख प्रदान करती हैं ॥१६०॥

सर्वश्रेयस्करी सर्वसहा सर्वसदर्चिता।
सर्वसद्भावनाधारा सर्वसद्भावपोषिणी ॥१६१॥

८७० सर्वश्रेयस्करी ❁ जो भक्तोंका सब प्रकारका कल्याण करती हैं।

८७१ सर्वसहा ❁ जो प्राणियोंके किये हुये सभी प्रकारके अपराधोंको सहन करती हैं।

८७२ सर्वसदर्चिता ❁ सभी सन्त जिनका पूजन करते हैं।

८७३ सर्वसद्भावनाधारा ❀ जो सम्पूर्ण सद्भावनाओंकी आधार अर्थात् हर प्रकारसे धारणकरने योग्य केन्द्र-स्वरूपा हैं।

८७४ सर्वसद्भावपोषिणी ❀ जो प्राणियोंके सभी सद्भावोंकी पुष्टि करती हैं ॥१६१॥

सर्वसौख्यप्रदा सर्वसौभाग्यैकप्रदायिनी ।
साकेतपरमस्थाना साकेतपरमोत्सवा ॥१६२॥

८७५ सर्वसौख्यप्रदा ❀ जो सभी चर-अचर प्राणियोंको स्वाभाविक सुख प्रदान करने वाली हैं।

८७६ सर्वसौभाग्यैकप्रदायिनी ❀ जो आश्रितोंको सब प्रकारका हितकर सौभाग्य प्रदान करने वाली महाशक्तियोंमें उपमा रहित हैं।

८७७ साकेतपरमस्थाना ❀ श्रीसाकेतधाम जिनका सबसे उत्कृष्ट स्थान है।

८७८ साकेतपरमोत्सवा ❀ जो श्रीसाकेतधाम निवासी भक्तोंको महान् उत्सवके सदृश आनन्द देने वाली हैं ॥१६२॥

साकेताधिपतिप्रेष्ठा साकेतानन्दवर्षिणी ।
साक्षाच्छ्रीः साक्षिणी सर्वदेहिनां सर्वकर्मणाम् ॥१६३॥

८७९ साकेताधिपतिप्रेष्ठा ❀ जो साकेताधीश भगवान् श्रीरामजीकी परम प्यारी हैं।

८८० साकेतानन्दवर्षिणी ❀ जो श्रीसाकेत-धाममें आनन्दकी वर्षा करती रहती हैं।

८८१ साक्षाच्छ्रीः ❀ जो सच्चिदानदघन ब्रह्मकी साक्षात् श्री (सुन्दरता, तेजऔर सम्पति इत्यादि) हैं।

८८२ सर्वदेहिनां सर्वकर्मणाम् साक्षिणी ❀ जो समस्त प्राणियोंके सभी कर्मोंकी साक्षिणी स्व-रूपा है ॥१६३॥

साघप्राणिजनारुष्टा सातपत्रोत्तमासना ।
साधनातीतसम्प्राप्तिः साध्या साध्वीजनप्रिया ॥१६४॥

८८३ साघप्राणिजनारुष्टा ❀ जो अपराधी जीवों पर भी कभी अहित कर क्रोध नहीं करतीं।

८८४ सातपत्रोत्तमासना ❀ जिनका उत्तम सिंहासन मनोहर छत्रसे युक्त है।

८८५ साधनातीतसम्प्राप्तिः ❀ जिनकी प्राप्ति सब साधनोंसे परे है अर्थात् जो केवल कृपा साध्य हैं।

८८६ साध्या ❀ जो अनन्य आसक्तिसे प्राप्त होने योग्य हैं।

८८७ साध्वीजनप्रिया ❀ जिन्हें सती स्त्रियाँ प्रिय हैं ॥१६४॥

सामगा सामगोद्गीता साफल्यैकप्रदायिनी ।
सामर्थ्यजगदाधारमोहिनी साम्यदायिनी ॥१६५॥

८८८ सामगा ❀ जो सामवेदका गान करने वाली हैं।

८८९ सामगोद्गीता ❀ सामवेद का गान करने वाले जिनकी महिमा का विशेष रूपसे गान करते हैं।

८९० साफल्यैकप्रदायिनी ❀ जीवन की सफलता दान करने में जो एक ही (सर्वोत्कृष्ट) हैं।

८९१ सामर्थ्यजगदाधारमोहिनी ❀ जो अपने पराक्रमके द्वारा समस्त जगत्के आधार भगवान् श्रीरामजी को भी मुग्ध कर लेती हैं।

८९२ साम्यदायिनी ❀ जो अपनी अद्भुत, अनुपम उदारता से आश्रितों को अपनी समता प्रदान करदेती हैं अर्थात् अपने समान ही पूज्य बना देती हैं॥१६५॥

सारज्ञा सिद्धसङ्कल्पा सिद्धसेव्यपदाम्बुजा।
सिद्धार्था सिद्धिदा सिद्धिरूपिणी सिद्धिसाधनम् ॥१६६॥

८९३ सारज्ञा ❀ जो समस्त विश्वके सारस्वरूप भगवान् श्रीरामजीकी महिमाको भलीभाँतिसे जानती हैं।

८९४ सिद्धसङ्कल्पा ❀ जिनका सङ्कल्प सिद्ध है अर्थात् इच्छा करते ही तत्क्षण सब कुछ उपस्थित हो जाता है।

८९५ सिद्धसेव्यपदाम्बुजा ❀ जिनके श्रीचरण-कमल, भगवत्प्राप्ति रूपी सिद्धिको प्राप्त कर चुके सिद्धोंके द्वारा, सेवन करने योग्य हैं।

८९६ सिद्धार्था ❀ जो पूर्ण काम हैं।

८९७ सिद्धिदा ❀ जो आश्रितोंको भगवत्प्राप्ति रूपी सिद्धि प्रदान करती हैं।

८९८ सिद्धिरूपिणी ❀ जो भगवत् प्राप्तिका स्वरूप ही हैं।

८९९ सिद्धिसाधनम् ❀ जो भगवत्-प्राप्तिकी साधन स्वरूपा हैं॥१६६॥

सीता सीमन्तिनीश्रेष्ठा सीरध्वजनृपात्मजा।
सुकटाक्षा सुकीर्त्तीड्या सुकृतीनां महाफला ॥१६७॥

९०० सीता ❀ जो भक्तोंके समस्त दुःख और पापोंको नष्ट करके सुख-शान्ति रूपी सम्पत्तिका विस्तार करती हैं।

९०१ सीमन्तिनीश्रेष्ठा ❀ जो सौभाग्यवती माताओंमें सबसे श्रेष्ठ हैं।

९०२ सीरध्वजनृपात्मजा ❀ जो श्रीसीरध्वज महाराजकी राजदुलारी हैं।

९०३ सुकटाक्षा ❀ जिनकी चितवन परम मङ्गलमय तथा मनोहर है।

९०४ सुकीर्त्तीड्या ❋ जो अपनी सुन्दर (आदर्श) कीर्त्तिके द्वारा तीनों लोकोंमें प्रशंसा करने योग्य हैं।

९०५ सुकृतीनां महाफला ❋ जो समस्त जप, तप, यज्ञ, दानादि सत्कर्मोंका सर्वोत्कृष्ट फल भगवत्प्राप्ति स्वरूपा हैं ॥१६७॥

सुकेशीसुखमूलैका सुखसन्दोहदर्शना।
सुगमा सुघनज्ञाना सुचार्वी सुजवोत्तमा ॥१६८॥

९०६ सुकेशी ❋ जिनके अत्यन्त कोमल सघन, सूक्ष्म, घुँघराले, काले केश हैं।

९०७ सुखमूलैका ❋ जो सम्पूर्ण सुखों की सर्वोत्तम कारण-स्वरूपा हैं।

९०८ सुखसन्दोहदर्शना ❋ जिनके दर्शनोंसे ही समस्त सुख प्राप्त होते हैं।

९०९ सुगमा ❋ जो शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्धादि विषयों से रहित अपने अनन्य उपासकोंके लिये ही सुलभ हैं।

९१० सुघनज्ञाना ❋ जिनका घन (नित्य त्रिकालस्थायी) ज्ञान, सबसे सुन्दर है।

९११ सुचार्वी ❋ जो अत्यन्त सुन्दरी हैं।

९१२ सुजवोत्तमा ❋ आश्रितोंकी रक्षा आदिके लिये जिनका वेग सबसे बढ़कर है ॥१६८॥

सुज्ञा सुतन्वी सुदती, सुदाननिरताश्रया।
सुधावाणी सुधीरात्मा सुधीश्रेष्ठा सुधेक्षणा ॥१६९॥

९१३ सुज्ञा ❋ जिनका ज्ञान सबसे सुन्दर है।

९१४ सुतन्वी ❋ जो आकाशादि महा तत्वोंसे भी अत्यन्त सूक्ष्म है।

९१५ सुदती ❋ जिनकी दन्तपङ्क्ति अनारके दानों के समान सुन्दर है।

९१६ सुदाननिरताश्रया ❋ जो वास्तविक हितकर दान (भगवच्चरणानुरागिणी बुद्धिको प्रदान) करने वालोंकी आधार-स्वरूपा हैं।

९१७ सुधावाणी ❋ जिनकी बोली अमृतके समान मृतक जियावनी अर्थात् सम्पूर्ण दुःखोंको हरण कर लेने वाली है।

९१८ सुधीरात्मा ❋ जिनकी बुद्धि अतिशय धैर्यवती है।

९१९ सुधीश्रेष्ठा ❋ जो उत्तम बुद्धिमानोंमें सबसे श्रेष्ठ हैं।

९२० सुधेक्षणा ❋ जिनकी चितवन अमृतके समान समस्त दुःखोंको हरण कर लेती है ॥१६९॥

सुनयनाक्रोडरत्नं सुनयनाप्रपोषिता ।
सुनयनामहाराज्ञीहृदयानन्दवर्द्धिनी ॥१७०॥

९२१ सुनयनाक्रोडरत्नम् ❀ जो श्रीसुनयनाअम्बाजीकी गोदको रत्नके समान सुशोभित करनेवाली हैं
९२२ सुनयनाप्रपोषिता ❀ महारानी श्रीसुनयना अम्बाजीने जिनका पालन पोषण किया है ।
९२३ सुनयनामहाराज्ञीहृदयानन्दवर्द्धिनी ❀ जो अपनी शिशु लीलाके द्वारा श्रीसुनयना महारानी-के हृदय का आनन्द बढ़ाने वाली हैं ॥१७०॥

सुनासा सुनिदिध्यास्या सुनीतिः सुप्रतिष्ठिता ।
सुप्रसादा सुभगायाः करपल्लवचर्चिता ॥१७१॥

९२४ सुनासा ❀ जिनकी नासिका तोतेकी नाकके समान सुन्दर है ।
९२५ सुनिदिध्यास्या ❀ जिनका भली भाँति एकाग्रतापूर्वक बारंबार ध्यान करना चाहिये ।
९२६ सुनीतिः ❀ जिनकी नीति सबसे सुन्दर है ।
९२७ सुप्रतिष्ठिता ❀ जो अपनी महिमामें हर प्रकारसे स्थित हैं ।
९२८ सुप्रसादा ❀ जिनकी प्रसन्नता सबसे बढ़कर सुखद एवं मङ्गलकारिणी है ।
९२९ सुभगायाः करपल्लवचर्चिता ❀ यूथेश्वरी श्रीसुभगाजी अपने कर कमलोंके द्वारा जिनके मस्तक आदिमें चन्दनकी खौर इत्यादि करती हैं ॥१७१॥

सुभागा सुभुजा सुभ्रूः सुमुखी सुरपूजिता ।
सुराध्यक्षा सुरानम्या सुराधीशजरक्षिका ॥१७२॥

९३० सुभागा ❀ जिनके समान कोई सौभाग्यवती नहीं ।
९३१ सुभुजा ❀ जिनकी भुजायें ऊपरसे नीचेकी ओर हाथीकी सूढ़के समान पतली, चिकनी तथा गोल हैं ।
९३२ सुभ्रूः ❀ काम-धनुषके समान जिनकी मनोहर भौंहे हैं ।
९३३ सुमुखी ❀ जिनका परम मनोहर तथा मङ्गलमय श्रीमुखारविन्द है ।
९३४ सुरपूजिता ❀ समस्त देवता जिनका पूजन करते हैं ।
९३५ सुराध्यक्षा ❀ जो सभी देवताओंकी देख-रेख करने वाली हैं ।
९३६ सुरानम्या ❀ जो सभी देवताओंके द्वारा प्रणाम करने योग्य हैं ।
९३७ सुराधीशजरक्षिका ❀ जो अपने साथ महान अपराध करने वाले, वध योग्य, देवराज इन्द्रके

पुत्र जयन्त की भगवान श्रीरामजीके अग्नि बाणसे रक्षा करने वाली हैं ॥१७२॥

सुरेश्वरी च सुलभा सुवर्णाभाङ्गशोभना ।
सुवेद्यैका सुशरणं सुश्रीः सुश्लोकसत्तमा ॥१७३॥

९३८ सुरेश्वरी च ❀ जो समस्त देवताओं की स्वामिनी हैं ।

९३९ सुलभा ❀ जो विशुद्ध हृदय और अनन्यभाव वाले भक्तों को सुलभतासे प्राप्त हो जाती हैं।

९४० सुवर्णाभाङ्गशोभना ❀ जिनके सुवर्ण के समान गौर वर्णमय अङ्ग परम सुहावन हैं ।

९४१ सुवेद्यैका ❀ प्राणियोंको अपने कल्याणके लये भली भाँति जिनका जानना परमावश्यक है।

९४२ सुशरणम् ❀ जो समस्त विश्व की भली भाँतिसे सुरक्षा करने वाली हैं ।

९४३ सुश्रीः ❀ जिनकी सम्पत्ति, सुन्दरता तथा कान्ति सब सुन्दर तथा असीम है ।

९४४ सुश्लोकसत्तमा ❀ जो सबसे बढ़कर सुन्दर और पवित्र यश वाली हैं ॥१७३॥

सृष्टदीनहितोपाया सृष्टिजन्मादिकारिणी ।
सेव्या सैरध्वजीज्येष्ठा सोमवत्प्रियदर्शना ॥१७४॥

९४५ सृष्टदीनहितोपाया ❀ जो अभिमान रहित प्राणियोंके हितका उपाय रच लेती हैं ।

९४६ सृष्टिजन्मादिकारिणी ❀ जो सृष्टिकी उत्पत्ति, पालन तथा संहार करनेवाली हैं ।

९४७ सेव्या ❀ भगवत्-प्राप्तिके लिये जिनकी आराधना करना आवश्यक है ।

९४८ सैरध्वजीज्येष्ठा ❀ जो श्रीसीरध्वज-महाराजकी यज्ञभूमिसे प्रकट हुई बड़ी पुत्री हैं ।

९४९ सोमवत्प्रियदर्शना ❀ जिनका दर्शन शरदृतुके पूर्ण चन्द्रमाके समान परम प्रिय है ॥१७४॥

सौभाग्यजननी सौम्या स्थानं सर्वासुधारिणाम् ।
स्थिरा स्थूलदया चैव स्थूलसूक्ष्मविलक्षणा ॥१७५॥

९५० सौभाग्यजननी ❀ जो सभी प्रकारके सौभाग्यका उदय करनेवाली हैं ।

९५१ सौम्या ❀ जो परम शान्त तथा मनोहर दर्शनवाली है ।

९५२ स्थानं सर्वासुधारिणाम् ❀ जिनमें चर-अचर सम्पूर्ण प्राणी निवास करते हैं ।

९५३ स्थिरा ❀ जो सदा से हैं और सदा रहेंगी (कभी स्व-स्वरूपसे प्रचलित नहीं होने वाली) ।

९५४ स्थूलदया चैव ❀ जिनकी दया मोटी तगड़ी है ! (कम जोर नहीं !)

९५५ स्थूलसूक्ष्मविलक्षणा ❀ जो स्थूल, सूक्ष्मसे परे कारण स्वरूपा हैं ॥१७५॥

स्रष्टृपात्रन्तकर्तॄणामीश्वरी स्वगतिप्रदा ।
स्वङ्घ्रिका स्वच्छहृदया स्वच्छन्दा स्वजनप्रिया ॥१७६॥

९५६ स्रष्टपात्रन्तकर्तॄणामीश्वरी ❀ जो उत्पत्ति पालन और संहार करने वाले ब्रह्मा, विष्णु महेशों-को भी तत्तत् कार्यों में नियुक्त करने वाली हैं।

९५७ स्वगतिप्रदा ❀ जो आश्रितोंको अपना निवासस्थान साक्षात् श्रीसाकेतधाम प्रदान करने वाली हैं।

९५८ स्वङ्घ्रिका ❀ जिनके श्रीचरणकमल बड़े ही सुन्दर मङ्गलमय हैं।

९५९ स्वच्छहृदया ❀ जिनका हृदय अत्यन्त पवित्र (निर्विकार) भगवान् श्रीरामजी का निवास स्थान है।

९६० स्वच्छन्दा ❀ जो केवल एक भगवान् श्रीरामजीके अधीन रहती हैं।

९६१ स्वजनप्रिया ❀ जिनको अपने भक्त विशेष प्रिय हैं ॥१७६॥

स्वजनानन्दनिवहा स्वतर्क्या स्वधरस्मिता।
स्वधर्माचरणाख्याता स्वधर्मावनपण्डिता ॥१७७॥

९६२ स्वजनानन्दनिवहा ❀ जो अपने आश्रितों के आनन्द की पुञ्ज हैं।

९६३ स्वतर्क्या ❀ जिनके विषयमें किसी प्रकारका भी तर्क (अनुमान) नहीं किया जासकता।

९६४ स्वधरस्मिता ❀ जिनके अधरों (होठों) की मन्द मुस्कान बड़ी ही मनोहर तथा मङ्गलकारीहै।

९६५ स्वधर्माचरणाख्याता ❀ जो अपने धर्म मय आचरणोंके द्वारा त्रिलोकीमें विख्यात हैं।

९६६ स्वधर्मावनपण्डिता ❀ जो अपने भागवत धर्म की रक्षा करनेमें बड़ी ही चतुर हैं ॥१७७॥

स्वधास्वरूपा स्वधृता स्वभावाघहरस्मिता।
स्वभावापास्तनाशंस्या स्वभावावर्ण्यमार्दवा ॥१७८॥

९६७ स्वधास्वरूपा ❀ जो स्वधा स्वरूपा हैं।

९६८ स्वधृता ❀ जिन्हें भगवान् श्रीरामजी कौस्तुभमणिके रूपमें अपने वक्षःस्थलपर धारण करते हैं।

९६९ स्वभावाघहरस्मिता ❀ जिनकी मन्द-मुस्कान स्वाभाविक समस्त पाप व दुःखोंको हरण करने वाली है।

९७० स्वभावापास्तनाशंस्या ❀ जो स्वाभाविक कठोरतासे रहित (परम दयामयी) हैं।

९७१ स्वभावावर्ण्यमार्दवा ❀ जिनके अङ्गकी स्वाभाविक कोमलता वर्णनसे परे है अथवा जिनके सहज कोमल स्वभावका वर्णन वाणीसे नहीं हो सकता ॥१७८॥

स्वभावावाच्यवात्सल्या स्ववशा स्वस्तिदक्षिणा ।
स्वस्तिदा स्वस्तिरूपा च स्वामिनीसर्वदेहिनाम् ॥१७६॥

६७२ स्वभावावाच्यवात्सल्या ❀ जिनका स्वाभाविक वात्सल्य कथन शक्तिसे परे है ।

६७३ स्ववशा ❀ जो भगवान् श्रीरामजीके ही एक वशमें रहती हैं ।

६७४ स्वस्तिदक्षिणा ❀ जिन्हें यज्ञमें अर्पणकी हुई दक्षिणा मङ्गलमय होती है ।

६७५ स्वस्तिदा ❀ जो आश्रितोंको मङ्गल प्रदान करती हैं ।

६७६ स्वस्तिरूपा च ❀ जो सम्पूर्ण मङ्गल स्वरूपा हैं ।

६७७ स्वामिनी सर्वदेहिनाम् ❀ जो सम्पूर्ण प्राणियोंकी स्वामिनी (शासन करने वाली) है ॥१७६॥

स्वास्या स्वाश्रितसर्वेष्टदायिनी स्विष्टदेवता ।
स्वेच्छाचारेणरहिता हरिणोत्फुल्ललोचना ॥१८०॥

६७८ स्वास्या ❀ जिनका मुखारविन्द परम-मनोहर तथा मङ्गलकारी है ।

६७९ स्वाश्रितसर्वेष्टदायिनी ❀ जो अपने आश्रितोंकी सभी हितकर इच्छाओंको पूर्ण करती हैं ।

६८० स्विष्टदेवता ❀ जो सम्पूर्ण ब्रह्माण्डकी सबसे श्रेष्ठ इष्ट देवता है ।

६८१ स्वेच्छाचारेणरहिता ❀ जिनके सभी आचरण शास्त्र मर्यादानुकूल हैं, मनमानी नहीं !....

६८२ हरिणोत्फुल्ललोचना ❀ हरिणके नेत्रोंके समान खिले हुये जिनके नेत्र कमल हैं ॥१८०॥

हारसम्भूषिता हास्यस्पर्द्धिचन्द्रकरव्रजा ।
हितैका सर्वजगतां हृदयानन्दवर्द्धिनी ॥१८१॥

६८३ हारसम्भूषिता ❀ जो विविध प्रकारके हारों का शृङ्गार धारण किये हुई हैं ।

६८४ हास्यस्पर्द्धिचन्द्रकरव्रजा ❀ जो अपनी मन्द मुस्कान से चन्द्रमाके किरण समूहों को लज्जित कर रही हैं ।

६८५ हितैका सर्वजगतां ❀ जो सम्पूर्ण जगत् (चर-अचर) प्राणियों का सबसे अधिक हित करने वाली हैं ।

६८६ हृदयानन्दवर्द्धिनी ❀ जो अपने अनुपम् गुण, स्वभाव कीर्त्तिसे समस्त प्राणियोंके हृदयमें आनन्दको बढ़ाती रहती हैं ॥१८१॥

हृदयेशी च हृद्यैका हेमागारनिवासिनी ।
हेमासेव्यपदाम्भोजा हेयपादाब्जविस्मृतिः ॥१८२॥

९८७ हृदयेशी ❋ जो मन बुद्धि चित्त, अहङ्कार रूपी समस्त इन्द्रियों पर शासन करती हैं।

९८८ हृद्यैका ❋ जो सबसे बढ़कर मनोहर हैं।

९८९ हेमागारनिवासिनी ❋ जो दिव्य (अपाञ्चभौतिक) श्रीसाकेतधामके श्रीकनकभवनमें निवास करती हैं।

९९० हेमासेव्यपदाम्भोजा ❋ जिनके श्रीचरणकमल यूथेश्वरी श्रीहेमाजीके द्वारा विशेष सेवित होने योग्य हैं।

९९१ हेयपादाब्जविस्मृतिः ❋ संसारमें सबसे अधिक त्याग करने योग्य जिनके श्रीचरण-कमलोंका विस्मरण (भूलजाना) ही है ॥१८२॥

ह्लादिनी ह्रीमतां श्रेष्ठा क्षमाध्वस्तधरास्मया।
क्षमास्वरूपा क्षमिणां क्षमेशी क्षान्तिविग्रहा ॥१८३॥

९९२ ह्लादिनी ❋ जो सभी प्राणियोंके हृदयमें आह्लाद रूपसे विराजती हैं।

९९३ ह्रीमतां श्रेष्ठा ❋ जो शास्त्र-मर्यादा विरुद्ध कर्मोंको करनेमें सबसे अधिक लज्जा रखती हैं।

९९४ क्षमाध्वस्तधरास्मया ❋ जो अपने क्षमागुणसे पृथिवी देवीके अभिमानको दूर करती हैं।

९९५ क्षमास्वरूपाक्षमिणाम् ❋ जो क्षमा शीलोंमें क्षमा (सहनशीलता) रूपमें विराजती हैं।

९९६ क्षमेशी ❋ जिनके शासनानुसार क्षमा सर्वत्र प्रकट होती है।

९९७ क्षान्तिविग्रहा ❋ जो क्षमाकी साक्षात् मूर्त्ति हैं ॥१८३॥

क्षितीशतनया क्षेमदायिनी क्षेमयाऽर्चिता।
सुता तवैषा कल्याणी सर्वोपास्येति मे मतम् ॥१८४॥

९९८ क्षितीशतनया ❋ जो पृथ्वी पति श्रीमिथिलेशजी महाराजकी राजदुलारी हैं।

९९९ क्षेमदायिनी ❋ जो भक्तों के लिये सब प्रकार का मङ्गल प्रदान करती हैं।

१००० क्षेमयाऽर्चिता ❋ जो यूथेश्वरी श्रीक्षेमा सखीके द्वारा पूजित हैं। हे राजन् ! आपकी (वेही) कल्याणस्वरूपा श्रीललीजी सभी (देहधारियों) के लिये उपासना करने योग्य हैं ॥१८४॥

इयं हि राजन् ! मृगपोतलोचना वागीश्वरीशैलसुतारमादिभिः।
निषेव्यमाणाङ्घ्रिसरोरुहद्वया विराजते पूर्णसुधाकरानना ॥१८५॥

हे राजन् ! आपकी मृग शिशुके समान सुन्दर नेत्रवाली चन्द्रमुखी ये श्रीललीजी के चरण-कमल श्रीसरस्वतीजी, श्रीपार्वतीजी, श्रीलक्ष्मीजी आदि महाशक्तियोंके द्वारा पूजित हैं अतः वे सर्वोत्कर्षको प्राप्त हैं ॥१८५॥

महामुनीनां यतिपुङ्गवानां योगेश्वराणां सुरसत्तमानाम् ।
सिद्धीश्वराणां विगतैषणानां भोगार्थिनां मोक्षपदेच्छुकानाम् ॥१८६॥
हानीतरौत्सुक्यसमन्वितानां स्वजन्मनो भूमिपतेऽखिलानाम् ।
सम्भावनीया समुपासनीया ज्ञेयाऽनुगेया तनया तवेयम् ॥१८७॥

हे राजन् ! कहाँ तक कहें ? जितने भी सकाम, निष्काम, मोक्षाभिलाषी महामुनि, यतिशिरोमणि, योगी राज, देवश्रेष्ठ, सिद्धप्रवर, अपने मानव-जीवनकी सफलता चाहने वाले हैं, उन सभीके लिये सब प्रकारसे भावना करने योग्य, उपासना करने योग्य, तथा ज्ञान प्राप्त करने योग्य और बारम्बार गान करने योग्य आपकी ये ही श्रीललीजी हैं ॥१८६॥१८७॥

अनन्तनामानि तवात्मजायाः सन्ति क्षितीशप्रवराद्य तेषाम् ।
मया सहस्रेण मुदा प्रगीता तनोतु शं सेयमयोनिजा नः ॥१८८॥

हे भूमिनाथोंमें परमश्रेष्ठ श्रीमिथिलेशजी-महाराज ! आपकी श्रीललीजीके असङ्ख्यों नाम हैं उनमेंसे केवल इस समय मैंने जिनका सहस्र नामसे वर्णन किया है, वे अयोनिसम्भवा अर्थात् अपनी इच्छासे प्रकट हुई आपकी ये श्रीललीजी हम सबोंका कल्याण करें ।।१८८॥

भक्त्याऽनुरक्त्या पठतामजस्रं ध्यानान्वितानां तनया धरण्याः ।
दृग्गोचरी वाञ्छितसिद्धिदात्री भूयाद्द्रुतं नाम सहस्रमेतत् ॥१८९॥

इस सहस्र नामको ध्यान-पूर्वक अनुरागके साथ, नित्य पाठ करने वालोंको, अभीष्ट सिद्धि प्रदान करनेवाली ये श्रीललीजी शीघ्र ही प्रत्यक्ष दर्शन प्रदान करें ॥१८९॥

श्रीशिव उवाच ।

नृणां चतुर्वर्गविलोलचेतसां पाठ्यं ससङ्कल्पमिदं शुभावहम् ।
गिरीन्द्रकन्ये ! मधुराक्षरान्वितं श्रीजानकीनामसहस्रमन्वहम् ॥१९०॥

इति सप्ताशीतितमोऽध्यायः ॥८७॥

—: नवाह्नपारायण-विश्राम ७ मासपारायण-विश्राम २३ :—

भगवान् शिवजी बोले:—हे पार्वती ! धर्म, अर्थ, काम, मोक्षकी प्राप्तिके लिये जिनका चित्त चञ्चल हो रहा है उन्हें, मधुर अक्षरोंसे युक्त, मङ्गलकारी इस श्रीजानकीसस्रनामका पाठ सङ्कल्प-पूर्वक प्रति-दिन करना चाहिये ॥१९०॥

॥ श्रीसीतारामाभ्यां नमः ॥

सर्वेश्वरी श्रीकिशोरीजीकी जय
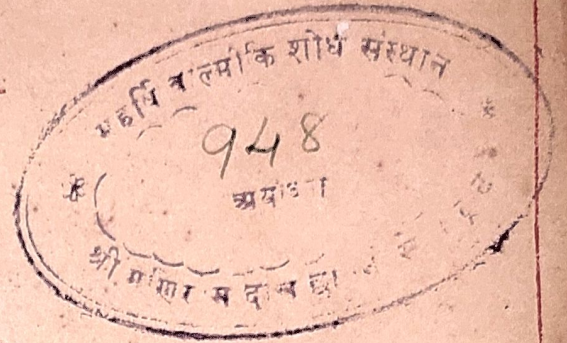
प्राप्ति स्थान—

राजमन्दिर गुप्तारघाट फैजाबाद

प्रधान विक्रेता:—श्रीपद्मधर मालवीय—

मालवीय पुस्तककेन्द्र,

न्यू बिल्डिङ्ग, अमीनाबाद, लखनऊ।

॥ श्रीकरुणानिधये नमः ॥

वृत्ती होवे इष्टाकार, हिरदय होवे निर्विकार।
मनमें होवे सद्विचार, इन्द्रिन सो हितकर व्यवहार॥

(महर्षि कार्तिकेयजी)

हे नाथ! आपकी कृपासे, विश्वका कल्याण हो।
सभी कर्त्तव्य परायण हों, परस्पर प्रेम हो॥